नसीङ्ह्लौण हृदय।

हिन्दी-भाषानुवाद।

कलकत्ता,

९८।२ भवानीचरण दत्त ष्ट्रीट, हिन्दी-बङ्गवासी

इलेक्ट्रो मेशीन-प्रेसमें

श्री नटवरचक्रवर्त्ती द्वारा मुद्रित

और प्रकाशित।

संवत् १९६७।

मूल्य १॥) रुपये।

नसीरुद्दीन हैदर।

प्रथम परिच्छेद।

[सन् १८५३ ई०में एक उच्चश्रेणीय अङ्गरेजने लखनऊके नवाब तथा दरबारके सम्बन्धमें एक बड़ा प्रबन्ध लिखा, जिसे मैंने अपने इच्छानुसार प्रकाश किया। लेखक मेरे मित्र थे, उन्होंने मेरे ही अनुरोधसे वह प्रबन्ध लिखा था। प्रबन्धका मर्म्मानुवाद आगे है।]

लखनऊके नवाब गाजीउद्दीन हैदरके बाद उनके पुत्र नवाब नसीरुद्दीन तख्तपर बैठे। मैं इन्हींके समय लखनऊ गया था। इस बातको कोई २० वर्ष बीते।

कलकत्ते में लखनऊ शहर और लखनऊके दरबारके बारेमें मैंने बहुतेरी बातें सुनी थीं। नवाबकी विशाल पशुशालाका वर्णन मेरे कानों पड़ चुका था। मुझसे एक आदमीने यह भी कहा था, कि नवाब अङ्गरेजोंको बहुत प्यार करते हैं; पर उन्हीं अङ्गरेजोंको, जो कम्पनीके तावेदार नहीं। मुझे यह भी मालूम हो चुका था, कि नवाब अपने प्रदेशवासियोंको चालचलन और लड़ाके बानेसे बड़े ही खुश रहते हैं। एक आदमीने यह भी कहा, कि लखनऊके गली-कूचोंमें ढाल-तलवार लिये लालखल्म मनुष्य दिनरात गश्त लगाया करते हैं। मैंने

ऐसी कितनी ही बातें सुनी थीं। मुझे विश्वास था, कि यह सब बातें असत्य हैं, लखनऊ जा वहां इन्हें देख न सकूंगा; परन्तु ऐसा नहीं हुआ, मैं निराश नहीं हुआ, क्योंकि मैंने वहां जो देखा, उसको छायामात्र ही का वर्णन सुना था। कल्पनाशक्तिने जिस 'लखनऊ' को मेरे नयनाभिमुख किया था, उससे लखनऊ शहर कहीं बढ़कर वैचित्र्यपूर्ण निकला।

लखनऊके सुदूरविस्तृत आलीशान राजमहलने ही मुझे पहले चकित-स्तम्भित बनाया। वह राजमहल एक महल नहीं, बल्कि गोमतीके किनारे किनारे चलनेवाला महलोंका एक बड़ा सिलसिला है। जैसे लखनऊ गोमतीके किनारे बसा है, वैसे ही उसका राजमहल गोमतीके किनारे खड़ा है। कुस्तुन्तुनियाकी महलसरा, तिहरानका शाही हरम और पेकिनका राजभवन, यह तीनो लखनऊके राजमहलकी टक्करके हैं। पूर्व्वीय देशोंकी प्रथाके अनुसार राजमहलमें ही शासन-सम्बन्धीय बातोंपर चर्चा करनेके लिये दरबार होता है। लखनऊके राजमहलमें भी दरबार होता है। गोमतीकी एक तरफ महल है और दूसरी तरफ एक बड़ा बाग; जिसमें पशुशाला है। इस पशुशालाके पशुओंकी संख्या मेरे अनुमानसे बाहर है। इङ्गलण्डकी चरागाहोंमें जिसतरह अगणित गाय और भेड़ें एक साथ दिखाई देती हैं, उसीतरह इस बागमे हाथी, चीते, गैंडे, भैंसे, शेर, बबर, तेंदुए, फारिसकी बिल्लियां, चीनके कुत्ते और तरह तरहके जानवर पिञ्जरोंमें या रूखी घासपर एक जगह दिखाई देते हैं।

राजमहलका बाहरी हिस्सा फरीदबख्श कहलाता है। यह

हिस्सा कुछ विशेष आलीशान या भड़कीला नहीं। परन्तु उसकी लम्बाई हदसे ज्यादा है, जिसे देख दांतो उंगलियां दबाना पड़ती है। मैं तो फरीदबख्श देख आश्चर्यसे अवाक् हुआ। शायद बड़ीसे बड़ी आलीशान इमारतोंको देखनेसे भी मैं इतना आश्चर्यान्वित न होता; क्योंकि उन इमारतोंकी कल्पना मैं पहले ही कर लेता। फरीदबख्शकी लम्बाई मेरी कल्पनासे बाहर निकली।

लखनऊकी गलियां देख मैं निराश नहीं हुआ। राजप्रासादके आसपास जो गलियां हैं, उनकी तुलना बिशप हेबरने डबलनसे की है। कितनों होने कहा है, कि लखनऊ ठीक रूसके मासको नगर जैसा है। मैं इन नगरोंमें गया नहीं हूं; फिर भी, मेरा खयाल है, कि मासको और लखनऊकी बनावट एक नहीं। मेरे देखे शहरोंमें मिश्रका एक काहिरह या केरो शहर ही ऐसा है, जिसकी तुलना लखनऊसे अंशतया हो सकती है। लखनऊका नीचा हिस्सा ठीक वैसा ही है, जैसा केरोका। लखनऊकी वह तङ्ग गलियां, वह बाजार और बाजारोंमें असबाबसे लदे भदर भदर चलनेवाले ऊंट, मासकोमे भी दिखाई देते हैं। परन्तु लखनऊकी बनावटमें कुछ खूबियां ऐसी हैं, जैसी डबलन, मासको या केरोको मयस्सर नहीं।

सशस्त्र प्रजाकी ही बात लीजिये। लखनऊकी तरह अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित बांकी-तिरछी साधारण प्रजा मासको, डबलन या केरोमें कहां? मासकोमें छुरा-वरछी पास रखनेका आम हुक्म है सही और केरोकी राहोंमें भी कभी कभी शस्त्रधारी

वह घर-बाहर सभी जगह अपने पास अस्त्र-शस्त्र रखनेका आनन्द वहां कहां ? लखनऊकी गलियोंके मुहानेपर खड़े हो देखिये, आपके पाससे जो कोई चला जा रहा है, उसीके हाथमें तलवार, बन्दूक, तमञ्चा या ऐसा ही कोई शस्त्र अवश्य है। संसारके मामूली कारोबारमें फंसे हुए व्यक्तिके पास भी शस्त्र है। जो लोग आरामतलब हैं, उनके पास भी सदा अस्त्र-शस्त्र मौजूद रहते हैं। बायां हाथ प्रायः ही गैंडेकी ढालसे सुरक्षित रहता है। ढालपर बीच बीचमें पीतलके सितारे जड़े रहते हैं। जब गलमूछोंसे विकटदर्शन राजपूत या पठान या काली दाढ़ीवाले मुसलमान ढाल-तलवार बांध मकानसे बाहर निकलते हैं, तब लखनऊकी बांकी प्रजामें निःसन्देह वीरभाव झलकता दिखाई देता है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं, कि लखनऊकी प्रजा बड़ी ही बांकी-तिरछी है ; इसीलिये अवध, कम्पनीके सिपाहियोंकी भरतीका केन्द्रस्थान है, यानी यहींसे कम्पनीकी फौजके लिये सिपाही चुने जाते हैं। बङ्गाल प्रेसिडेन्सीकी फौजका अधिकांश अवधवासियोंसे ही सङ्गठित हुआ है।

लखनऊके अधिवासियोंको शस्त्रप्रीति बचपन हीसे सिखाई जाती है। वहांके बच्चे अपना बचपन धनुष और बाणके खेलमें बिताते हैं। यही उनका प्रधान खेल है। विलायतमें जिसतरह मातायें बच्चोंको खेलनेके लिये तड़ तड़ बोलनेवाली गाड़ियां ले देती हैं, उसीतरह अवधवासी अपने सन्तानोंको शैशवावस्थामें खेलनेके लिये तमञ्चे और तलवारका चसका लगा देते हैं।

लखनऊकी सड़कोंका दृश्य सचमुच ही देखने योग्य है। यह दृश्य देख मेरी मनोवृत्तियोंमें बड़ी हलचल पड़ गई थी; मानो मैं एकाएक उस स्थानमें पहुंचा दिया गया था, जिसका वर्णन मैंने अपने बचपनमें पढ़ा था, कि वहांके सभी लोग योद्धा हैं और उनकी बात बातसे वीरता टपकी पड़ती है।

कैरो या मास्कोमें हाथियोंकी बहार दिखाई नहीं देती। यह लम्बे चौड़े डीलवाले पशु जब गलियोंसे गुजरनेकी कोशिशमें हांफने लगते हैं, तब कुछ और ही मजा आता है। कैरोके सङ्कीर्ण पथमें पीठकी दोनों ओर भाराक्रान्त ऊंट चारों ओरसे आनेजानेकी राह छेंक जो तमाशा दिखाता है, वह लखनऊमें भी आप देख सकते हैं। लखनऊमें हाथी और ऊंट समान हैं। लखनऊके नीचे या गन्दे हिस्से में, यानी जहां बाजार हैं, वहां घोड़े बहुत कम नजर आते हैं, हाथी और ऊंट ही अधिकतासे चलते फिरते दिखाई देते हैं। एक दिन बहुत देरतक इन बाजारोंमें खड़े रहनेपर भी मुझे एक भी हाथी या भाराक्रान्त ऊंट नजर नहीं आया; मैंने एक विचित्र ही भाव अनुभव किया; मुझे जोरसे हंसी आई; लाख रोकनेपर भी न रुकी। यहां बहुत देर खड़ा रहकर; मैं अपनी जान खतरेमें डाल रहा था; फिर भी, हंस रहा था।

लखनऊके हिन्दू और मुसलमानोंमें बड़ा प्रभेद है; साम्य है, सिर्फ एक बातमें,—वह यह, कि दोनों अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित रहते हैं। लखनऊकी बस्ती कोई ३ लाख मनुष्योंकी है, जिसमें दो तिहाई हिन्दू हैं। हिन्दू प्रायः निम्नश्रेणीके ही हैं।

मुसलमानोंमें बहुतेरे अमीर-उमरा हैं, राज्य ही मुसलमानोंका ठहरा।

परन्तु लखनऊ जिस प्रदेशकी राजधानी है, उस प्रदेशका भी कुछ हाल आप जानते हैं? उसका संक्षिप्त विवरण यहां लिख देनेकी चेष्टा करता हूं।

जब लार्ड वेलेसली भारतवर्षके बड़े लाट हो इङ्गलण्डसे भारत आये, उस समयसे गत शताब्दिके अन्ततक अवध इङ्गलण्डसे बड़ा था। विशाल मुगल-साम्राज्यका एक सूबा था और अवधके नवाब 'नवाब वजीर' कहलाते थे। जबसे वारन हेष्टिङ्गसने धनके लोभसे नवाब-वंशकी दो स्त्रियोंको सताया और गड़े धनका पता बतानेके लिये हरम खाजासराओंको भयङ्कर यन्त्रणायें दीं; तबसे इङ्गलण्डमें लखनऊकी चर्चा चलने लगी थी, लखनऊकी सम्बन्धमें वारन हेष्टिङ्गसकी चालचलनपर टीका होने लगी थी। इस टीकाके मूल कारण हुए थे, वही बर्क, जिन्होंने वारन हेष्टिङ्गसकी कारखाईकी आलोचना करते हुए गर्ज्जनकर इङ्गलण्डकी शान्तिप्रिय प्रजामें ऐसा कोलाहल मचा दिया था, कि अङ्गरेजोंके बच्चे बच्चे तक लखनऊकी बातें जानने लगे थे।

अवधने सदासे अङ्गरेजोंका साथ दिया। मानो अवधकी इस वफादारीके लिये ही कम्पनी-सरकारने अवधका आधा हिस्सा बङ्गालमें मिला लिया था। मानो कम्पनी-सरकार अवधकी वफादारीसे भाराक्रान्त हो उठी थी। यह भार हलका करनेके लिये—इस ऋणसे उऋण होनेके लिये—कम्पनीको एक ही बात सूझी—एक ही उपाय मनोगत हुआ—और वह यह था, कि अवधका राज्यभार नवाबखान्दानके शिरसे उठा अपने शिरपर रख लेना चाहिये।

मारक्विस आफ हेष्टिङ्गसने नवाब गाजीउद्दीनसे २ करोड़ रुपये ऋण लिया और इसके बदले हिमालयपादगत तराई प्रदेशकी गैर-आबाद जमीन दी, जिसे अङ्गरेजोंने नेपाल-सरकारसे राजाकी उपाधिके साथ ले लिया था। इसपर नवाब गाजीउद्दीनने कोई आपत्ति नहीं की ; सन्तुष्ट ही रहे, अन्ततः उनकी बातोंसे उनके मनका सन्तोष ही प्रकट होता रहा। सन् १८२७ ई०में गाजीउद्दीन कम्पनीके कृपाच्छत्रके आश्रित बनाये गये और मेरे लखनऊ पहुंचनेके समय, उनके वारिस नसीरुद्दीन तख्तनशीन हुए। उस समय नसीरुद्दीनकी उम्र ३० वर्षकी थी।

अवध, अपने वर्त्तमान सङ्कुचित विस्तार-परिमाणके साथ, नेपाल और गङ्गा, इन दक्षिणोत्तर सीमाद्वय द्वारा आबद्ध हो एक त्रिकोण बन गया था। यह त्रिकोण उत्तर-पश्चिम ओरसे दक्षिण-पूर्व कोरतक ढालुआ था। तराईमें बड़ी घनी बस्ती है ; मनुष्योंकी नहीं,—पशुओंकी।

इसतरह धन-सम्पत्ति लुट जानेपर और उपजाऊ भूमि गैरके हवाले होनेपर भी अवधकी जनसंख्या सिवा प्रशिआ और अष्ट्रे लियाके युरोपके किसी राज्यसे कम नहीं। उसका विस्तार डेनमार्क, हालण्ड और बेलजियम, इन शक्तित्रयके सम्मिलित राज्य-विस्तारकी अपेक्षा अधिक और स्विजरलण्ड, साक्सनी और वरटम्बर्ग इन तीनो शक्तियोंका राज्य मिला देनेपर उसके बराबर है। इस प्रदेशका महत्त्व बवेरिया या इटलीके नेपल्ससे कम नहीं। परन्तु एशिया भूखण्डमें यह प्रदेश किसी गिनतीमे नहीं।

लखनऊ मैं अपने निजके कामसे गया था। मैंने सामान्य सौदा-

गरका वेष धारण किया था। मेरी इच्छा थी, कि नवाबके दर्शन हों; इसलिये नहीं, कि वह नवाब थे और नवाबसे भेंट करना सौभाग्यकी बात है, बल्कि इसलिये, कि देखूं हिन्दुस्थानी रईस होते कैसे हैं। जबसे दिल्ली उजड़ी, तबसे भारतमें लखनऊके दरबारका जोड़ अन्यत्र कहीं नहीं है। मेरे एक मित्रने नवाबसे मेरी भेंट करा दी। मेरा अनुमान है, कि नवाब और रेसिडराटके बीच द्वादश बृहस्पति थे। रेसिडराट वह हैं, जिन्हें बड़ी सरकार मातहत राज्योंके कारोबारमें उचित हस्तक्षेप करनेके लिये नियुक्त करती है। नवाबको मालूम था, कि रेसिडराट मुझे दरबार ले नहीं जाते; शायद इसीलिये नवाबकी कृपादृष्टि मुझपर अधिक हुई। मुझे सूचना मिली, कि नवाबके महलमें एक नौकरी खाली है। इस बातकी भी सूचना मिली, कि अगर मैं नवाबको उनके योग्य कोई वस्तु नजरकर उनसे उस खाली जगहके लिये प्रार्थना करूंगा, तो नवाब वह जगह मुझे अवश्य देंगे।

बिना रेसिडराटकी आज्ञाके कोई अङ्गरेज नवाबकी सेवामें नियुक्त हो नहीं सकता था। इसलिये मैं रेसिडराटकी मञ्जूरी प्राप्त कर लेनेकी तदवीर सोचने लगा। यही रेसिडराट इङ्गलण्डमें होते, तो शायद इन्हें कोई पूछता भी नहीं; परन्तु यहां तो वह सम्पूर्ण प्रदेशके महाप्रभु थे। मैं उनसे मिलने गया, बातचीत हुई; उन्होंने तुरन्त मञ्जूरी दे दी; साथ साथ यह शर्त्त करा ली, कि मैं अवधकी राजनीतिक गतिविधिमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप न करूंगा और परस्पर स्पर्द्धा करनेवाले मन्त्रियों या लड़ाके जमीन्दारोंका शरीक न हूंगा।

रेसिडराटकी मञ्जूरी मिलनेपर मैं नवाबसे एकान्तमें मिलने

गया। पूर्व्वीय देशोंमें यह कायदा है, कि कोई व्यक्ति राजासे भेंट करने खाली हाथ नहीं जाता। कोई वस्तु नजर देना पड़ती है—बदलेमें भी कोई बहुमूल्य वस्तु मिलती है। पहले बार जिस समय मैंने राजासे भेंट की, उस समय वह अपने विशाल दरबारमें सिंहासनपर बैठे थे। मैंने सोचा था, कि वह पैरपर पैर रख मसनदपर अपने मांसपिण्डका बोझा डाल बैठे होंगे। परन्तु वहां जाकर देखा, कि वह सुनहरी आरामकुरसीपर बैठे हुए हैं। उनकी पोशाक देशी थी सही, किन्तु उनकी अगलबगल कितनी ही विलायती चीजें शोभा पा रही थीं। मैं इन सब चीजोंको अच्छी तरह देख नहीं सका। इसके बाद मैं उनसे एकान्तमें मिलने गया। जिस समय मैं उनके महलमें पहुंचा, उस समय नवाब और उनके हुजूरी पाईंबागमें चेहलकदमी कर रहे थे। हुजूरी सब युरोपियन ही थे।

मैंने उनकी चेहलकदमी और वार्त्तालापमें खलल डालना मुनासिब खयाल नहीं किया और एक कोनेमें खड़ा हो गया। नजर देनेके लिये अपने साथ ५ अशरफियां ले गया था; दाहनी हथेलीपर रूमाल बिछा उसपर उन्हें रख बाएं हाथसे निम्नगामी दाहने हाथको ऊपर उठा हुजूरकी मार्गप्रतीक्षा करने लगा। दरबारी शिक्षामें मेरे लिये यह पहली ही शिक्षा थी। इससे पहले कभी मुझे दरबारमें आनेजानेका कोई काम पड़ा नहीं था। इसीलिये मेरे मनमें नाना तर्कवितर्क उठ रहे थे—सोच रहा था, मेरी सूरतशकल इस समय ठीक किसी गावदी जैसी प्रतीत होती होगी। मैंने अपनी हैट यानी टोपी नीचे रख दी थी। नङ्गे शिर खड़ा था। धूप अपना जोर दिखा

रही थी। नवाबके आगमनकी राह देखता देखता मैं मारे पसी-नेके तरबतर हो गया। फिर भी, खड़ा था, आखिर नवाब और उनके सहचर मेरे निकट आ पहुंचे। नवाबकी पोशाक ठीक अङ्गरेजकीसी थी। उनके शिरपर जो अङ्गरेजी टोपी या हैट थी, वह खास लण्डनकी बनी थी। नवाब सदा मुस्कुराया करते थे। उनके मुख-कमलका रङ्ग उनकी दाढ़ी, मूंछ और गल-मूंछोंके रङ्गसे बड़ा मेल खाता था। उनकी छोटी छोटी आंखे बड़ी तेज थीं। उनका शरीर मोटाताजा नहीं—दुबलापतला था, वह औसत कदके थे। प्रायः अङ्गरेजी बोला करते थे। इस समय अपने सहचरोंसे अङ्गरेजी हीमें बात कर रहे थे। मुझे उनकी सब बातचीत सुनाई देती थी; परन्तु मैं अपने ही विचारोंमें डूबा था; उनकी बातचीतकी ओर मैंने उतना ध्यान नहीं दिया। अब उनकी वह सब बातें मुझे ठीक याद नहीं।

नवाब साहब मेरे बिलकुल समीप आये, मेरे बांयें हाथपर अपना बायां करकमल रख उन्होंने दाहने हाथसे अशरफियोंको स्पर्शकर कहा;—"क्या तुमने मेरी नौकरीमे रहना निश्चय कर लिया है?" मैंने जवाब दिया,—"हुजूर! सेवकने ऐसा ही स्थिर किया है।" नवाब साहबने कहा,—"हम री तुम्हारी दोस्ती खूब निबहेगी। मैं अङ्गरेजोंको बहुत प्यार करता हूं।" इतना कह नवाबने अपनी पहली बातचीतका सिलसिला छेड़ा। मेरे मितने मुझसे कहा,—"वह अशरफियां ठिकाने रखो, नहीं तो कोई हिन्दुस्थानी आ तुमसे छीन लेगा।" मैंने अशरफियोंको तुरन्त अपनी जेबके हवाले किया। हैट टोपी शिरपर दे मैं

नवाब और उनके अरदलियोंके पीछे पीछे महलकी ओर चला।

महलके भीतरके कमरे पूर्व्वीय प्रथाके अनुसार तरह तरहकी चीजोंसे सजाये गये थे। हरेक कमरेमें कितनी ही तरहकी चीजें रखी थीं, जिन्हें देखनेसे मन प्रसन्न होनेकी अपेक्षा आश्चर्यान्वित ही अधिक होता था। भांति भांतिकी ढालें, तरह तरहकी तलवारें, नानाविध रत्नजड़ित शस्त्र, विविध प्रकारके बकतर और कितने ही प्रकारके हाथीदांतके सामान कमरोंमें भरे हुए थे। भोजनगृहमें निःसन्देह कोई फालतू सामान नहीं था। वह बिलकुल साफ और सुथरा था। इसीमें नवाब अपने प्रियपात्रोंके साथ बैठ भोजन करते थे।

महीनेमें एकबार इंटिश-फौजके अफसरोंको दावत दी जाती थी। रेसीडेण्ट और नवाबके अन्यान्य मित्र प्रायः ही दावतें लिया करते थे, परन्तु इन सब दावतोंसे नवाब बड़े ही दुःखी रहते थे।

जब कभी दावत होती और दावत हो चुकनेपर सब लोग चले जाते, तब नवाब साहबके मुंहसे प्रायः यही उद्गार निकलता था,—"शुक्र खुदावन्दा! सब चले गये; आओ, अब आरामसे एक एक जाम शराब लें। अल्लाह! कितना बेवकूफ बनाया जा रहा हूं।" सच पूछिये, तो वह दिलसे इन दावतोंका तिरस्कार करते थे। दावतमें शरीक होनेसे वह कभी खुश नहीं होते थे। दावत या जलसा हो चुकनेपर वह शिरकी टोपी उतार कमरेके एक कोनेमें फेंक देते और हाथपैर पसार लेट जाते।

पहलेपहल जिस रोज मैं नवाबके महल गया, उस रोज वहां

दावत थी। ऐसी दावतोंमें उनके हुजूरी पांचों युरोपियन शरीक होते थे। इन पांचोंमें एक नाममात्रके लिये नवावके शिक्षक थे; नवावको अङ्गरेजी सिखाते थे। नवाव दिनमें एकाध घण्टे अङ्गरेजी पढ़ते, क्योंकि अङ्गरेजी बोलनेका उन्हें बड़ा शौक था। वह जब अङ्गरेजी बोलते, तब उनके वाक्य उर्दू शब्दोंसे खाली न रहते। मैंने उन्हें अङ्गरेजीका अभ्यास करते देखा है। नवाब अपने शिक्षकको 'मास्टर' कहा करते थे। मास्टर, स्पेकटेटर या किसी अङ्गरेजी उपन्याससे एकाध पृष्ठ पहले आप पढ़ते, फिर उसीको नवावसे पढ़वाते और अन्तमें फिर आप पढ़ते। जब नवावसे दूसरे बार पढ़नेके लिये कहा जाता, तब वह हाथपैर फैला कहते,—"अल्लाह। कितना रूखा काम है।" इसके वाद एक एक जाम शराबसे नवाव और मास्टर दोनों अपनी अपनी थकावट दूर करते।

शराव पीते ही गपशप आरम्भ होती; पुस्तकें किनारे हटा दी जातीं। नवावका ऐसा ही अभ्यासक्रम था। मास्टर कभी १० मिनटसे अधिक पढ़ाते नहीं थे और न नवाव इससे अधिक परिश्रम करना चाहते थे। इन्हीं १० मिनटोंके लिये मास्टर सालाना १५ सौ पाउण्ड यानी २२ हजार ५ सौ रुपये तनखाह पाते थे।

मास्टर क्या थे, नवावके खासे यार थे। उनके दोस्तोंमें एक जर्मन चित्रकार, एक गवैया, शरीररक्षकोंके कप्तान और एक युरोपियन हज्जाम था। इन्हीं पांच युरोपियन दोस्तोंमें एक मैं भी था। उनमें हज्जामकी इज्जत ज्यादा थी। नवावके मुख्य मन्त्री क्या; स्वयं नवावसे भी अधिक, हज्जामका दवदवा था।

वह नवाबका बड़ा ही प्रियपात्र था, और सभी उसे आदरकी दृष्टिसे देखते थे। हज्जामकी जीवनी भी अजीब थी। वह जहाजमें केबिनका काम करता था। जब वह कलकत्ते आया, तब उसका यही पेशा था। कलकत्ते पहुंच उसने यह काम छोड़ दिया और अपना पुराना व्यवसाय यानी हज्जामी करने लगा; रोजगार चल गया। उसने बहुतसी सम्पत्ति एकत्रित की और फिर धनसे मदमत्त हो नाना कुकर्म करने लगा। इसके बाद उसने दरियाई रोजगार आरम्भ किया—नाव द्वारा विलायती माल मंगाने लगा। अन्तमें वह लखनऊ आया। यहां रेसिडेण्टसे मुलाकात कर उनको अपने भुलावेमें डाल उनके द्वारा उसने नवाबसे भेंट की। वह रेसिडेण्ट अब लखनऊमें नहीं, विलायतमें हैं; पारलीमेण्टके सदस्य।

नवाब हज्जामसे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे सरफराज खांकी उपाधि दी, बहुतसा धन भी दिया। अब वह हज्जाम या नाविक नहीं रहा, लक्ष्मीका वरपुत्र हुआ और लखनऊमें उसका प्रभाव दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा। नवाब सरफराज खांकी मर्जीके खिलाफ कुछ भी करते नहीं थे। इसीलिये सरफराज खांके दरवाजे नित्य रिश्वतके धनका ढेर लगता था। रिश्वतके सिवा धनोपार्जनके और भी कई मार्ग उसने खोल रखे थे। नवाबके यहां जितनी शराब आती, वह सब सरफराज खांकी मारफत। दरबारमें जो जो विलायती चीज आती, सब उन्हींकी मारफत। तब उसे रुपयेकी कमी क्यों होने लगी? स्वयं नवाब जिनकी खातिर करते थे, उनकी इज्जत कोई कैसे न करता?

हज्जामकी इज्जतकी हद नहीं थी। जब जब नवाब खाना

खाते, तब तब उनके साथ सरफराज खां भी खाना खाते ; नवाब सरफराज खांके हाथों खुली बोतलकी ही शराब पीते थे। नवाब अपने घरके किसी व्यक्तिपर विश्वास नहीं करते थे। जिस चीजपर हज्जामकी मुहर न लगी रहती, वह चीज नवाब छूते भी नहीं थे। धीरे धीरे हज्जामका प्रभाव बङ्गालसे पश्चिमतक फैल गया। समाचारपत्रोंने उसकी खूब निन्दा आरम्भ की।

कलकत्तेके 'रिविउने' उसे "Low minial" यानी नीच खिद-मतगार बताया। आगरा-अखबारमें जो अब बन्द हो गया है, बराबर उसके सम्बन्धमें निन्दाजनक लेख निकलते थे। इन लेखोंका खण्डन करनेके लिये हज्जामने एक मुहर्रिर नौकर रखा था, जो कलकत्तेके किसी परिचित पत्रमें "आगरा अखबार" के प्रश्नोंके उत्तर दिया करता था। इस कामके लिये नौकर १ सौ रुपये माहवार पाता था।

अब शायद यह बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं, कि मैं जितनी इज्जत नवाबकी करता था, उतनी ही इज्जत मुझे हज्जाम-की करना पड़ती थी; परन्तु अभीतक मैंने इधर उधर हीकी बातें कहीं; अच्छा होगा, कि इन्हींके साथ साथ भोजनका हाल भी लिख दूं।

द्वितीय परिच्छेद।

नवाब नसीरुद्दीन हैदर रात ६ बजे हज्जाम सरफराज खांके कन्धेपर झुके भोजनगृहमें आ पहुंचे। नवाब हज्जामसे बाढ़में ऊंचे थे, परन्तु हज्जामका शरीर नवाबकी अपेक्षा अधिक गठीला और सुडौल था। नवाब अङ्गरेजी पोशाक पहने हुए थे। कोट, शर्ट, पतलून, जाकेट, वास्केट, नेकटाई, कालर सभी उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गपर यथास्थान शोभायमान थे। इतना होनेपर भी नवाबकी मुखश्रीसे राजश्री टपकी पड़ती थी,—मालूम होता था, कि नवाब कोई बादशाह हैं। हज्जाम, हज्जाम ही ठहरा; उसकी सूरतशक्ल वैसी ही थी, जैसी हज्जामोंकी होती है। दोनोंकी पोशाक समान थी; पर रूपरङ्गमें आकाश-पातालका अन्तर।

हमलोग साथ ही भोजनकी कोठरीमें गये। वहांकी शोभा कुछ दूसरी ही थी। वहां देशी विलायती दोनों तरहके बरतन मौजूद थे।

हमलोग अपनी अपनी जगह बैठ गये। नवाब एक सुनहरी आराम कुरसीपर लेट गये। नवाबकी एक ओर हज्जाम सरफराज खां विराजमान थे; दूसरी ओर मैं था। हमलोगोंकी नाकके ठीक सामने कुछ कुरसियां पड़ी थीं, जिनपर कोई बैठा नहीं था। इन्हीं कुरसियोंके पीछेसे नौकर-चाकर आते जाते थे। यह जगह खाली रखनेमें नवाबका एक मनोगत उद्देश्य था; वह यह, कि आज रसनाकी परितृप्तिके लिये बाहर जो सामान बन रहे हैं, वह नवाबके दृष्टिगोचर हो।

हमलोगोंके बैठते ही एक परदेके अन्दरसे कोई १२ स्त्रियां बाहर आईं। इनकी पोशाक देखने काबिल थी, इनका सौन्दर्य मुग्ध करनेवाला था। एक व्यक्तिने मुझसे कह दिया, कि इन लौंडियोंपर नजर न डालना; यह सब बड़ी ही पवित्रात्मा हैं। हरमकी अन्यान्य स्त्रियोंकी तरह यह लौंडियां भी गैर आदमीसे आंखें मिलाना दोष समझती थीं। सन्ध्या समय प्रायः ही ऐसा मौका आता, कि जब मैं उन्हें कुछ देरतक बेधड़क देख सकता था।

वह सब जवान और खूबसूरत थीं। उनका रङ्ग न गोरा था न काला, गेहुआं था। उनके काले काले घुंघराले बाल पीछेकी ओर हटे रहते थे। मांग जमी रहती थी, जिनसे मोतियोंकी लड़ियां लटकती रहती थीं। सांवला रङ्ग बहुत ही सुखकर होता है; उस रङ्गसे रञ्जित सुकोमल स्त्रियोंके शरीरपर जब मोतियोंके झूमरकी प्रभा फैलती थी, तब कुछ विचित्र ही सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता था। जब उन यौवनसम्पन्ना ललनाओंके निविड़ केशपाशमें लटकती मोतियोंकी लड़ियां झूलझूलकर उनके गालोंपर अस्थिर प्रभा प्रतिभासित करती थीं, तब वह मुखश्री निश्चय ही देखने योग्य बनती थी। वह ललनायें नित्यकी परिपाटीके अनुसार अपने जाति-व्यवहारगत वेशसे भूषित थीं। शरीरका पश्चाङ्ग यानी कमरसे पैरोंतक साटनका पायजामा था। ऊपरके चुस्त वस्त्रोंपर नानाविध बेलबूटे ललनाओंके लालित्यको बढ़ा रहे थे। ललनाओंके अङ्ग-प्रत्यङ्ग विविध प्रकारके अलङ्कारोंसे अलङ्कृत थे। उनके शरीरमें एक खूबी—एक सौन्दर्य था, जिसे हम विलायती लोग अपने देशमें कभी देख नहीं सकते—

उनके बाजुओंका घुमाव। इस घुमावमें वह लालित्य है, वह सौन्दर्य्य है, वह ख़ूबी है, जिसपर भारतरमणीके अतिरिक्त और किसीका अधिकार नहीं।

लौंडियां नवाबकी कुरसीके पीछे आ ठहर गईं। नवाब चुप थे। किसीने कुछ भी ख़याल नहीं किया। क्योंकि खानेके समय अन्यान्य रीतियोंमें यह भी एक नित्यप्रतिपालित रीति थी। लौंडियां नवाबको पङ्खा झलती थीं और हुक्म पानेपर हुक्का भरती थीं। जबतक हमलोग खाना खाते रहे, तबतक वह इसी काममें रत थीं। खाना खा चुकनेपर नवाब साहब अपने महल जाते और उनके पीछे पीछे वह लौंडियां जातीं। प्रायः ऐसा होता था, कि नवाब लौंडियोंकी मददसे जनानखाने पहुंचाये जाते थे।

खाना युरोपियन रीतिका था। कलकत्तेके अच्छेसे अच्छे होटलमें जो मिल सकता है, वही खाना हमलोगोंने नवाबके भोजनकी कोठरीमें खाया। बीच बीचमें रसोइया नौकर आ अदबसे सलाम करते, थाली परोसते, नवाबपर नीची अथच तेज निगाह डाल खड़े रहते और हुक्म पाते ही चले जाते थे। हमलोग नवाबसे बातचीत कर रहे थे। मछली, भात, रस आदि एकके बाद एक पक्वान्न आता था और हमलोग उसे उड़ाते जाते थे। रसोइये अच्छे थे। उनका मुखिया था एक फ्रेञ्च, जो कलकत्तेके बङ्गाल क्लबका कुछ रोज बावरची रह चुका था। परन्तु युरोपियन कोचवान या फ्रेञ्च बावर्चीको अपना उहदा छोड़ इधर उधर जाने आनेकी स्वाधीनता नहीं थी। ऐसी स्वाधीनताके मालिक सिर्फ़ वही हज्जाम सरफराज़ खां थे।

नसीर मुसलमान थे, पर वह शराबसे नफ़रत रखते नहीं थे। वहांके दरबारी या अमीर-उमराका भी यही हाल था। स्वयं नसीरने कई बार कहा था कि कुरान शरीफ़में शराब पीना मना नहीं है, जो कहते हैं, शराब पीना अच्छा नहीं, वह भाक मारते हैं। यह जरूर है, कि ज्यादा शराब पीना अच्छा नहीं, मगर नवाब ज्यादा शराब पी लें, तो इसमें भी कोई अधर्म या पाप नहीं। नवाब नसीरुद्दीनका ऐसा ही खयाल था। जब जब वह खाना खाते, तब तब वह शराब पी लिया करते थे। शराब प्रायः अच्छे किस्मकी ही हुआ करती थी, जैसे क्लेरेट, मेदिरा और शम्पेन। गर्मीके दिनोंमे शराब बरफ़के जरिये ठंडी कर ली जाती थी।

खाना आरम्भ करनेसे पहले ही नवाब और दरबारियोंने मदिरापान कर लिया। वह और दरबारी नशेमें चूर हो 'स्वाधीनता" और 'स्वच्छन्दता' के हावभाव दिखाने लगे।

नवाबने कहा,—मैं युरोपियनोंको बराबर प्यार करता आया हूं। नेटिव मुझसे नफ़रत करते हैं। मेरा सब खानदान मुझे बिलकुल घृणित समझता है। मेरे कुटुम्बी मेरी जान लेनेपर उतारू हैं; पर मुझसे डरते हैं। वल्लाह! क्या खूब! यह कैसा डर है।

हज्जाम बोला,—हुजूरने ही उनको ऐसा बनाया है, कि वह हुजूरसे डरते हैं।

नवाब। "निश्चय। आपका कहना बहुत ठीक है।" फिर हमलोगोंकी ओर मुड़कर नवाबने कहा,—आपलोग प्रायः ही यह देखते है, कि लखनऊके लोग आपसमें लड़ा करते हैं। क्यों?

"हां हुजूर। रोज रोज ऐसी लड़ाई हुआ करती है।"

"खूनखराबी भी होती है?"

"हां हुजूर। खूनखराबी भी रोज हुआ करती है।"

"आह। खूनखराबी भी होने लगी। परन्तु वह आपलोगोंसे अलग ही रहते होंगे। क्यों?"

"जी हां हुजूर।"

नवाबसाहेब। मैंने उन्हें अच्छी तरह ताकीद कर दी है, कि अगर वह आपलोगोंके साथ कोई बदसुलूकी करेंगे, तो तुरन्त निकाल दिये जावेंगे। वह लड़ाके अच्छी तरह जानते हैं, कि मैं युरोपियनोंको प्यार करता हूं।

धीरे धीरे टेबुलपर बेशकीमत और लज्जतदार फल आये। जब फलाहारका सब सामान टेबुलपर रक्खा गया, तब सन्ध्या समयका नाट्याभिनय आरम्भ हुआ। नाट्याभिनयका कोई एक खास ढङ्ग नहीं था। नवाबकी मरजी होती, तो योगासनका ही तमाशा कर दिखाया जाता, नहीं तो कभी बन्दरके स्वांगमें दरबारी भांड़ तरह तरहके बन्दरी खेलकूद दिखाते, कभी कण्ठस्थ संवाद सुनाते, जिसे सुन वीरभद्र या और और दरबारियोंका स्मरण होता, कभी मुर्ग-बटेरकी लड़ाई होती और कभी कठपुतलोंका नाच-तमाशा दिखाया जाता। मतलब यह, कि कोई न कोई दिलचस्प तमाशा दिखाया जाता था और साथ साथ गानेवालियां भी नाचती गाती थीं।

मैंने जब पहली बार नवाबके साथ खाना खाया था, तब कठपुतलोंका नाच हुआ था। साथ साथ नर्त्तकियोंका गाना और बजाना भी। मसखरोंसे नवाब बहुत खुश रहते थे। उनकी बातोंसे

ऐसे बहलते और बहकते, कि हंसते हंसते उनके पेटमें बल पड़ने लगते थे। आमोदप्रमोदसे वह मस्त हो जाते थे। जब भांड़ोंका तमाशा हुआ, तब नवाबको प्रसन्न देख हज्जाम सरफराज खां भी प्रसन्नताका स्वांग दिखाने लगे। नर्त्तकियोंका हाथोंका उठाना, शिरपर रखना और फिर नीचे झुकाना, कमर हिलाना और उंगलियोंका तरह तरहसे मटकाना विचित्र ही समां बांधता था। खूबसूरतीमें नर्त्तकियोंसे लौंडियां ही बढ़कर थीं। परन्तु नर्त्तकियोंके शरीर-गठनमें लौंडियां जरा भी बराबरी कर नहीं सकती थीं। नर्त्तकियोंकी देहका बनाव बड़ा ही सुन्दर होता है। उनके नाम हीसे उनके पेशेकी सूचना हो जाती है। नर्त्तकियोंका नाच देख मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ, परन्तु नवाबने नाचकी ओर जरा भी आंख न फेरी। वह कठपुतलीका तमाशा देख रहे थे।

कुछ देर बाद नवाबके इशारा करनेपर हज्जामने कमरेके बाहरसे एक चीज ला नवाबको दी। अबतक तो नवाब कठपुतलीका खेल दूर हीसे देख रहे थे; पर अब कठपुतलीके बिलकुल पास चले गये और उन्हें गौरसे देखने लगे। कठपुतलीवाले बड़ी प्रसन्नता और उत्साहसे खेल दिखाने लगे; उन्होंने समझा, कि हमारी किस्मत आज बहुत तेज है। नवाबने कुछ देरके बाद अपनी भुजा पसार निर्दोष कठपुतलीको जमीनपर अचेत लिटा दिया। इस समय नवाबके हाथमें एक चाकू था, जिससे साफ जाहिर हुआ, कि उन्होंने कठपुतलियोंको नचानेवाला सूत काट दिया। नवाबने मुस्कुराते हुए मुंह मोड़ लिया और कहा,—"क्यों कैसी हुई?" हज्जाम खिलखिलाकर हंस पड़ा और अन्यान्य दरबारियोंने

उसका साथ दिया। प्राइवी मजाक अभी खतम हुआ नहीं था। नवाबने धीरे धीरे सभी पुतलियोंको गिरा दिया। प्रत्येक पुतलीके गिरते ही खिलाखिलाहटसे कमरा गूंजने लगता। पुतलियोंके गिरनेके बाद नवाबने हाथमें एक मोमबत्ती ले पुतलियोंको आग लगा दी। शीघ्र ही आग बुझा दी गई।

उस रातको मदिरा देवीकी उपासनामें कोई बात उठा न रख गई। विवेक-विधिकी लात मारकर नवाब जामपर जाम चढ़ाने लगे। हमलोगोंमे भी कोई ऐसा न था, जो मदिरासे जरा भी घृणा करता। कुछ ही देरमें सभी शराबके नशेसे बदमस्त हुए।

कमरेके एक किनारे परदेके भीतर नवाबकी बेगमें बैठी थीं। नवाबने चन्द बेगमोंके लिये ही वह जगह नियत कर रखी थी। आम तौरसे कोई स्त्री वहां आने नहीं पाती थी। इन खास बेगमोंको बेधड़क देखना कुसूर समझा जाता था। टेबुलसे सटा मैं जिस ओर बैठा था, वहांसे परदेके भीतर मेरी दृष्टि आसानीसे पहुंच सकती थी। यद्यपि बेगमोंको देखना कुसूर था, तथापि मैं बीच बीचमें उधर नजर दौड़ाया ही करता था। मैं सबको तो देख नहीं सका, पर एकको, जो सबसे सुन्दर और कमनीय थी, मैंने देख लिया, मेरी दृष्टि उसने आकृष्ट कर ली। वह एक मसनदसे लगी बैठी थी। उसके पादुन्तघाल रत्न-जड़ित अलङ्कारोंसे अलङ्कृत थे। उसकी हस्तचालनासे बीच बीचमें ध्वनिविहीन मन्दगति दामिनीकी दमकका मजा मिलता था। जब नवाबके सुगदण्ड द्वारा नटपुतलियां परास्त हो धराशायी हुईं, तब भीतरसे मन्द मन्द हंसीकी मधुर ध्वनि आई, जिसने सुननेवालोंका मन मतवाला बना दिया।

कमरेका तमाशा चलता ही रहा। नवाब मदिरा देवीकी भक्ति और आराधनामें तन्मय हो गये; उनकी सारी शक्तियां मदिराके असरसे शिथिल हो गईं; नशेमें चूर; होश हवास उड़ गये। गाना हो रहा था, नर्त्तकियां नाच रही थीं; पर नवाबको कुछ सुध नहीं थी।

ऐसी अवस्थामें लौंडियों और दो हिंजड़ोंके सहारे वह परदेके भीतर और परदेके भीतरसे रङ्गमहल पहुंचा दिये गये। देखिये मदिराका भी क्या प्रभाव है। एक मामूली बेताज शराबी भी इसके जोरसे ताजदार नवाबकी बराबरी कर सकता है।

दूसरे दिन मैंने महलका वह हिस्सा देख लिया; जिसे अब तक पूरी तरहसे मैं देख नहीं सका था। वहां भी वही जगमगाहट और चमचमाहटके सामान मौजूद थे, जिसमें खूबसूरती नामके लिये भी नहीं थी। महलमें एक झील थी, जो अलबत्ता बहुत कुछ विचित्र थी। झील कृत्रिम थी; उसकी परिधि किसी बड़े बागके बराबर थी। झीलके बीच गुम्बददार एक महल बना था और उसके चार सिरोंपर चार मीनार थे। झीलके शुभ्र सलिलमें हरेक वस्तुका प्रतिबिम्ब स्पष्ट प्रतिभात होता था। पानीमें रङ्गबरङ्गी मछलियां पैरती और खेलती नजर आती थीं। यह मछलियां इङ्गलण्डके बाजारोंमें बिकनेवाली मछलियों जैसी छोटी नहीं थीं, बल्कि डेढ़ फुट लम्बी और बड़ी फुरतीली थीं।

हमलोग नावमें बैठ झीलके बीचवाले महलमें गये। हम तीन आदमी थे—मैं, नवाब और मेरा साथी। नवाब मेरे इस साथीकी बड़ी खातिर करते थे। मैं इतना आदरपात्र बना नहीं था।

लखनऊभरमें इस महलके बराबर खूबसूरत और कोई इमारत नहीं थी। महल दो भागोंमें विभक्त था। दोनों भाग मध्यम उंचाईके थे। दोनोंकी बनावटमें समानता थी। महलकी चारों ओर दीवान था। महलके बड़े अंशके मध्यमें एक मेज रखा था, जिसपर उस महलका नकशा बना था। नकशेमें महलकी सभी बारीकियां खींची गई थीं। महलसे पानीकी ओर देखनेसे बड़ा ही मनोहर दृश्य दिखाई देता था। मालूम होता था, कि हम एक टापूमें बैठे हैं, जिसकी चारों ओर जल ही जल है। झीलकी चारों ओर तरह तरहके पौधोंके गमले रखे गये थे। देखनेसे तबीयत प्रसन्न हो जाती थी। मैंने मन ही मन कहा,—"अगर मैं नवाब होता, तो इसी महलमें रहता और इसे और भी सुन्दर बनानेमें सारा राजप्रसाद बरबाद कर देता।"

नवाब इस महलमें बहुत कम आया करते थे। इसलिये महल कहीं कहीं बेमरम्मत हो गया था। नवाबके अरदलियोंसे मुझे पता लगा, कि कुछ काल पहले नवाब यहां अपनी सहेलियोंके साथ हवा खाने आया करते थे। उनके साथ कोई पुरुष रहता नहीं था। नाव खे ले जानेके लिये हिंजड़े बुलाये जाते थे। इधर कुछ दिनोंसे नवाब इस महलको बिलकुल ही भूल गये थे—बहुत कम आया करते थे।

महलमें आनेके कुछ देर बाद हमलोग खाना खाने बैठे। खाना खा रहे थे और बात भी कर रहे थे। बातों बातों मछलियोंकी बात छिड़ी। एकने पूछा,—"क्या यह मछलियां खानेमें लज्जतदार होती हैं?" किसीने कहा,—"हां, बड़ी ही लज्जतदार होती है।" किसीने कहा,—"नहीं, कुछ भी लज्जतदार नहीं

होतीं। पानी होमें भली जान पड़ती हैं।" नवावने कहा—"नहीं, खानेमें वह बड़ी ह स्वादिष्ट हैं।" स्थिर हुआ, दूसरे दिन वह मछलियां पकाई जायें। ठीक समयपर जब हमलोग खाना खाने बैठे, तो तालावकी पकी पछलियां हमलोगोंके सामने आईं। खाकर देखा; बहुत लनीन मालम नहीं हुई। उनमें सिवा हड्डीके मानो कुछ था ही नहीं। अगर वह स्वादिष्ट भी होतीं, तो भी हड्डियोंकी वजह उन्हें चबाना असम्भव था। भारतमें हिलसा नाम्नी एक मछली होती है, जो वेशुमार हड्डियोंके लिये बहुत मशहूर है, परन्तु वह मछलियां उनसे भी बढ़कर निकलीं।

एक दिन नवाव साहबने रेसिडेण्ट और कई ब्रटिश अफ-सरोंको दावत दी। इस दावतमें कम्पनीके सरजन भी पधारे थे। इनका नाम न जने क्या था। हमलोग इन्हें जोन्स कहा करते थे। नवावने जोन्ससे कहा—"मेरे साथ शतरञ्ज खेलियेगा?"

जोन्स नवावके दृष्टीकम्य थे। नवाब इनसे घृणा करते थे और बात बातमें उन्हें कायल करना बहुत पसन्द करते थे।

जोन्सने जवाब दिया—"हुजूरके साथ खेलनेमें मैं अपना बड़ा गौरव समझता हूं।"

नवाब। बाजी लगे; सौ अशरफियां।

जोन्स। मैं गरीब आदमी हूं, मैं तो लुट जाऊंगा।

नवाब। मास्टर! आप खेलेंगे, बाजी है, सौ अशरफियां।

मास्टर। बड़ी खुशीसे।

मास्टर नवाबको अच्छी तरह पहचानते थे। उनके गुरु ही थे।

शतरञ्जकी बिसात मंगाई गई। प्यादा, रुख, वज़ीर, घोड़ा ऊंट सब यथास्थान रखे गये। खेल शुरू हुआ। मैं पास ही बैठा था; देखता था, कि कौन कैसी चाल चलता है। आरम्भमें तो मास्टर खूबीके साथ खेले, मालूम होता था, कि मास्टर शतरञ्जके अच्छे उस्ताद हैं। परन्तु शीघ्र ही सब पोल खुल गई। नवाबका खेल खराब था ही, पर मास्टरका खेल और भी खराब निकला। मैंने देखा, कि नवाब जीत जायेंगे। ऐसा ही हुआ, मास्टर हार गये।

नवाब बोले,—"अब आप सौ अशरफियोंके देनदार हुए।"

मास्टर। आज ही शामको लीजिये।

नवाब अपने रङ्गमहलकी ओर चल पड़े और जाते जाते उन्होंने कहा,—"अशरफियां न भूलियेगा।"

शामको जब हमलोग खाना खाने जमा हुए, तब नवाबने सबसे पहले मास्टर हीकी ओर नज़र फेरी और कहा,—"क्यों साहब! अशरफियां लाये ?"

मास्टर। हां, हुजूर! ले आया हूं। नीचे पालकीमें धरी हैं। कहिये, तो ले आऊं।

नवाब। छिः आप भी अजीब आदमी हैं! अभी भेज दीजिये, उन्हें मकान। क्या मैं उन्हें ले सकता हूं? आपने क्या समझा था, कि मुझे अशरफियोंकी जरूरत थी? कल जो-न्सने यही समझा। देखा नहीं, कि कल स्नूकर किसतरह सब खाना जहरमार कर गया? कितना बदजात आदमी है!

दूसरे बार जब नवाबने जोन्सले शतरञ्ज खेलनेके लिये पूछा,

तब अगर वह खेलनेके लिये राजी होता, तो उसे १ सौ ६० पाउण्ड यानी २ हजार ४ सौ रुपयेका घाटा सहना पड़ता। क्योंकि नवाब कुछ ऐसे विचित्र मिजाजके आदमी थे, कि उनकी चालचलन या गतिविधिपर कभी विश्वास किया जा नहीं सकता था। इसपर भी उनकी घरके लोगोंको पूरा विश्वास था, कि नवाब अगर किसीसे धन लेंगे भी, तो उसे उसका दूना लौटा देंगे। हां, जिसपर नवाब नाराज हो, उसकी बात और है।

नवाबको शतरञ्जके खेलमें विजयी करा देना कोई मुश्किल बात नहीं थी। वह अच्छा खेलते नहीं थे; अथच सदा ही विजयी होते थे। दरबारका यह कायदा हो था, कि नवाब कभी न हारें। मैं प्रायः नवाबके साथ खेला करता था; मुझे दरबारका सबक़ मिल चुका था, सबकके अनुसार ही चाल चलता और इसतरह नवाबको खुश करता था। नवाब बिलियर्ड भी खेलते थे; हमलोग भी खेलते थे। इस खेलमें हारजीत किसीकी खास मिल्कियत नहीं थी; इसलिये नवाबको विजयी कराना कोई आसान बात नहीं थी। यहां बड़ी चालाकीसे काम करना पड़ता था। नवाबके पास हमलोगोंसे कोई बैठ जाता और अवसरके अनुसार 'बाल' एक जगहसे उठा दूसरी जगह रख देता। यह काम खुल्लमखुल्ला किया जाता नहीं था। इसमें बड़ी तेज निगाह, चुस्ती, फुरती और चालाकीसे काम लेना पड़ता था। इसतरह नवाब जीत जाते थे। जबतक खिलाड़ी सावधानीसे खेलता यानी जबतक नवाबकी ओरकी इस चालाकीको लोग जान लेते नहीं थे, तबतक नवाब बहुत खुश रहते। मालूम हो जानेपर हंसी और मजाक हुआ करता था।

नवाबकी यह सब बातें पढ़ पाठक कहेंगे,—"नवाब क्या दरबारके एक खेल थे—खिलवाड़ थे।" मैं भी और क्या कहूंगा? परन्तु अगर आपका यही खयाल हो, कि लखनऊके महलहीमें यह सब खिलवाड़ हुआ करते थे और अन्यत्र कहीं नहीं, तो आपका यह खयाल भ्रममूलक है। विश्वास रूसके सम्राट्को अगर उनका कोई मुसाहिब शतरञ्ज या बिलिअर्डमें हरा देता है तो वह बड़ा ही साहसी और बहादुर समझा जाता है। कौन रूस-सम्राट्के महलमें भी, चाहे रूस-सम्राट् लड़के हों या न हों, जब शतरञ्ज या बिलिअर्डका खेल होता है, तब उन्हें विजयी करानेके लिये लखनऊकी तरह तरकीबें अमलमें लाई जाती हैं। परन्तु यह बात कल्पित समझी जायेगी, क्योंकि इसका कोई प्रमाण नहीं है। युरोपमें जब आखेटके लिये बड़े बड़े अमीर उमरा निकलते हैं, तब क्या उनके बदले उनके नौकरचाकर ही करामातका काम नहीं करते। युरोपके शिकारकी बातसे अगर अवधभरके आश्रयस्थल नसीरुद्दीन हैदरकी तुलना की जाये, तो क्या आपको यह कहना नहीं पड़ेगा, कि जो खुशामद नसीरके दरबारमें फैली हुई थी, वही खुशामद युरोपमें भी विराजमान है।

प्रत्येक वर्षकी ?री नवम्बरको जर्म्मनीमें रोबर्ट हबर्टकी स्मृतिका उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सवमें बरलिनका दरबार ग्रनवाल्डके अरण्यमें सूअरका शिकार करता है। प्रशिआके नरनाथ शिकारके लिये रङ्गबरङ्गी पोशाक पहन मैदानमें उतरते हैं। जिस सूअरका शिकार होता है, वह पहले हीसे पकड़ा जाता है। उसके दांत उखाड़ लिये जाते हैं, जिसमें शिकारीको चोट न

पहुंचे। नरनाथके मैदानमें आते ही सूअर छोड़ दिया जाता है। उसके पीछे पीछे चोबदार, भालाबरदार और दलके दल सवार दौड़ते हैं। साथ साथ कुत्ते भी दौड़ाये जाते हैं जो मारे डरके एक पग भी आगे चलना नहीं चाहते।

इस प्रकार जब वह जङ्गली सूअर चारो ओरसे घिर जाता है, और सवारोंकी बार बारकी मारसे बेदम कर दिया जाता है, तब नरनाथ नियामसे तलवार निकाल सूअरकी गर्दनपर वार करते हैं। सूअरका शिर धड़से अलग होते ही नरनाथके विजयी होनेकी खुशीमें जनसमूहसे प्रचण्ड जयध्वनि उत्थित होती है और चारो ओर नरनाथ हीकी प्रशंसा सुनाई देने लगती है। लखनऊके राजप्रासादमें क्या इससे भी बढ़कर लड़कोंके खेल खेले जाते हैं?

नवाबकी युरोपियन मित्रोंके प्रति प्रीति देख लखनऊके अमीर उमरा नवाबसे बहुत नाराज थे और उनकी नाराजगी बेसबब नहीं थी। नवाब हज्जामके भुलावेमें ऐसे फंस गये थे, कि उसके रहते राज्यके किसी बड़े पदाधिकारीकी भी बात सुनी जाती नहीं थी। यहांतक, कि वजीर, सेनापति, पुलिसके अफसर राजा बखतावर सिंह आदि प्रभावशाली व्यक्तियोंका भी जोर चलता नहीं था।

एकबार रौशनुद्दौलहने नवाब नसीरुद्दीनसे कहा,—"हुजूर! यह लोग दरबारमें जूता चढ़ाये ही आते हैं। यह ठीक नहीं। हमलोग ऐसा कभी नहीं करते। आप याद रखिये, इसतरह उन्हें आनेकी आज्ञा देनेमें आपने अपनी कृपाका अतिरेक किया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, कि हुजूरके वालिद गाजीउद्दीन हैदर ऐसी रस्म यहांसे फौरन उठा देते।"

रौशनुद्दौलह सदा ही नम्रतापूर्व्वक भाषण करते थे। उनके इस मधुर उपदेशसे नवाब थोड़ी देरके लिये चुप हो रहे—बोलनेकी हिम्मत नहीं हुई—रौशनुद्दौलहकी ओर देखते रह गये। परन्तु रौशनुद्दौलह कब माननेवाले थे। वह अपने प्रश्नका उत्तर केवल दृष्टिनिक्षेप हीसे चाहते नहीं थे—चाहते थे नवाब कुछ कहें। निदान नवाबने रौशनुद्दौलहको 'नवाब' सम्बोधन कर कहा,—"क्या मैं इङ्गलण्डके नरनाथसे भी बड़ा हूं?"

रौशनुद्दौलह। हुज़ूर! हिन्दुस्थानके राजाओंमें सबसे बड़े हैं। दिल्लीके सम्राट भी हुज़ूरकी बराबरी कर नहीं सकते। लखनऊ संसारभरका आश्रयस्थान है—युग युग यह ऐसा ही बना रहे।

नवाब। रौशनुद्दौलह। क्या मैं इङ्गलण्डके बादशाहसे भी बड़ा हूं?

रौशनुद्दौलह। हुज़ूरका सेवक यह कह नहीं सकता, कि इङ्गलण्डके नरनाथसे भी बड़ा कोई मनुष्य है।

नवाब। नवाब! सुनो; और सेनापति! तुम भी सुनो। इङ्गलण्डके बादशाह मेरे मालिक हैं और यह लोग उनके सामने जूते पहन जाते हैं। फिर क्या कारण है, कि वह यहां जूते बाहर उतार आवें। जब वह दरबारमें आते हैं, तब हैट उतारकर ही आते हैं। कहिये! शिरपर हैट दे वह कभी मेरे सामने आये थे?

रौशनुद्दौलह। नहीं।

नवाब। सम्मान-प्रदर्शनका यही नियम है। वह हैट उतारते, तो आप लोग जूते उतारते हैं; ...

यह बात छोड़ दो। वल्लाह। अगर आप लोग जूता उतारनेके बदले टोपी ही उतार उसे बाहर रख भीतर आयें, तो वह भी हैटके बदले जूता बाहर छोड़ भीतर आयेंगे।

हैट-बूटवाली चर्चा यहीं समाप्त हुई। नवाब चुप हो गये। मुसलमानोंमें पगड़ीका न रहना बड़ी दुर्दशाका चिह्न समझा जाता है। जब कभी किसी मुसलमानको मरजीके खिलाफ या विचारके विरुद्ध कार्य्य करनेके लिये आग्रह किया जाता है, तब वह यही कहता है,—"अगर मैं यह काम करूंगा, तो मेरे वालिदके सरपर पगड़ी न रहेगी।"

शेफ़ुद्दौलह और नवाबके बीच जो बातें हुईं, वह नवाबकी आज्ञासे नवाबके लिक्खरने नोटबुकमें लिखीं। दरबारकी हरेक घटनाका हाल नवाबके यहां लिखा रहता था। नवाब जब अपने होशमें रह कोई काम करते थे, तब मालूम होता था, कि वह कोई मूर्ख मनुष्य नहीं थे। परन्तु नशेमें चूर हो जब वह बात करते या और कोई काम करते, तब मालूम होता था, कि नवाब असलमें नवाब नहीं, एक खिलौना हैं।

ऊपरकी पंक्तियोंमें मैंने नवाबको कितने ही प्रकारसे चित्रित किया है। परन्तु अभी चित्र अच्छी तरह खींचा नहीं गया। इसलिये अब मैं उनकी और और बातोंका हाल लिखता हूं; जिनसे नवाबका बहुरूप स्पष्ट हो जायेगा। इन बातोंमें कुछ अच्छी बातें हैं और कुछ बुरी भी।

एक समयका जिक्र है, कि हमलोग ज्ञानगञ्जवाले बागकी सैर कर रहे थे। इस बागमें प्रायः पशुओंकी लड़ाई हुआ करती थी। बागका क्षेत्रफल लगभग तीन चार एकड़ था और

उसकी चारों ओर ऊँची दीवारें खड़ी थीं। बागमें हमलोगोंके रहते कोई हिन्दुस्थानी आने पाता नहीं था। नवाबने जबसे अङ्गरेजी उछलकूद और बरफके खेलका वर्णन सुना था, तबसे उनके दिलमें यही लगी थी, कि यह दोनो खेल यहां खेले जायें। उन्होंने इन खेलोंकी तसवीरें भी देखी थीं, जिससे उनको यह इच्छा और भी प्रबल हुई। उन्होने हमलोगोसे यह खेल दिखानेके लिये कहा। शरीररक्षकोंके कप्तानकी पीठपर मास्टर सवार हुए और नवाबके पुस्तकालयके मैनेजरकी पीठपर चित्रकार। अब उछलकूदका खेल आरम्भ हुआ। मैं और मेरे साथीकी काची छोटी थी, क्योंकि हम दोनो इस खेलमें कच्चे थे—उछल-कूदमें उतने प्रवीण नहीं। पर दो चार बार उछलते ही यानी शरीर गरमाते ही हम स्कूली लड़कोंकी तरह मजेसे खेलने लगे। मास्टर, हज्जाम, कप्तान, मनेजर और चित्रकार, सभी स्कूली लड़कोंकी तरह खेल रहे थे। यह खेल खेलना कोई आसान काम नहीं; खेलते खेलते तबीयत गरमा जाती है।

नवाब कुछ देरतक यह तमाशा देखते रहे, फिर उनसे रहा न गया—वह भी शामिल हो गये। नवाबका शरीर दुबला था; वह मजबूत भी नहीं थे। उनके पास ही मैं खड़ा था; उनके कहते ही मैंने उनकी छातीकी ओर अपनी पीठ फेर दी। अङ्ग-रेजोमें इस खेल दारगा कहते हैं। वह मेरी पीठपर चढ़ गये। वह पतले दुबले थे और अच्छे सवार थे; इसीलिये आसानीके साथ नियमके अनुसार चढ़ गये। फिर उन्होंने मेरी ओर पीठ की। मैंने सोचा, कि अगर चढ़ता हूं, तब तो हुजूर खूशामदी ही होते है और अगर नहीं चढ़ता, तो अपराधी बनता हूं।

क्या करूं? सोच समझकर मैं उनकी पीठपर सवार हो गया, छलांग मार फिर पीठपर जा गिरा। बस नवाबकी पीठ झुकी—वह गिर पड़े और साथ साथ मैं भी उसी दशाको प्राप्त हुआ। वह उठ खड़े हुए; उनके चेहरेसे मालूम होता था, कि वह नाराज हुए है। उन्होंने कहा,—"या अल्लाह! तुम बहुत भारी हो, आदमी हो या हाथी?" मैं डर गया, सोचा, नवाब नाराज हैं। पर वह नाराज नहीं हुए।

हज्जाम बड़ा चालाक था; वह चट आ गया, और नवाबके लिये खड़ा हो गया। नवाब बड़ी खुशीसे उसकी पीठपर सवार हुए। हमलोगोंमें जो सबसे पतला दुबला और हलका था, उसके लिये नवाब खड़े हुए, इसबार वह गिरे नहीं। इसतरह बहुत देरतक खेल होता रहा। अन्तमें नवाब थक गये। उन्होंने जब बरफदार लाल शराब पी ली, तब फिर खेल आरम्भ हुआ। इसकी आवृत्ति बार बार होती रही।

पाठक! धीरज धरिये। बरफके खेलका हाल भी लिखे देते हैं। घबराइये नहीं।

इन्हीं बड़े दिनोंमें एक रोज हमलोग बागमें टहलते हुए बातचीत कर रहे थे। बड़े दिन थे; इसलिये बड़े दिनके खेल-कूदकी बात छिड़ी; खेलकूदपर बात करते करते शीतकी बात निकली; शीतके बाद बरफ और बरफके बाद बरफके खेलकी बात छिड़ी। हमलोगोंने इस खेलकी बाहरी-भीतरी सभी बातें नवाबसे कह दीं। वहां भला बरफ कहांसे आती? नवाबने बागके फूलो हीसे खेलना आरम्भ किया। सबसे पहले उन्होंने मनेजरको एक फूल फेंक मारा। अङ्गरेज मुसाहिब भी नवा-

बका अनुकरणकर बागके फूल बरबाद करने लगे। सभी एक दूसरेको फूलोंका निशाना बनाने लगे। नवाब इस खेलसे ऐसे खुश हुए, कि उन्हें अपनी जरा भी सुध न रही; बस तोड़ फूल और लगा निशाना। इसतरह जब बागमें फूल ही न रहा, तब खेल बन्द हुआ। हमलोगोंकी देह फूलोंकी पंखड़ियोंसे बड़ी शोभा पा रही थी। देहपर ऐसी जगह नहीं, जहां पंख- ड़ियां न हों। नवाबकी टोपीपर रह पंखड़ियोंने नवाबकी सुखश्री ही बदल दी। अबसे नवाब प्रायः इस खेलको खेलने लगे। इसकी किसे खबर, कि फूलोंकी बरबादी देख माली मन ही मन क्या कहते होंगे।

तृतीय परिच्छेद।

आखेट-यात्रा।

एक दिन जब हमलोग नवाबके साथ खाना खा रहे थे, तब शिकारकी चर्चा चली। हमलोगोंसे यानी दरबारियोंसे किसीने कहा,—यहांसे कुछ दूर एक भील है; भीलका प्रान्त भाग बहुत ही रमणीय और आखेटके उपयुक्त है। इस समय नवा- बका मिजाज ठीक था, वह खुश थे। उन्होंने कहा,—"हां मैंने भी उस भीलके बारेमे बहुत कुछ सुना है; चलें और वहां शिकारबाजी करें। आप लोगोंमें कोई अच्छा शिकारी है?" हमलोग चाहते ही थे, कि शिकारका मजा चखें। बस नवाबके

कहनेके अनुसार निश्चय हुआ, कि दूसरे दिन उस झीलके पास-वाले एक महलमें सब लोग आ मिलें।

इस महलका नाम है, दिलखुश। यह शहरसे कुछ हो मील दूर है। दूसरे दिन हमलोग निर्द्दिष्ट स्थानकी ओर चले; शहर पास ही रहनेकी वजह हमलोगोंने अपने साथ कोई विशेष सामान नहीं लिया; क्योंकि रातको वहां टिकनेकी बात नहीं थी। जब हमलोग महलके नजदीक गये, तब देखा, कि नवाब अपनी सहेलियोंके साथ पहले होसे आ गये हैं। हमलोगोंने सोचा था, कि नवाब उठेंगे और शीघ्र ही झीलकी ओर जायेंगे। पर नवाबने कुछ कहा न कोई संदेसा ही भेजा। हमलोग बड़े अचम्भेमें पड़े। इतनी देर क्यों? सूर्य्यास्तका समय निकट आ रहा था, हमलोगोंने निजकी मनमौजके लिये बिलि-यर्ड खेलना आरम्भ कर दिया।

रात ठीक नौ बजे खाना खानेके लिये बावरची बुलाने आया। हमलोग भोजन-गृहमें पहुंचे; देखा, नवाब साहब अपनी आदतके अनुसार पहले होसे ठसाठस भोजन करने लग गये थे, खासकर शराब, जामपर जाम चढ़ा रहे थे। किसीने उन शिकारका जिक्र नहीं किया। नवाब भी कुछ नहीं बोले। सब भूखे और शराबके प्यासे थे। खाना खाने लगे, शराब पीने ल और मामूली दस्तूरके अनुसार नाच-तमाशेका मजा लूटने लगे इसीमें आधी रात बीत गई।

नवाब साहबको मदिराने बेहोश कर दिया। हमलोगो देखा, कि अब आप यहां न ठहर जनानखाने पहुंचा दि जायेंगे। परन्तु हमारी किस्मत समझिये; नवाब साहब खिल

खिलाकर हंस पड़े। इस एकाएक हंस पड़नेका कोई कारण समझमें न आया। बड़े हैरान हुए। नवाब साहब बोले,—"यहां अगर मैं अकेला ही पड़ा रहूं, तो कोई हर्ज नहीं। यह बड़ी वाहियात जगह है।" फिर हज्जामकी ओर मुड़कर कहा, "तुम और यह दोनो अपने अपने घर चले जाओ। तुम्हारी शादी हुई है। मैं नहीं चाहता, कि तुम अपनी बीबियोंसे अलग रहो। तुम दोनो जाओ, और बाकी सब यहीं रहेंगे।"

जब कभी हमलोग नवाबके साथ लखनऊसे कहीं बाहर जाते, तब अपने साथ अपना बिस्तरा नौकर-चाकर, युनिफार्म कपड़े और अन्यान्य आवश्यक चीजें ले लेते थे। जहां रोज रोज मोजेसे ले हैटतक हर तरहके साफ और सुथरे कपड़े शरीरपर लादने पड़ते हैं, वहां भला एक दरी ले सफर कैसे हो?

खैर; नवाबके मनकी मौज थी; हमलोग उसका मजा चखते थे। नवाबने कहा,—"कल शिकार होगा।"

थोड़ी ही देरमें नवाब अपने महल पहुंचे। इधर हमारे मित्र विदा हुए; उनमें एकने मुझसे वादा किया,—"मैं तुम्हारे मकान जा तुम्हारी पालकी भिजवा देता हूं। कपड़े भी तुम्हारे नौकरके हाथ भेज दूंगा।" मैंने कई बार पालकीमें भी सारी रात बिताई थी।

जब नवाब अपने जनानखाने जाने लगे, तब उन्होंने अपनी बात हंसते हंसते हंसीमें काट दी। हमलोग भी हंसने लगे; क्योंकि दरबारका यही कायदा था। नवाबने कहा था,—"आपलोग नर्तकियोंको खूब नचायें और खब मजे लूटें। नाचो गाओ और मौज करो।"

अब बड़ा विचित्र दृश्य उपस्थित हुआ। हमारे मित्र चले गये; रोशनी जगमगा रही थी, नवाबकी लौंडियां नहीं, दरबारके नौकर-चाकर—कोई नहीं। पर नर्तकियां अभी मौजूद थीं—नाच और गाना अभी बना था। परन्तु जब देखा, कि नाच या गाना नवाबको सुनाई नहीं देता है, तब उन्हें भी छुट्टी दिला दी। हमलोग नशेमें चूर वहां बैठे थे। हमलोगोंको कोई बड़ी कठिनाई उठाना पड़ती नहीं थी, क्योंकि उस आली-शान कमरेमें बैठ चाहे जिस वस्तुका भोग करने और अच्छीसे अच्छी शराब पीनेमें कोई बाधा नहीं थी। फिर भी, मन बेचैन था; उस बेचैनीका हाल शब्दोंसे मालूम करना असम्भव है। कमरेकी चारो ओर हमलोग देख रहे थे—कमरेकी लम्बाई अनुमान ५० फुट होगी। हमलोगोंकी शब्दध्वनि श्वासोच्छासका अनुगमन कर रही थी—बोलीकी आवाज दमसे ऊपर उठती नहीं थी। और शराब? शराब भी हमलोग इतनी पी गये थे, कि सवेरेकी कोई बात हमलोगोंको याद नहीं थी। हमलोग बैठे थे; थोड़ी देर बाद उठे, कमरेमें इधर उधर टहलने लगे। हमलोग हरेक जगह जा सकते थे—हरेक कमरेमें घुस सकते थे। हां, शयनागारमें जाना मना था। इस कमरेके बाहर ही अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित स्त्रियां पहरा दे रही थीं। महल सुन-सान बन गया था। एकाध जगह चटाईपर पड़ा कपड़ोंसे लदा सन्तरी नजर आता, जिसे उठानेकी हजार चेष्टा करनेपर भी कोई काम निकलता नहीं था। दो बजे; अभी हमारे नौकर नहीं आये—राह देखते देखते थक गये; आखिर हमलोगोंमें कोई आरामकुरसीपर, कोई पलङ्गपर जा लेटा और सभी नींद

और मच्छरके वश हो गये। पास ही मेजपर धरी मोमबत्तियां जल रही थीं; निद्रा देवीके भक्तोंके खर्राटोंकी आवाजके सिवा और कोई आवाज सुनाई देती नहीं थी। थोड़ी देर बाद बत्तरियोंने आ रोशनी बुझा दी।

अभी मुझे नींद आई नहीं थी, कि मेरी पालकी आ गई। मेरे साथियोंकी पालकियां भी आ गईं। बस, हमलोग शाही मसनद छोड़ अपनी अपनी पालकीमें जा आरामसे सो गये।

पहले दिनकी तरह दूसरा दिन भी बीत गया। नौकर बार बार आ कहता,--नवाब साहबने आपके मिजाजका हाल पूछा है। मतलब यह, कि हमलोग लौट न जायें। दिन बारह बजे नवाबके बालोंकी सफाई होती थी। हज्जाम सरफराज खां ही इस सफाईका बन्दोबस्त करते थे। हमलोग महलमें बैठे मौज कर रहे थे। महलकी कारीगरी देखते थे, सिगरेट पीते थे और बिलियर्ड खेलते थे।

झीलके आसपास खोज करनेपर जब सूअर या शेर आदि जानवर कहीं नजर न आये, तब हमलोगोंने और आगे बढ़ना निश्चय किया। यहां हरिनोंकी कमी नहीं थी। पहले हरिनका ही शिकार करना स्थिर हुआ। तीन तरहसे शिकार होनेवाला थे; एक बारहसिंगो द्वारा, दूसरा चीते द्वारा और तीसरा स्वयं हमलोग शिकार करनेवाले थे। नवाब पक्षी और बाजके शिकारसे बिलकुल उकता गये थे।

बाज और बगलेकी लड़ाईका एक ही तरीका सभी जगह है। परन्तु शिकारी बारहसिंगे जिसतरह अवधमें काममें लाये

जाते हैं, उसतरह शायद ही और कहीं काममें लाये जाते होंगे। यह खेल बड़ा ही मजादार है।

झीलके आसपास हरिन बहुत थे। उनपर शिकारी बारहसिङ्गे छोड़े गये। घनी झाड़ीमें झुकके हरिन अपने ही ढङ्गके खेल खेल रहे थे। उनमें जो तेजनिगाह थे, उन्होंने बारहसिङ्गोंको देख लिया। हरिनोंमें जो बहादुर थे, वह आगे बढ़ आये। न जाने किसलिये,—बारहसिङ्गोंकी अगवानी करने या उनसे झगड़ने। थोड़ी ही देरमें दोनो दल एक दूसरेसे ऐसे भिड़ गये, मानों दोनोमें जीवन-मरण-संग्राम होने लगा। हमलोगोंको देखते ही जो हरिन अबतक झाड़ीमें बैठे थे, वह सब भाग गये; परन्तु जो बारहसिङ्गोंसे सामना कर रहे थ, वह अपने स्थानसे एक पग भी नहीं हटे और बराबर लड़ते रहे।

थोड़ी देर बाद नवाबके कुछ हिन्दुस्थानी शिकारी लड़ाकोंके बिलकुल समीप चले गये। हम नहीं जानते थे, कि ऐसा करनेमे उनका उद्देश्य क्या था। वहां जा उन्होंने जो काम किया, वह देख मुझे उनसे अत्यन्त घृणा हुई। उनके हाथोंमे लम्बे खञ्जर थे। हरिन और बारहसिङ्गोंके बीच लड़ाई हो रही थी; बीचमे उन आदमियोंने दखल दिया, अपने खञ्जर निकाल हरिनोंपर कायरकी तरह वार किया; हरिन लड़ते लड़ते बेदम हो गये थे; चोटसे विकल हो जमीनपर गिर पड़े; फिर उठनेकी शक्ति उनमें न रही। उनके नीचे गिरनेपर बारहसिङ्गोंने उनपर फिर चढ़ाई नहीं की।

बारहसिङ्गे बुला लिये गये। उन्होंने अपने मालिकका

काम किया था, उनके बदनसे खून बह रहा था; उन्होंने लड़ाई लड़ी थी, खेल खेला नहीं था। आनन्दके मारे फूल गये थे। उनकी चालसे बहादुरी टपकी पड़ती थी। एक ओर हरिन अपने पेट या पीठके बल असहाय पड़े थे। वह हमलोगोंकी ओर टकटकी लगाये देख रहे थे। उनमें उठनेतककी शक्ति नहीं थी—उत्साह नहीं था। उनका सारा उत्साह और दिलेरी उनकी आंखों भर थी। वह हमलोगोंको ऐसी निगाहोंसे देख रहे थे; मानो कह रहे थे,—तुम जीत गये सही, पर बेईमानीसे। नहीं, वह केवल बेईमानी ही नहीं थी, कसाईपन भी था। जब विलायतमें झुण्डके झुण्ड कुत्ते और घोड़ोंके साथ दलके दल मनुष्य एक असहाय खरगोशका पीछा करते हुए दिखाई देते हैं, तब मुझे बड़ा दुःख होता है। परन्तु उन दिलेर हरिनोंको असहाय अवस्थामें देखनेपर भी उन क्रूर नरपशुओंने उनका वध कर डाला, तब मैं क्रोधके मारे क्षणमात्रके लिये आपेसे बाहर हो गया। खरगोशपर मुझे उतनी दया कभी न आई थी, जितनी उन बड़ी बड़ी आंखोंवाले दिलेर हरिनोंको देखकर आई। वह पड़े पड़े हमें मलामत कर रहे थे। खरगोशको टुकड़े टुकड़े होते मैंने देखा; परन्तु इतना दुःख मुझे कभी न हुआ। मेरा हृदय व्याधके शिकारियोंसे कहीं अधिक कोमल था। उन दिलेर हरिनोंको मार डालनेके लिये नवाबने इशारा किया; उनका गर्दनपर वार हुआ; प्राण-पखेरू हवा हुए। अच्छा ही हुआ, असहाय अवस्थामें जीनेसे मरना ही अच्छा।

शिकारी बारहसिङ्गोंका ऐसा ही उपयोग हुआ करता था। मैंने यह भी सुना था, कि जब हरिनोंको मरवा डालनेके बदले

जीते जी पकड़वाना होता है, तब भी बारहसिङ्गे इसीतरह काम करते हैं। जब हरिन और बारहसिङ्गोंके बीच लड़ाई होने लगती है, तब वहां एक जाल ले पीछेसे दो आदमी पहुंचते हैं और अवसर देखकर जालमे बारहसिङ्गोंको फंसा लेते हैं। बारहसिङ्गा फंस जानेपर हरिन तुरन्त पकड़ा जाता है। जालमें बारहसिङ्गेको फंसानेके लिये जरा सावधानीसे काम लेना पड़ता है। अगर कहीं जाल डालते हुए जरा असावधानी हो गई, तो जाल डालनेवालेकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। जब हरिन और बारहसिङ्गा दोनो एक दूसरेसे सटे हुए लड़ते रहते है, तब बारहसिङ्गा फंस नहीं सकता। हरिनसे जरा अलग हो जानेपर ही जाल डाल दिया जाता है।

इसके बाद हरिनका शिकार करनेके लिये शिकारी चीता लाया गया। मामूली तेंदुएसे यह जानवर बहुत लम्बा चौड़ा और भयानक होता है। जब चीते खानेको न पा भूखसे व्याकुल होते हैं तब वह बस्तीमें बेधड़क घुस आते और पूरी खुराक ले अपने स्थान लौट जाते हैं। यह सीलोन यानी लङ्का द्वीपकी बात है। उत्तर-भारतके नगरोमें ऐसी वारदातें बहुत कम होती हैं।

शिकारके लिये पिंजरेसे चीतेको बाहर ले आना बड़ा कठिन काम है। उसका रखवाला उसे कुत्तेकी तरह चाहे जहां ले जा सकता है; परन्तु उसे बहुत ही सावधान रहना चाहिये। चीतेको नारियल सुंघा देनेसे उसकी सारी मस्ती ठण्डी हो जाती है। जब जब चीता उत्तेजना दिखाता है, तब तब उसे नारियल ही सुंघाया जाता है। चीतेका शिकार देखने लायक होता है। हरिन अपनी जान ले भागता है और चीता उसका पीछा करता

है। राहमें, झाड़ी, कांटे आदि जो कुछ मिले, सबको लांघता हुआ, वह हरिनके पीछे चलता है। हमलोग घोड़े पर सवार थे—शिकार देख रहे थे। हरिन और उसके पीछे पीछे चीता—फर्राटेके साथ कहींसे कहीं जा रहे थे, कभी कभी दोनों दृष्टिको आड़ हो जाते थे। नवाब साहब एक सुरक्षित स्थानसे यह शिकार देख रहे थे। हरिन भागता भागता थक गया और अन्तमें कराल कालरूप चीतेके मुखमें निपतित हुआ। नवाब साहब तमाशा देख बहुत खुश हुए।

चतुर्थ परिच्छेद।

शिकार खेल चुकनेपर हमलोग आगे बढ़े और मिश्री नामक ग्रामके समीप पहुंचे। यहां एक झील थी, जिसके किनारे-की मट्टी बिलकुल सफेद थी। किसी समय यह मट्टी वैज्ञानिकोंके लिये चर्चाकी एक चीज थी। मैं कोई वैज्ञानिक नहीं, इसलिये वही बातें कहूंगा, जिन्हें मैंने अपनी आंखों देखा है। झीलका पानी किसी कदर खारा था। हमलोग किनारे किनारे चल रहे थे। थोड़ी ही देरमें जमीनसे बालू उड़ने लगी। हमलोग बालूके तूफानमें घिर गये। गनीमत समझिये, कि हवा बहुत जोरसे चलती नहीं थी; नहीं तो हमारी आंखें ही जाती। यह बालू या चुना। हमलोगोंके मुंह, नाक, कान आदिमें भर गई। देखनेमें तो मुकनीका कण बहुत ही बारीक था, पर नाकमें

धुस बहुत ही परेशान करता था। यह बुकनी या बालू मामूली बालू नहीं थी—शोरेकी बुकनी थी। घोड़े भी इस शोरेके तूफानसे बहुत हैरान थे। उनके नथसे पानी बह रहा था। वह भीलकी ओर जाना चाहते थे; परन्तु भीलका पानी उनके पीने योग्य नहीं था। हमारे शिकारके अन्तिम खेलका ऐसा ही आरम्भ था।

जबसे यह सुना, कि भीलके पासवाले जङ्गलमें बहुतेरे जङ्गली पच्छी हैं, तबसे हमलोगोंके हाथ निशानावाजीके लिये खुजला रहे थे। हमलोग ठहरे हुए थे; नवाब भी यही चाहते थे। शिकारकी चर्चा भी नही थी। रातको जब खाना खाने बैठे, तब नवाबने कहा,—"उस वनमें शिकारके लिये कल जरूर जाना होगा।" यथासमय हमलोग अपनी अपनी पालकीमें जा लेटे —नौकरोंको शिकारके कपड़े लानेके लिये भेज दिया। जब देखा, कि नवाब यहां कुछ रोज रहना चाहते हैं—इसी कमाली महल या भीलके पास बने खीमेमे रहेंगे—तब मैंने अपना बिस्तर और सब जरूरी चीजें मंगा लीं। बादको अगर कोई आफत आये, तो ऐसे समयमें डटकर सामना करनेके लिये पहले होसे सब तय्यारियां कर लेना मैं अच्छा समझा। नवाबके सन्तरियोंसे खबर मिली, कि नवाब यहां एक नई इमारत बनवाना चाहते हैं। यह भी बच्चोंका एक खेल था।

मैंने हफ्ताहभर काम देने लायक सब सामग्री अपने पास जमा कर ली। एक सप्ताह बाद हमलोग भीलकी ओर रवाना हुए। नवाबने कह दिया था, कि हमलोग भील देखने आप ही जायेंगे, पहले कोई न जाये। भीलकी ओर जानेके

लिये बड़ी बड़ी तय्यारियां हुईं और हमलोग रवाना हुए। कुछ देर राह चलनेके बाद ढालुआ जमीन मिलने लगी। यहांसे झील दिखाई देती नहीं थी। उतरते उतरते हमलोग झीलके पास पहुंच गये। सूर्य्यास्तका समय था। सूर्यदेवकी सुनहरी किरनें झीलके शुभ्र जलतलपर प्रतिबिम्बित हो बड़ा ही मनोहर दृश्य आंखोंके सामने उपस्थित करती थीं।

झीलकी लम्बाई अनुमान दो मील और चौड़ाई एक मील होगी। झीलके किनारे किनारे घनी झाड़ी थी; कहीं कहीं झाड़ीने झीलके जलको ढाक भी लिया था। किनारेका वह हिस्सा बिलकुल साफ था, जहां नवाब साहबका खीमा था। हम-लोगोंने भी अपने अपने खीमे वहीं गड़वा दिये। नवाबका खीमा नवाबी ढङ्गका था; उसपर लाल रङ्गकी धारियां और तिकोने हरे झण्डे बड़ी शोभा दिखा रहे थे। नवाबके खीमेकी बगलमें ही नवाबके रङ्गमहलकी महिलाओं, लौंडियों और खानासराओंका डेरा था। हमलोग शिकार खेलने आये थे। रेसिडएट साहब भी इस अवसरपर पधारनेवाले थे। अतः उनकी खातिरके लिये नवाबने अपने खीमेके दाहने एक उमदा खीमा गड़वा दिया था; वजीर, सेनापति, पुलिस-अफसर और अन्यान्य अफसरोंके लिये जुदा जुदा खीमे थे। बारबरदारीके पशुओंकी भी कमी नहीं थी; हाथी, घोड़ा, ऊंट, खच्चर, पालकी, इत्यादि इत्यादि सभी थे।

नवाब हमलोगोंको चकित करना चाहते थे और उन्होंने चकित किया भी। हमलोगोंने उनकी तारीफ की; सुन-कर नवाब सन्तुष्ट हुए। वास्तवमें नवाबने इस समय जो मनोहर

दृश्य हमलोगोंके सामने उपस्थित किया था, उससे अधिक मनोहर दृश्यको कल्पनातक की जा नहीं सकती। हमलोगोने नवाबसे यह पूछना उचित नहीं समझा, कि इस फजूलखर्चीकी जरूरत क्या थी। हमलोगोंने यह भी न कहा, कि एक दिनकी जगह जरासी बातके लिये इतना समय क्यों वृथा गंवाया गया। यह बातें हमलोगोंके कहनेकी नहीं थीं। हमलोगोने अपना काम किया; झीलकी खूबसूरती बयान की, साजसरञ्जामकी तारीफें कीं और नवाबकी दिलदारीके लिये उनकी प्रशंसा की। वह सन्तुष्ट हुए और हमलोगोने मौज उड़ाई।

बेताज आदमीके साथ शिकार करना या खेल खेलना आसान होता है; किन्तु ताजदारके साथ नहीं। नवाब खुद शिकार खेलेंगे, हमलोग चुपचाप बैठे रहेंगे। झीलके किनारे एक ओर कनातें लगा दी गईं। इन्हीं कनातोंकी आड़में रह नवाब शिकार खेलते थे। कनातके उस पार किनारे चावल छिटकाया जाता। चावलकी लालचमें सैकड़ों जङ्गली पक्षी वहां जमा हो जाते। उनके जमा हो जानेपर नवाबको खबर दी जाती और नवाब खीमेसे निकल एक अरदलीके साथ दबे पैर कनातकी ओर जाते नवाब अपने साथ बन्दूक ले नहीं आते थे, यह काम उनके अरदलीका था। कनातमें एक सूराख बना था, जिससे होकर बन्दूकके छर्रे पक्षियोंपर गिरते थे। पक्षी बेचारे चावलके दानेके लिये तरसते थे, उन्हें नवाब साहबकी क्या खबर। वह आपसमें लड़ते और चावल चुगते रहते, ऐसे समय स्वयं नवाबकी बन्दूक दगती, कितने ही पक्षी लोट जाते, यही नवाबका शिकार था। कभी कभी नवाबका निशाना खाली जाता

था। वह अच्छे गुलचले नहीं थे। निशाना चूकनेपर या बन्दूककी आवाज होते ही पक्षी खूब जोरसे शोर करते उड़ जाते। जो पक्षी आहत हो जलमें गिर जाते, उनको खोजमें नवाबके नौकर फौरन दौड़ जाते। नवाबके हाथों जितने पक्षी मरते थे, उनसे दूने मरे या जखमी पक्षियोंका छोटासा ढेर उन संसारके आश्रय-स्थान या 'जहांपनाह'के सामने लगाया जाता था। नवाब इसीमें खुश थे। पाठक! क्या सोच रहे हैं? पक्षियोंका ढेर! नवाबकी बन्दूकसे जितने पक्षी गिरते नहीं थे, उससे दूने पक्षी कहांसे, कैसे आ सकते थे? जी हां; आ सकते थे; अन्ततः दुगुने तो जरूर ही आ सकते हैं। हम तो यह कहते हैं, कि अगर एक भी पक्षी न गिरे, तो भी ढरके ढेर पक्षी नवाबके सामने उपस्थित किये जा सकते थे। सभी चाहते थे, कि नवाब खुश रहें। इसलिये शिकारसे पहले ही आसपासके शहरोंसे पक्षी ला रख दिये जाते थे। नवाबके निशाना मार चुकनेपर जब नौकर जलमें पक्षी निकालनेके लिये उतरते, तभी उनके कपड़ोंमे छिपे पक्षी जलके भीतर ही भीतर पैदा होते थे। बाहर आ नौकर पक्षियोका ढेर लगा देते, कौन कह सकता था, कि यह पक्षी नवाबके शिकारके नहीं? मैं भी क्यों कहने लगा? मुझे नवाब हजार रुपये माहवार तनखाह देते थे।

चार पांच दिन इसीतरह शिकार होता रहा। अन्तिम दिन रेसिडण्ट आये। अब नवाबका शिकार बन्द हुआ। रेसिडण्टके मित्र और हमलोगोंने शिकार किया; नावमें रह हमलोग शिकार करते थे। सिखाये बाज मंगाये गये और

उनके द्वारा शिकार हुआ। यह शिकार देखने लायक होता है।

नित्य नया तमाशा देख सभी आनन्दित हो रहे थे, परन्तु नवाबका मिजाज अब अच्छा न रहा। जबसे रेसिडराट आये और शिकारियोंकी धूम मची तबसे शिकार करनेमें नवाब पीछे ही रह जाते थे। उन्हें अपनी यह दशा अच्छी लगती नहीं थी; इसीसे उनका मिजाज बिगड़ा। नवाबका चेहरा उदास देख देखनेवाले भी उदास होते थे। इसीलिये हमलोगोंने उन्हें यहांसे और किसी स्थानकी ओर चलनेका परामर्श दिया। इस प्रकृतिसौन्दर्य्यको पीछे छोड़ प्रस्थान करनेमें दु:ख अवश्य ही हुआ। सन्ध्या समय जब सूर्य्यदेव अस्ताचलकी ओर प्रस्थान करते हैं, तब उस मनोहर स्थानकी शोभा और भी बढ़ती है। रक्तिम रविकिरण जब उस झीलकी शुभ्र उर्म्मिमालापर प्रतिबिम्बित हो सुवर्ण-रेखाओंका मनोहर दृश्य उपस्थित करती है और साथ ही किनारेपर भक्तिपूर्ण हृदयसे मुसलमान भक्तगण नमाज पढ़ने लगते हैं, तब वहां सभी ओर भक्तिकी छटा दिखाई देने लगती है। हाथी झीलके किनारे मानो मुग्ध हो खड़े रहते हैं। एक ओरसे ऊंटके दाना चबानेकी आवाज आती है। चारो ओर शान्ति देवीका राज्य फैल जाता है।

ऐसे सुन्दर स्थानसे निकल जनाकीर्ण शहरमें कौन जाये? रेसिडराटके आनेसे पहले नवाबने जो पराक्रम दिखाया था, उससे वह इतने खुश थे कि उन्होंने अब इससे भी भयङ्कर शिकारके लिये कमर कसी।

नवाबने कहा,—"लखनऊ लौटनेसे पहले हमलोग हरिन,

सूअर, और शेरका शिकार खेलेंगे।" नवाब इस समय बड़े जोशमें थे।

डेराडण्डा उठा हमलोग उत्तरकी ओर बढ़े। इसी ओर जङ्गली सूअर आदि बड़े बड़े जानवारोंकी मांदें थीं। हमलोग अकेले नहीं थे, नवाब थे और उनके नौकरचाकर। साथमें बड़ी भीड़ थी; इसलिये राह जल्द जल्द तय होती नहीं थी। हमलोगोंने अपने साथ कई शिकारी चारह सङ्गोंको ले लिया था। हमलोगोंको बाजके शिकारका भी शौक था; इसलिये कई बाज भी साथ ले लिये थे; नवाब हिरनका शिकार करनेवाले थे; इसलिये कई शिकारी तेंदुए गाड़ीमें साथ थे। हमलोगोंके साथ इतना ही असबाब नहीं था; और भी था—नवाबके जनानखानेकी स्त्रियां, लौंडियां, नर्तकियां और इनके नौकर-चाकर सब दलके दल एकके पीछे एक चल रहे। सिवा इसके खाने और तरह तरहका साजसरञ्जाम, ऊंट, हाथी, घोड़े आदि चौपायोंकी भी भरमार थी। मालूम होता था, कि एक बड़ी भारी फौज चली आ रही है।

जो जो गांव हमारी राहमें आते, वहींके लोग यह सामान देख भयभीत हो जाते थे। उस समय हम जिस राहसे चले जा रहे थे, वह राह नवाब या उनकी फौजने कभी देखी नहीं थी। पूर्वीय देशोंकी प्रथा है, कि राजा कभी अपने देशमें दौरेके लिये नहीं निकलते; जब निकलते हैं, तब लोग डर जाते हैं। राजाके नौकरचाकर अपनेको एक विशेष जातिके समझते हैं। वह समझते हैं, कि हम जो करेंगे, वही कायदा है। उनको यह दृढ़ धारणा रहती है, कि हमको कोई दण्ड देनेवाला नहीं।

इसीलिये राहचलते नवाबके नौकरचाकर साधारण लोगोंपर मन-माना अत्याचार करनेमें कोई कसर करते नहीं थे। और सुनिये, गांववाले नवाबका हर तरहका काम करनेपर बाध्य किये जाते थे; राहमें किसी तरहकी बाधा पड़ी तो उसे गांववाले दूर करें, राह साफ करना हुआ, तो गांववाले औजार ले आयें; राह काटना हुआ, तो गांववाले पहुंचे; यही नहीं, अगर कोई ग्राम-वासी इसतरहका काम करनेसे नाराजी प्रकट करता, तो वह जबरदस्ती घसीट लाया जाता था। बूढ़े, बच्चे, जवान, पुरुष, स्त्री, लड़की सभी नवाबके नौकर। और उन्हें मिहनताना क्या मिलता था? खूब मिहनतके लिये तो नहीं, पर जरा कसर होते ही गालीगलोज, मारपीट आरम्भ होती थी; गांववालोंके लिये यही मिहनताना था; यही इनाम। नवाब चाहें जो और चाहें जिनसे काम करा सकते थे। इङ्गलण्डके लोग शायद ऐसी दूरवस्था सम्भवपर समझते न होंगे। किन्तु जो लोग भारतके प्रदेश प्रदेशमें घूमफिर चुके है, वह यह बातें अपनी आंखों देख चुके हैं।

इसीतरह राह तय करते करते हम एक एक दूसरी ही झीलके किनारे पहुंचे। वह झील पहला झीलसे ४० या ५० मील दूर है। इसका विस्तार पहली झीलसे दूना है। झील घने जङ्गलके बीच है। झीलके आसपास पहाड़ियां और बड़ बड़े जङ्गली वृक्ष हैं। बीचबीचमें कहीं कहीं खेत दिखाई देते थे। कितने ही मील दूरतक राह थी न पगडण्डी ही। नवाबके हुक्मसे नई राह तय्यार की गई थी। अनाजके खेत बरबादकर यह राह बनाई गई थी; क्योंकि नवाब और उनकी

फौजकी सुविधा पहले सोच फिर किसानोंकी क्षतिवृद्धिकी बातका विचार किया जाता था।

झीलसे कुछ दूर खोमे गड़े। पहलेकी तरह अब भी वैसी ही व्यवस्था की गई। यहां रेसिडराट और उनके सङ्गीसाथी नहीं थे। पहलेकी तरह नवाब शिकार करने चले; परन्तु झीलके कीनारेके दलदलके कारण नवाब बड़ी असुविधामें पड़े। आसपास खूब बगुले थे; उनपर बाज छोड़े गये। बहुत दिनोंतक हमलोग तमाशा देखते रहे। सिवा नवाबके हमलोगोंमें किसीने भी ऐसा शिकार देखा नहीं था। बाज और बगुलेके बीच इसतरह लड़ाई होती थी, कि देखनेवालोंकी टकटकी लग जाती थी। जिसने यह तमाशा देखा, वह उसे कभी भूल नहीं सकता।

हमलोग नावमें बैठ बाज ऊपरको छोड़ते थे। बाज ऊपर उड़ जाते और गोल पंक्ति बांध उड़ते रहते थे। बहुत ऊपर जाते नहीं थे। झंकोरे लेते हुए पक्षियोंका शिकार करते थे। देखते देखते सैकड़ो शिकार जलमें आ गिरते थे। व्यूह बांध जब बाज पक्षियोंको घेर लेते हैं, तब बड़ा ही मजा आता है। पक्षी भाग जानेकी चेष्टा करते थे और बाज उन्हें रोकते थे। भाग जानेकी चेष्टा विफल हो जब सब पक्षी एकत्र हो अपनी गतिविधिसे कायरताका भाव प्रकट करते थे और बाज उनसे छेड़ करते थे, तब कुछ विचित्र ही दृश्य उपस्थित होता था।

नवाबके खीमेमें हमलोग खाना खाया करते थे। शिकारके बाद ही नवाब हमें बुलवा लेते थे। लखनऊकी तरह यहां भी

खानेपीनेके कोई असुविधा नहीं थी। सभी चीजें मौजूद रहती थीं—किसी बातकी कमी नहीं। शराब तो सबसे ज्यादा थी; यहांतक कि उसके नशेमें चूर हो जब खाना खाने बैठते, तब एकसे एक बढ़िया चीजोंकी लज्जत लेनेका भी ज्ञान न रहता। यह मालूम नहीं होता था, कि हमलोग किसी घने जङ्गलके बीच एक झीलके किनारे बैठे थे, सच पूछिये तो हम जङ्गलमें ही थे, पर नवाबका लखनवी रङ्गमहल इसी जङ्गलमें वह मजे और मस्ती फैला रहा था, कि एक पल भी जङ्गलकी चिन्ता करनेका अवसर मिलता नहीं था। नाच-तमाशेमें यहां भी आरामसे दिन काटते थे।

सन्ध्या समय नित्यकी तरह हमलोग खाना खा नवाबके खीमेमें एकत्र हुए। नवाब शरीरको वर्षाके कारण बहुत व्यथित हुए थे। अभी उनकी व्यथा बनी थी। उनका मिजाज खराब और दमाग परेशान था। हमलोग जब खीमें पहुंचे, तब नवाबने नित्यकी तरह हमलोगोंकी खातिर नहीं की। हज्जामकी हंसीमजाकने भी कोई काम नहीं दिया। अच्छे अच्छे भांड़ मौजूद थे, पर उनके भी किये नवाबका मिजाज दुरुस्त नहीं हुआ। नर्त्तकियोंने भी अपने करतब दिखाये, पर नवाबके हृदयमें आह्लाद उत्पन्न न हुआ। बात यह थी, कि नवाबको इस वाहियात जगहकी पहलेसे खबर दी गई नहीं थी; इसीलिये नवाब चिढ़ गये थे। अगर पहले हीसे उन्हें सब हाल विदित कर दिया जाता, तो शायद वह न चिढ़ते। हमलोगोंमें एक वैज्ञानिक थे। उन्होंने नवाबसे कहा,—इस जमीनके भीतर किसी, कीमती चीजकी खानि हो सकती है। थोड़ी देरके लिये नवाबका मन आकृष्ट हुआ; परन्तु फिर

भूत सवार हुआ। आज नवाब जल्दी ही जनानखाने पहुंचे, हमलोग भी अपने अपने डेरेपर लौट आये। परमात्मा उस असहाय अबलाकी रक्षा करें, जो दुर्भाग्यवश बदमिजाज नवाबकी सेवा कर रही होगी। एकाएक यदि कोई छींक * दे या खखार दे या और किसी तरहकी हरकत करे, तो उसे वह सजा भी दी जा सकती है, जिसको विचारते ही कलेजा फटने लगता है। भारतके हिन्दूजनानखानोंमे यह नित्य ही हुआ करता है। यह बातें अङ्गरेज-मजिष्ट्रेटोंसे छिपी नहीं, पर वह कर ही क्या सकते हैं? जनानखाना बड़ी पाक चीज है; वहां कोई जा नहीं सकता। भीतर जो अमानुषिक कुकर्म होते हैं, उन्हें जनानखानेके नौकर, स्त्रियोंकी रक्षाके उद्देश्यसे भी क्यों न हो यदि किसीसे प्रकट करें, तो वही स्त्रियां उनकी जान लेनेपर तय्यार हो जायेंगी। धनी ऐसी अवस्थामें चाहें जैसा अत्याचार करते हैं; नवाब तो नवाब ही ठहरे, वह चाहें जिसे जिला सकते हैं और चाहें जिसे मार सकते है।

एक हिन्दू राजाकि एक अङ्गरेज मित्र थे। राजाने मित्रसे कहा,—"मेरी स्त्री अब शीघ्र ही जीवन समाप्त करेगी। यदि उससे मेरे लड़का पैदा न होगा, तो मैं उसे कोड़ोंसे मार डालूंगा।" राजपत्नी गर्भवती थीं; लड़का नहीं, लड़की पैदा हुई। स्त्रीका शरीर

---

* अवधके दरबारमें छींकनेवालेकी नाक काट ली जाती थी। प्रायः सभी पूर्व्वीय राज्योंमे ऐसे पाशविक अत्याचार हुआ करते हैं। लेखक।

दो दिन बाद जला दिया गया। यह खबर सिवा जनानखाने व लोंके और कोई जानता नहीं था। बादको राजाके राजीनामे वाले झगड़ेमें उन्हीं अङ्गरेज मित्रने अदालतमे राजाको उ कसमकी याद दिलाई। अदालतने फैसला किया, कि राज पागल है।

अबतक साफ मौसम था, परन्तु अब प्रकृति देवीने उग्ररू धारण किया। नवाबके खीमेसे लौट हमलोग अपने अपने डेरें नींद लेनेकी तय्यारीमें ही थे, कि इतनेमें नींद उचट गई औ आंखें खुल गई। बिजलीकी कड़कड़ाहट और मूसलध वृष्टिकी भयङ्कर ध्वनिसे सभी एकाएक चौंक उठे। गर्म मुल्कों वृष्टिके समयका दृश्य कुछ अजीब होता है। दामिनीका दमक और उसी दम गुम हो जाना अजनबियोंके लिये एक नया दृश् है। एक बड़े खीमेमे हमलोग ५ आदमी थे। ऊपर इत जोरसे बादल गड़गड़ा रहे थे, मानो फटकर हमलोगोंपर आ गिरन ही चाहते थे। खीमेके सुराखसे हमलोग बाहर देखते थे, चार ओर अन्धकार था; परन्तु बीच बीचमें बिजलीकी टेढ़ी-बांकी चमकीली लकीर प्रकाश फैला देती थी।

बिजलीके प्रकाशमें हम बाहरी चीजोंको मजेसे देख सकत थे। परन्तु यह प्रकाश पल दो पलसे अधिक ठहरता न था; फिर घोर अन्धकार छा जाता था।

आधी रातका समय था। खीमेके बाहर हवा बड़े जोरसे चल रही थी; ऐसी भयङ्कर आवाज आ रही थी, मानों प्रेतात्मा चीख रहा है। खीमे नीचे ऊपर हो रहे थे; खीमेके खम्भे भी हिलते थे। सभी भयभीत हो गये थे। परन्तु

यह हमारी भूल थी। नौकर खीमेकी मरम्मत बराबर कर रहे थे। खीमा गिरा नहीं, ज्योंका त्यों बना रहा। खीमेके बाहर बड़ी खलबली पड़ी थी। घोड़े हिनहिना रहे थे, ऊंट बलबला रहे थे, हाथी चीख मार रहे थे और मनुष्योंने भी बड़ा शोर मचा रखा था। एकने कहा,—"कई जानवर छूट गये हैं।" तूफानका जबतक जोर था, तबतक बाहरी मनुष्योंकी बकबक कुछ भी सुनाई देती नहीं थी; परन्तु जब जोर घटा, तब सुनाई देने लगी। एकने कहा,—"सावधान। खीमेके रस्से में कहीं हाथी न आ जायें, नहीं तो खीमे गिर पड़ेंगे।"

हमलोगोंने नौकरोंको पहरा देनेके लिये कहा और फिर बिस्तरा बिछाया। थोड़ी ही देरमें नींद लग गई; फिर बाहरी शोरगुलने परेशान करना आरम्भ किया। मैंने अपने नौकरसे कहा,—बाहर जा देखो, कि क्या माजरा है? नौकरका नाम बखशू था।

बखशू बाहर गया। थोड़ी देरमें जहांपनाहकी ओरसे एक दूत आ पहुंचा। यह शरीर-रक्षकोंके कप्तानको बुलाने आया था। उसने कहा,—जहांपनाहकी आज्ञा है, कि आप फौरन हाजिर हो जायें। सबके सब जाग उठे—बड़े हैरान हुए। सोचा, कि कोई न कोई बड़ा काम आ पड़ा है, जिससे ऐसी तुफानी रातमें कप्तान बुलाये गये। नवाबके दूतको कोई खबर नहीं थी; उससे सिर्फ यही मालूम हुआ, कि नवाबके रङ्गमहलमें बड़ा शोरगुल मचा है और नवाबके एक खीमेको आग भी लग गई है। बस, सोचनेके लिये यही खबर काफी थी। कई तरहके तर्कवितर्क हुए, शायद नवाब रौशनुद्दौलहपर नाराज

हुए हों या जनानखानेमें कोई वारदात हुई हो; इसीतरह तर्कपरम्परा बढ़ती गई।

आज्ञानुसार कप्तान चले। कप्तानके जानेके बाद मेरा नौकर आया; उसने कहा, कि नवाबके महलमें बड़ी खलबली पड़ी है, न जाने क्या बात है। नौकरने यह भी कहा, कि मैंने जमादार और कई अफसरोंसे पूछा; पर उन्होंने कोई कारण न बता मुझे मार भगाया।

अभी वृष्टि रुकी नहीं थी—ऐसे समय हम नहीं चाहते थे, कि आरामसे खीमेमें लेटना छोड़ बाहर जा पूछताछ करें। लेटे लेटे ही विचारोंका सिलसिला चल रहा था, इतनेमें कप्तान लौट आये। आते ही उन्होंने कहा,—"महाशयगण। अपने अपने प्राण संभा लिये; अपना माल-असबाब बचाइये; हम जाते हैं।"

"जाते हैं! कहां?—कौन?" हम सबने एक ही सांसमें पूछा।

कप्तान। आध घण्टेके भीतर नवाब साहब लखनऊकी ओर रवाना हो जायेंगे। मुझे साथ जाना होगा—सब फौज जायेगी; नवाबका जनानखाना भी साथ जायेगा। नवाबका मिजाज बिलकुल ठिकाने नहीं है। लखनऊ जानेके लिये उतावले हो रहे हैं। अपना माल-असबाब बचाये रहो, नहीं तो गांववाले आ लूट ले जायेंगे।" कप्तान योंही बकते गये और साथ साथ नौकरोंसे अपना असबाब भी बंधवाते गये। मैंने कप्तानसे पूछा,—"क्या सचमुच ही हमारा माल-असबाब लूट लिया जायेगा?" कप्तानने शान्त भावसे उत्तर दिया,-यदि आप लोगोंमे उसकी रक्षा करनेकी हिम्मत हो, तो भला कौन लूट ले सकता है? परन्तु

जब उन बेचारे गांववालोंको उन्हें लूटने और सतानेवाले उन नवाबके चल देनेका समाचार मालूम हो जायेगा, तब वह निश्चय ही खीमेमें घुस पड़ेंगे। कई बार ऐसी वारदातें हुई हैं।"

हमलोग नवाबके साथ जा नहीं सकते थे,—हमलोगोंके साथ नौकर बहुत कम थे। नवाबकी आज्ञा थी, कि हमलोग उनके साथ लौट जायें। युरोपकी किसी साफ सुथरी राहसे चलना कोई कठिन बात नहीं; पर अवधकी उन देहाती सड़कोंपर चलना और ५० मील तय कर जाना कोई आसान बात नहीं थी। हमलोगोंके पास एक हाथी और कुछ घोड़े थे सही; पर दिनमें बिना पालकियों और गाड़ियोंके कैसे काम चलता? पालकी उठानेवाले कहार ही वहां थे। हमारे साथ बहुतसा मालअसबाब था। उसे कौन ढो ले जाता? यदि छोड़ जाते, तो गांववालोंकी बात जाने दीजिये, नवाबके नौकर ही उसे लूट लेते। वह रात ऐसे ही तर्कवितर्कमें बीत गई।

नवाब चले—घोड़ोंकी हिनहिनाहट, पालकीवाहकोंके गीत और हाथियोंके चलनेकी 'फद फद' आवाज बहुत देरतक सुनाई देती थी। नवाब बहुत दूर चले गये—सन्नाटा छा गया। नवाबकी इच्छा कुछ विचित्र होती थी; कोई बात उनके दिलमें आनेसे वह उसे तुरन्त ही कर छोड़ते थे।

खीमेके बाहर अन्धेरा था। भीतर रोशनी थी—खीमेके मध्यभागमें एक मेज था; मेजपर चिराग था; चिराग टिमटिमा रहा था। हम चार आदमी थे—चारपाई-खटियेपर तानकर लेट गये। माल और जानकी रक्षाके लिये यह प्रबन्ध किया गया, कि हम चारों बारीबारी सोयें, सबेरेतक रात ही बितानेका

निश्चय हुआ। मेजपर एक खञ्जर और दो भरे तपञ्चे रख दिये गये। सबसे पहले अ ट्रयन सरविसके एक अनुभवप्राप्त भूतपूर्व अफसर जागने बैठ गये। आप चिरागवाले मेजसे सटकर एक कुरसीपर विराजमान हो सिगार पीने लगे। नौकर-चाकर थे पर विश्वासपात्र नहीं; इसके अलावा, वह गांववालोंसे बहुत डरते थे। एक दिन पहले ही जिन्होंने गांववालोंको मनमाना सताया था, उनको आज यह शोचनीय दशा देख आश्चर्य होता था।

खीमेके दो दरवाजे थे; हमारे फौजी अफसर इस ढङ्गसे बैठे थे, कि उनकी निगाह उन दोनों दरवाजोंपर पड़ती थी। मुझे नींद आ रही थी—पलकें झपक रही थीं, ऐसी अवस्थामें मैंने उन अफसरको मेज तले पैर फैलाये दोनों बांहें पायजामेकी जेबमें डाले और ऊंघते हुए देखा।

बांए दरवाजेके पास ही मेरी आराम कुरसी थी। पास ही जमीनपर मेरा हिन्दुस्थानी नौकर लेटा था। उसने शिरसे पैरतक चादर ओढ़ ली थी—शिर या पैर दिखाई देता नहीं था। वह खर्राटे मार रहा था। मैं ऊंघ रहा था, फिर भी, मुझे पैरोंकी आहट सुनाई दी—सोचा, कोई मेरी बगल होमे दबे पैर चल रहा है। मैंने आंखें खोलीं—देखा एक मनुष्य पासके बकसपर रखी एक गठरी उठा रहा है। मैंने तुरन्त अपने साथियोंको जगाया। मैं अपनी आरामकुरसीसे नीचे उतर घुटनोंके बल बैठ गया। फौजी प्रहरीने तपञ्चा उठाया। मैंने अपना खञ्जर हाथमे ले लिया, परन्तु इतने होमें मेरी आरामकुरसीके नीचेसे सांपकी तरह वह चोर दरवाजेकी ओर लपक गया; सबकी सब चाव व्यर्थ

उठे; पूछताछ होने लगी। मेरी एक पालकी दरवाजेपर रखी थी; दरवाजा खुला था। चोर बन्दरकी तरह एक लपकमें पालकी लांघकर बाहर हुआ। मेरा एक नौकर मेरी पालकीमें सो रहा था; वह जाग उठा और चोरके पीछे हो लिया। फौजी पहरीने तमञ्चा चलाया। दो गोलियां चलीं; चोर और मेरे नौकरको जा लगीं। दोनों गिर पड़े; पर शीघ्र ही चोर उठा और हवा हुआ; नौकर नीचे कीचड़में लेट रहा।

सारी रात जागते ही बीत गई। गांववालोंको खबर लगी, कि नवाब अपने शरीररक्षकोंके साथ यहांसे चले गये। वह छावनीमें घुस आये। प्रकृतिने सन्नाटा फैला दिया था; पर मानवीय कण्ठसे इस सन्नाटेमे भी बड़ी ही कर्कश आवाज निकल रही थी। पुरुष चिल्ला रहे थे और स्त्रियां चीख मार रहीं थीं। नवाबकी स्त्रियोंकी दासियोंमे जो गरीब थीं, वह नवाबके साथ जा न सकीं। गांववाले अब उन्हें अपने इच्छानुसार सता रहे थे। नवाबके खीमे उठा दिये गये—कुछ आग भी लगा दी गई। स्त्रियोंके हाथ और पैरोंसे जर-जवाहिर छीन लिये गये, सन्दूक तोड़ दिये गये और उससे कपड़े-लत्ते निकाल लिये गये। हमलोग अपनी ही सोच रहे थे, क्योंकि ऐसा ही मनुष्योंका स्वभाव है। नवाबकी छावनीकी रक्षा नवाब हीको करना चाहिये थी। हमलोग जानते थे, कि हमारे खीमेपर भी चढ़ाई होगी; इसलिये पहले हीसे तय्यार बैठे थे—किसीने बन्दूक, किसीने खञ्जर और किसीने तमञ्चा हाथमें ले लिया और सभी गांववालोंसे सामना करनेके लिये बद्धपरिकर हो गये। लुटेरोंके जासूसने हमलोगोंका हाल जान लिया; हमने सोचा, कि यह तय्यारी देख

? यदि वह न आयंगे। तब बाहर जा स्त्रियोकी ही रक्षा क्यो न की ? पाठक! ऐसा प्रश्न करनेसे पहले जरा जोशको ताकपर धर हमारी अवस्थाका हाल भी सुन लीजिये। वह स्त्रियां विशेषत: नर्त्तकियां या गरीब लौंडियां ही थीं। यदि हम उनके खीमेमें जाते, तो वही स्त्रियां लखनऊ पहुंचनेपर हमलोगोपर अभियोग चलातीं। इसतरहका अभियोग चलनेपर नवाब और रेसिडण्ट हमलोगोपर टूट पड़ते और हमारी धन-दौलत छीन ली जाती—हमारी आशायें मट्टीमे मिल जातीं। यह एक बात हुई। दूसरी बात यह, कि हमारे खीमेकी रक्षा कौन करता ?

हमलोगोके घोड़े बाहर—खीमेकी चारो ओर—खूंटोंसे बंधे थे। साईस खीमेके भीतर थे; साईसोंके हाथ घोड़ोंके रस्से बंधे थे। यदि बाहर चोर आ घोड़ोको ले जाना चाहते, तो घोड़े के साईस उठ खड़े हो जाते।

ऐसी अवस्थामे हमलोग सिगार पी रहे थे। सवेरा हुआ; हमलोग खीमेके बाहर आये। देखा, नवाबका आलीशान खीमा धरतीपर छिन्नभिन्न पड़ा है। सुना, कि बहुतेरे नौकर जखमी हुए हैं। रातको उन नौकरो और गांववालोके बीच भयानक मारपीट हुई।

हमलोग अपने खीमेकी ओर चले आये। बाहर ही हमारे नौकरों और नवाबके नौकरोंके बीच विवाद हो रहा था। हमने पूछा,—क्या माजरा है ? किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया। पहले तो गालीगलोज हुई; फिर लट चलाये जाने लगे। यदि हमलोगोंके लौटनेमे देर होती, तो कल रातकी तरह आज दिनको भी मारपीट हो जाती।

भीड़के एक आदमीने कहा,—"जिनमें कुछ भी मनुष्यत्व हो वह नवाबकी आज्ञा पालन करे।"

हमारे नौकरोंसे एकने कहा,—"बदचलन माके यह बदचलन सन्तान हमलोगोंको काम छोड़ अन्यत्र भेजनेके लिये ले जाना चाहते हैं।"

दोनों ओरसे मुंहजोरी आरम्भ हुई। हिन्दुस्थानमें जब कोई दो आदमी परस्पर विवाद करते हैं, तब परस्परको डराने और अपना पक्ष समर्थन करनेके लिये गला फाड़कर चिल्लाते हैं।

पूछताछ करनेपर मालूम हुआ कि नवाबके नौकर नवाबके आज्ञानुसार हमारे नौकरोंको नवाबका सामान ढो ले जानेमें मदद देनेके लिये ले जाना चाहते हैं। परन्तु यह सरासर अन्याय था और इस अन्याय आज्ञाके अनुसार हम काम करते, तो फिर हम-लोग बहुत दिनोंतक लखनऊ लौट न सकते। हमलोगोंने नवाबके नौकरोंसे कहा, कि नवाबके आज्ञानुसार हमलोगोंको शीघ्र ही लखनऊ लौट जाना चाहिये। यदि हमारे नौकर तुम्हारे साथ जायंगे, तो हमारे जानेमें देर लगेगी। नवाबके नौकरोंने कहा, कि यदि आपको लखनऊ जानेमें देर होगी, तो इसके लिये नवाब ही दोषी रहेंगे। हमने कहा,—परन्तु जल्द लौट जाना हमारा कर्तव्य है। यदि हम वक्तपर न पहुंचे, तो यह अपराध होगा। जवाब मिला,—"नवाबकी अनुपस्थितिमें नवाब रौशनुद्दौलह ही नवाब हैं, उन्हींका यह हुक्म है।" सवाल-जवाबसे मामला दम खाया। कहा,—"हमारे अस्त्र-शस्त्र हैं, उसके चलानेवाले भी हैं; हमलोग अपनी और अपने नौकरोंकी रक्षाकर ले सकते हैं।" जवाबमें नवाबके नौकरोंने कहा,—"यदि आपके नौकर हैं, तो उनसे

सामना करनेवाले हमलोग भी हैं। यदि आपका नौकर एक है तो हम तीन हैं,—आपके नौकरोंकी संख्यासे हमारी संख्या तिगुनी हैं। आपके पास अस्त्र-शस्त्र हैं, तो हमारे पास भी हैं, आपसे अधिक ही हैं। यदि नवाबकी आज्ञा न मानी जायेगी हमलोग तङ्ग किये जायेंगे, तो आपका एक भी नौकर जीता न रहेगा।"

नवाबके नौकरोंके अफसर बीचमें ही कुछ तो चापलूसी और कुछ दृढ़ताके साथ नवाबकी आज्ञा सुनाने लगे; नवाब अपनी इच्छाको कभी दबा नहीं सकते।

हमलोग बहुत हैरान हुए। नौकरोंको भेजें तो भी मुश्किल और न भेजें तो भी मुश्किल। बहुत देरतक तर्कवितर्क चला; अन्तमें हज्जाम सरफराज खांयाद आये। नवाबके दरबारमें एक भी हिन्दुस्थानी नौकर ऐसा न था, जिसे हज्जामका भय न हो। इसका प्रभाव सबसे अधिक था। पुरानी मसल है— जिसकी भावना कीजिये, वही सामने आ खड़ा होता है। हम-लोगोंने हज्जामका ध्यान किया और हज्जाम आ पहूंचा, वह बहुत जल्द लखनऊ जाना चाहता था। उसे सब बातें समझाकर कही गईं, तो वह उन्हें सुनकर बहुत नाराज हुआ।

नवाबके नौकरोंके अफसरकी ओर मुड़कर उसने कहा,—तुम सब लोग बड़े पाजी आदमी हो। नवाब भी बडा पाजी आदमी है। जाओ और नवाबसे कहो,—कि जहांप-नाहकी सफाईके लिये मेरी जरूरत होगी, मुझे बहुत जल्द वहां पहुंच जाना चाहिये। यह लोग भी मेरे साथ

ायेंगे। किसीसे कोई छेड़ न करे। छेड़ करनेके लिये क्या ांववाले कम हैं ?

अफसरने झुककर सलाम किया और निरुत्तर हो चला गया। हम सन्तुष्ट हुए, हज्जाम भी सन्तुष्ट हुआ। फिर नौकरोंकी मांग नहीं आई। नवाब सन्तुष्ट हुए या नाराज इसकी खबरतक हमलोगोंको नहीं।

हमलोग लखनऊके समीप दिलखुश आ पहुंचे; नवाब हमलोगोंके आनेकी राह देख रहे थे। हमारे पहुंचते ही उन्होंने कहा,—"हम आपलोगोंकी राह देखते देखते थक गये। यह बड़ी वाहियात जगह है।"

हमलोगोंसे एकने कहा,—हमलोगोंकी अपेक्षा आप सफर करनेमें बहुत तेज हैं।

नवाब। आपके आनेसे मुझे बहुत आनन्द हुआ है। मैंने सुना है, कि उन बागी गांववालोंने छावनीमें बड़ी लूटताराज की। खां साहब उसका हाल मुझसे कहते थे। आप लोगोंसे भी अब पूरा पूरा हाल सुनना चाहता हूं।

हमलोगोंने जो कुछ देखा था, सब कह दिया—अपनी ओरसे कुछ मिलाया नहीं।

नवाब सुनकर बहुत नाराज हुए; उन्होंने कहा,—"जिन कपड़ोंको मैं और मेरी स्त्रियां पहनती थीं, उनपर उन बदमाशोंने हाथ डाला है। उनकी शामत आई है।"

हज्जाम। हुजूर। मैंने सुना है, कि आपने मुख्य अपराधियोंको पकड़वाया है और वह अब हुजूरकी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

नवाब। वह मरेंगे—फांसी लटकाये जायेंगे। सौ हों, पचास हों,सबके सब मारे जायेंगे। उनकी मौतको कोई रोक नहीं सकता।

जहांपनाहकी यह आज्ञा हमलोगोंने सुन ली।

अवधमें विचारमें देर नहीं लगती थी। सिवा लखनऊके और कहीं भी कारागार नहीं था। अपराधी या संशयित मनुष्यके पकड़े जानेपर राजाज्ञा सुनाई जाती और बन्दी फांसी लटका दिया जाता था। विचारके प्रमाणोंकी विशेष आवश्यकता प्रतीत होती नहीं थी। प्रबल सन्देह होनेसे ही फांसीकी आज्ञा दी जाती थी। विचारकोंको विचार करनेकी फुरसत ही नहीं मिलती थी। "कम्पनी"की विचारप्रणाली चाहे जितनी बुरी हो; परन्तु मेरा विश्वास है, अवधकी प्रजा नवाबकी अधीनतासे किसी युरोपियन मजिस्टरकी अधीनतामें—चाहे वह उनकी भाषा भी न जानता हो—अधिक सुखसे दिन बिताती।

जहां हमारे नवाब जैसे राजकर्त्ता हैं और भारतवासियों जैसे हाकिम ताबेदार सदा ही शिर नवाये मौजूद हैं, वहांका कृपा-वात्सल्य नित्य ही नये नये खेल दिखाया करता है। हज्जाम हिन्दुस्थानीमें बात कर नहीं सकता था; न नवाब ही उससे अङ्गरेजीमें अच्छी तरह बोल सकते थे; फिर भी, नवाब और हज्जामके बीच बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था। हज्जाम सरफराजखां नवाबके प्रेमपात्र थे। हज्जाममें न जाने कौन ऐसी शक्ति थी, कि जिसके प्रभावसे उसे नवाब प्यार करने लगे और उसपर कृपारूप सुधा बरसाने लगे। हज्जाम भी नवाबकी नेकनजर सदा काइम रखता था।

नवाबके दरबारमें सर्व्वोच्च स्थानपर हज्जाम ही विराजमान था; इसकी उपाधि-परम्परा सभी राजपुरुषोंसे लम्बी थी और नवाबके आमोखास व्यवहारके लिये जो युरोपियन माल आता था, उसका वही इजारादार सौदागर था। हज्जामप्रवरकी यह सब बात पहले ही कही जा चुकी हैं। नवाबकी पशुशालाके वही मुख्य प्रबन्धकर्त्ता थे। हज्जामप्रवर स्वयं मंगाई चीजोंका हिसाब लगाते और हर महीने हिसाबका खाता नवाबके पास पेश करते थे। ऐसे ही एक मौकेपर यानी पेशीके समय हज्जामके साथ मैं भी वहां उपस्थित था।

रात कोई ६॥ बजनेका समय था; हमलोग नवाबके साथ महलमें खाना खा चुके थे और अपने अपने डेरे लौटते थे; ऐसे समय हज्जाम आ पहुंचा; उसके हाथमें कागजोंका एक पुलिन्दा था। भारतवर्षमें व्यवसाय सम्बन्धी या अदालती बड़े बड़े सनद पुस्तकोंमें या तावोंपर लिखे नहीं जाते, बल्कि कागजकी लम्बी लम्बी पट्टियोंपर लिखे जाते हैं—एक पट्टीके समाप्त होते ही उसमें दूसरी पट्टी चिपकाई जाती है; पट्टियोंका यह सिलसिला स्थान विशेषके नकशेकी तरह लिपटा रहता है।

नवाबने हज्जामको आता देख, धीमी आवाजमें कहा,—"आ गये। क्या, हिसाबका बिल ले आये हैं?

हज्जाम। जी, हां।

नवाब। अच्छा, सुनाइये। हां; यह पहले देख लें, कि इसकी लम्बाई कितनी है। खोलिये।

नवाबकी तबीयत इस समय बहुत प्रसन्न थी, फिर हज्जाम

भी प्रसन्नचित्त क्यों न होता? जैसे राजा, वैसी प्रजाके न्यायसे- जैसा नवाब वैसा हज्जाम।

उन्होंने पुलिन्देका एक सिरा पकड़ पुलिन्दा नीचे झुका दिया, जिसमें वह आप ही खुल जाये। पुलिन्दा खुलकर उस बड़े कमरेके दूसरे सिरेसे जा लगा। हिसाबके अक्षर और अङ्क बड़ी खूबीके साथ लिये गये थे। नवाबने खरीतेकी पैमाइश करना चाही। गज मंगवाया गया; चिट्ठा साढ़े चार गज लम्बा था, मैंने हिसाबका जोड़ देखा—९० हजार रुपयेसे भी अधिक।

नवाबने भी हिसाबका जोड़ देख लिया।

देखते ही उन्होंने कहा,—मामूली हिसाबसे यह बहुत अधिक है।

हज्जाम। हां हुजूर, बहुतसा सामान भी तो मंगाया गया है थालियां, हाथी और न जाने क्या क्या चीजें मंगाई गईं।

नवाब। बहुत ठीक। मैं सब जानता हूं। नवाब रौशनुद्दौलहके पास जाओ अपना हिसाब चुकता कर लो।

दस्तखत हुए और हिसाब चुकता किया गया।

कई महीने बाद एक बड़े मुसाहिबने नवाबसे कहा—खान हुजूरको लूट रहा है। उनके हिसाब-किताबका कोई ठिकाना ही नहीं।

नवाबने नाक चढ़ाकर कहा,—मान लो, कि मैं खानको धनकुबेर बनाना चाहता हूं, इसमें तुम्हारा क्या? उसके हिसाबकी ज्यादती मुझसे छिपी नहीं है। जो है, वह बहुत ठीक है। मेरी मरजी है—चाहूं जो करूं। खान धनकुबेर बनेगा।

परन्तु सिर्फ इन्आम ही नवाबकी पक्षता कृपाके एकमात्र भाजन नहीं थे। मुझे ऐसे दो दृष्टान्त याद हैं, जहां नवाबकी पक्षता कृपा चरमसीमाको पहुंच गई थी। जुलमी सुलतानों और विशेषतः पूर्वीय राजाओंके यहां बेकरारी कोई बड़ी बात नहीं।

एक दृष्टान्त काश्मीरकी एक नर्त्तकीका है। वह बहुत ही सुन्दर थी; वह उसका सुडौल शरीर और बड़ी बड़ी काली आंखें, हिन्दुस्थान हीमें दिखाई देती हैं। नर्त्तकियोंका कोई अङ्ग खुलते ही लोग बड़ी आतुरतासे उसे देखने लगते हैं—टकटकी लग जाती है; पोशाककी वजह उसके खुले अङ्गकी बड़ी इज्जत रहती है। बिलायती स्त्रियां बाजारके कृत्रिम सामानोंसे अपनी सुन्दरता बढ़ाती हैं, परन्तु भारतीय रमणीका सौन्दर्य्य कृत्रिम नहीं—स्वाभाविक, स्वर्गीय है—उसमें उन सर्व्वशक्तिमान परमात्माकी कारीगरी ही चमकती रहती है।

उस काश्मीरी नर्त्तकीका नाम नूना था। नूनाने अपने लावण्यकी प्रभासे नवाबके चित्तचकोरको मुग्ध कर लिया। नवाबको उसके इस कला-कौशलकी पहलेसे कोई खबर नहीं थी। नूना प्रकृतिनिर्म्मित पर्व्वतप्रदेशकी रहनेवाली थी—अपने उसी जन्मभूमिका गीत गा रही थी। उसकी जादूभरी आवाज और उसकी ललित कलाका लालित्य हम बखान कर नहीं सकते। उसकी कमनीय देहकी गति, सुविशाल कृष्ण नेत्रका कटाक्ष, और भांति भांतिके अभिनय सचमुच ही स्वर्गसुख देनेवाले थे।

नूना सामान्य नर्त्तकीकी तरह नवाबके यहां लाई गई थी;

परन्तु उस दिनकी आदसे जलसेका रङ्ग बिलकुल फीका रहा; इसलिये नूना ही पर सारी दारोमदार रही। नवाबने नूनाको देखा, उसका गाना सुना। नवाब खुश हुए और उन्होंने अपनी खुशी जाहिर की। इससे आप नूनाको चाहे खुशनसीब समझिये या बदनसीब। नवाबके मुंह अपनी प्रशंसा सुन नूना खिल उठी; उसकी आंखोंसे उसका भाव प्रकट हो रहा था—आंखें चमक रही थीं, गालोंपर गुलाबी छा रही थी और उसके अधर—मानो सुधा बरसा रहे थे। परन्तु यह दिव्याकान्ति—वह अप्रतिम सौन्दर्य्यकी छटा तुरन्त ही जाती रही, क्योंकि नूना अपना भाव प्रकट करना नहीं चाहती थी। भांति भांतिके तर्क-वितर्क और तरह तरहके मनोरथ उसे सता रहे थे, परन्तु वह इस भावप्राधान्यके बहिचिंह्नोंको सुप्त और गुप्त रखनेमें मानो प्राणपणसे चेष्टा कर रही थी। मनोराज्यकी कल्पनाओंसे छाती ऊपर नीचे हो रही थी। नवाबके 'शाबाश' 'शाबाश' कहते ही उसका मुखकमल विकसित हुआ। पाठक! यह नूनाका दोष नहीं। जिन्होंने नूनाको शाबाशी दी थी, वह कोई मामूली आदमी नहीं थे—ताजदार थे। और नूना कुछ बिलकुल ही नीच जातिकी नहीं थी। नवाबकी छः स्त्रियोंसे २ नूनाकी अपेक्षा भी नीच जातिकी थीं। इसके अलावा हिन्दुस्थानके कितने ही सुप्रसिद्ध राजा नर्त्तकीसे जन्मे थे। पञ्जाब-केशरी महाराज रणजित सिंहके वारिस दलीपसिंहकी माता नर्त्तकी थीं। अब वही महाराज दलीपसिंह इङ्गलैण्डकी महारानीके मेहमान हैं।

फिर यदि नूना खुशीके नशेमें चूर हुई, तो इसमें उसका

क्या दोष, मैंने सोचा था, कि वह मारे खुशीके आपेसे बाहर हो जायगी; परन्तु मेरा यह खयाल गलत था, क्योंकि शीघ्र ही नूनाका रङ्ग बदल गया। हम सभी उसकी ओर एक निगाहसे देख रहे थे। नूना फिर पूर्ववत् नाचने-गाने लगी।

नवाब बोले,—"आज रातके गानेके लिये तुम्हें एक हजार रुपया मिलेगा।"

हजार रुपये। काश्मीरकी तराईकी उस दीन नूनाका नसीब खुला। क्या एक हजार रुपये कोई तमाशा है?

जब मजलिस छोड़ नवाब जनानखाने चले, तब नूनाकी कमनीय देह होने उनको सहारा दिया था। नवाबने उसके कन्धे पर अपनी भुजा रखी और नूना-नवाब भीतर चले गये। एक मामूली नर्तकीको अपने रङ्गमहल ले जाना नवाबको नहीं सुहाता; हिन्दुस्थानमें ऐसे व्यवहारसे बड़ी घृणा की जाती है; परन्तु रीतिनिति या आचार-विचारकी परवा ही कौन करता है?

दूसरे रोज भी नूना होका गाना हुआ। वह कीमती पोशाक पहने थी; उसकी बाहुलताओंपर एकसे एक उमदा रत्न चमक रहे थे। नूना ही मजलिसकी रौनक थी। उसके गालोंकी लालिमा उसकी खुशी टपका रही थी।

नवाब बोले,—"आजकी रातके लिये तुम्हें दो हजार मिलेगा।" नूनाका गाना हुआ; मजलिस बरखास्त हुई और नूनाके साथ नवाब रङ्गमहल पहुंचे।

कई दिन इसीतरह बीते। नवाबकी उदारताकी कोई सीमा ही नहीं! नूनाका प्रभाव दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था— सभी मुसाहिब उसके सामने सिर नवाते थे। नूना नवाबकी

क्या दोष, मैंने सोचा था, कि वह मारे खुशीके आपेसे बाहर हो जायगी; परन्तु मेरा यह खयाल गलत था, क्योंकि शीघ्र ही नूनाका रङ्ग बदल गया। हम सभी उसकी ओर एक निगाहसे देख रहे थे। नूना फिर पूर्व्ववत् नाचने-गाने लगी।

नवाब बोले,—"आज रातके गानेके लिये तुम्हें एक हजार रुपया मिलेगा।"

हजार रुपये। काश्मीरकी तराईकी उस दीन नूनाका नसीब खुला। क्या एक हजार रुपये कोई तमाशा है?

जब मजलिस छोड़ नवाब जनानखाने चले, तब नूनाकी कम-नीय देह होने उनको सहारा दिया था। नवाबने उसके कन्धे पर अपनी भुजा रखी और नूना-नवाब भीतर चले गये। एक मामूली नर्त्तकीको अपने रङ्गमहल ले जाना नवाबको नहीं सुहाता; हिन्दुस्थानमें ऐसे व्यवहारसे बड़ी घृणा की जाती है; परन्तु रीतिनिति या आचार-विचारकी परवा ही कौन करता है?

दूसरे रोज भी नूना हीका गाना हुआ। बहु कीमती पोशाक पहने थी; उसकी बाहुलताओंपर एकसे एक उमदा रत्न चमक रहे थे। नूना ही मजलिसकी रौनक थी। उसके गालोंकी लालिमा उसकी खुशी टपका रही थी।

नवाब बोले,—"आजकी रातके लिये तुम्हें दो हजार मिले-गा।" नूनाका गाना हुआ; मजलिस बरखास्त हुई और नूनाके साथ नवाब रङ्गमहल पहुंचे।

कई दिन इसीतरह बीते। नवाबकी उदारताकी कोई सीमा ही नहीं! नूनाका प्रभाव दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था— सभी मुसाहिब उसके सामने सिर नवाते थे। नूना नवाबकी

हज्जामने शहरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशाकका और सब सामान मंगवाया गया। हज्जामका विवाह हो गया था ; उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने कहा,—यह पोशाक पहन लो।

बटेर आये और बीचमें रखे मेजपर बटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इसकी अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता रहा ; अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, कि देखनेवालोंकी दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ गई थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबकी आज्ञानुसार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हज्जाम उसकी दुर्दशा देख खिलखिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उसकी ईर्ष्या करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी वह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी ; कई सप्ताह वह इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी ; कभी हंसती थी न मुसकराती—रञ्जमें डूबी रहती थी। उसने नवाबसे बार-

हुज्जामके घरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशा-कका और सब सामान मंगवाया गया। हज्जामका विवाह हो गया था; उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने कहा,—यह पोशाक पहन लो।

बटेर आये और बीचमें रखे मेजपर बटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इसकी अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता रहा, अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, कि देखनेवालोंको दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ गई थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबकी आज्ञानु-सार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हज्जाम उसकी दुर्दशा देख खिल-खिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उसकी ईर्ष्या करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी यह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी; कई सप्ता-ह वह इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी; कभी हंसती थी न मुसकराती—गममें डूबी रहती थी। उसने नवाबसे बार-

हब्सामको नरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशाक और सब सामान मंगवाया गया। हब्सका विवाह हो गया था, उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने कहा,—यह पोशाक पहन लो।

वटेर आये और बीचमें रखे मेजपर वटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इसकी अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता रहा; अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, कि देखनेवालोंको दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ गई थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबकी आज्ञानुसार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हब्साम उसकी दुर्दशा देख खिलखिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उसकी ईर्षा करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी यह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी; कई सप्ताह तक इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी; कभी हंसती थी न मुसकराती—रञ्जमें डूबी रहती थी। उसने नवाबसे बार-

हुस्सामके घरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशाकका और सब सामान मंगवाया गया। हुस्सामका विवाह हो गया था; उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने कहा,—यह पोशाक पहन लो।

बटेर आये और बीचमें रखे मेजपर बटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इसकी अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता रहा; अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, कि देखनेवालोंको दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ गई थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबके आज्ञानुसार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हुस्साम उसकी दुर्दशा देख खिलखिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उससे ईर्ष्या करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी यह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी; कई सप्ताह यह इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी; कभी हंसती थी न मुसकराती—रञ्जमें डूबी रहती थी। उसने नवाबसे मार-

हज्जामके घरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशा-कका और सब सामान मंगवाया गया। हज्जामका विवाह हो गया था; उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने कहा,—यह पोशाक पहन लो।

बटेर आये और बीचमें रखे मेजपर बटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इसकी अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता रहा, अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, कि देखनेवालोंको दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ गई थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबके आज्ञानु-सार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हज्जाम उसकी दुर्दशा देख खिल-खिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उसकी ईर्षा करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी यह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी; कई सप्ता-ह वह इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी; कभी हंसती थी न मुसकराती—रञ्जमें डूबी रहती थी। उसने नवाबसे बार-

हुस्सामके घरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशाकका और सब सामान मंगवाया गया। हुस्सामका विवाह हो गया था; उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने कहा,—यह पोशाक पहन लो।

बटेर आये और बीचमें रखे मेजपर बटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इसकी अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता रहा, अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, कि देखनेवालोंको दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ गई थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबके आज्ञानुसार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हुस्साम उसकी दुर्दशा देख खिलखिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उसकी ईर्ष्या करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी यह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी; कई सप्ताह वह इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी; कभी हंसती थी न मुसकराती—रञ्जमें डूबी रहती थी। उसने नवाबसे बार-

बेगमोंसे हिलमिलकर रहती थी— यहांतक, कि अब बेगमोंने उसे अपना लिया था। जब पहले पहल नूना आई, तब महलकी लौंडियां उसकी ओर हिकारतकी नजरसे देखती थीं; पर अब धीरे धीरे वह फरमांबरदार हो चलीं।

एक रोज नशेमें चूर नवाबने नूनासे कहा,—"नूना। मैं सोनेका एक मकान बनवाऊंगा और किसी न किसी रोज तुम मेरी बादशाह बेगम बनोगी।" नूनाकी खुशीकी अब कोई हद न रही।

कुछ मुसलमानी तेवहारोंकी वजह हमलोग खाना खाने और मजा लूटने नवाबके यहां जा न सके। अनुमान एक सप्ताह यों ही बीता—नूनाको देखनेके लिये आंखे आतुर हो रही थीं।

जब फिर मजलिस जमी और नूना गाने लगी, तब उसकी ओर स्थिर नयनसे देख नवाबने कहा,—गाना तो बहुत हुआ—सुनते सुनते थक गये। अब कोई नया तमाशा किया जाये। बटेरबाजी ही क्यों न हो?

हज्जाम बटेरबाजीकी तय्यारी करने लगा। नवाब नूनकी ओर देख रहे थे सही, पर उनकी वह आतुरता अब जाती रही।

नवाबने कुछ तो पास बैठे हुए माष्टरसे और कुछ मन ही मन कहा,—अगर इसे अङ्गरेजी पोशाक पहनाई जाये, तो कैसा?

किसीने जवाब नहीं दिया, हज्जाम मौजूद नहीं था। उसके आते ही नवाबने वही प्रश्न फिर किया।

हज्जाम बोला,—पहनाकर देखना तो कोई कठिन बात नहीं।

हब्सामके नरसे एक गाउन और अङ्गरेज स्त्रियोंकी पोशा-क और सब सामान मंगवाया गया। हब्सामका विवाह हो या था; उसकी स्त्रीके कितनी ही पोशाकें थीं। नूनासे नवाबने हा,—यह पोशाक पहन लो।

बटेर आये और बीचमें रखे मेजपर बटेरबाजी आरम्भ हुई।

बेचारी नूना अपनी नई पोशाक पहन आई। इससे अपेक्षा और दुर्दशा क्या हो सकती है? नूनाका सब सौन्दर्य जाता हो, अङ्गरेजी पोशाकने उसे इस कदर बदसूरत बना दिया, के देखनेवालोंको दृष्टि-सङ्कोच होता था। नूना स्वयं समझ रही थी कि वह एक तमाशा बन रही है। नवाबके आज्ञानु-सार वह नीचे बैठ गई, पर दुर्दशाजनित लज्जाके मारे उसका दिल टूट गया था।

नवाब और उनके प्रियपात्र हब्साम उसकी दुर्दशा देख खिल-खिलाकर हंस पड़े। नूनाकी आंखोंसे गर्म्म आंसूकी धारा बह रही थी। जिन गालोंकी लालिमा देख अन्यान्य स्त्रियां उसकी ईर्षा करतीं, उन्हीं गालोंपर अब आंसूकी धाराने कालिमा फैला दी थी। लौंडियां दांतसे होंठ काटती उसकी ओर तिरस्कार-दृष्टिसे देखती थीं। विलायतकी स्त्रियां भी ऐसा ही किया करती हैं।

नूनाकी यह दुर्दशा एक या दो दिनकी नहीं थी; कई सप्ता-ह वह इसी पोशाकमें मजलिसमें आया करती थी। नवाबकी प्रबल इच्छा ऐसी ही थी। वह उदास रहती थी; कभी हंसती थी न मुसकराती—शर्म्मसे डूबी रहती थी। उसने नवाबसे बार-

बार प्रार्थना की, कि अब मुझे काश्मीर लौट जाने दीजिये; परन्तु जाने कौन देता था? उसने हज्जामसे भी कई बार कहा; पर कोई फल न हुआ। हज्जामका हृदय, हृदय नहीं पत्थर था।

मुहर्रमकी ताजियादारी आरम्भ हुई। ४० दिनोंतक नवाब मश्गूल रहे—मुलाकात होना ही कठिन हो गया था। सवेरेके दरबारमें ही कभी कभी मुलाकात हो जाती थी। मुहर्रमके समय नाचगाना नहीं हुआ; महलमें युरोपियनोंकी दावतें भी नहीं हुईं। तख्तनशीन होनेसे पहले नवाबने यह प्रतिज्ञा कर ली थी, कि अगर मैं राजपाट पा जाऊंगा, तो मुहर्रम और लोगोंकी तरह, दश ही दिन मनानेके बदले ४० दिन मनाऊंगा। नवाबने इस प्रतिज्ञाका पालन किया।

मुहर्रममें बेचारी नूना न जाने किस कोनेमें पड़ी थी। महलमें वह फिर कभी आई ही नहीं। मैं नहीं जानता उसकी क्या गति हुई; हज्जाम भी मुझे जैसा ही अनजान बन गया था। उसका खयाल था, कि वह किसी बेगमकी लौंडी बनाई गई है और महलमें रहती है। परन्तु एक हिंजड़ेने आकर खबर दी, कि वह महलमें नहीं है। एकबार मैंने नवाबके सामने उसका जिक्र छेड़ा, तो उन्होंने कुछ खयाल ही नहीं किया; मैं भी चुप हो रहा।

अब दूसरा दृष्टान्त भी लिखे देते हैं। इस दृष्टान्तके पात्रोंसे हमारी विशेष सहानुभूति नहीं। नूनाकी दुर्दशा देख सहृदय मनुष्य मात्रको दुःख हो सकता था; पर वहां नवाब या नवाबके प्रियमात्रकी कारस्वाईसे उतनी सहानुभूति दिखानेकी किसीको भी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती थी।

राजोद्यानके बीचसे हो नवाब सदलबल चैनगञ्जकी ओर जा रहे थे। चैनगञ्ज एक राजप्रासादका नाम था। यहां जङ्गली जानवरोंकी लड़ाई प्रायः हुआ करती थी। नवाब एक खुली गाड़ीमें बैठे थे। गाड़ी अङ्गरेजी ढङ्गकी थी। कोचवान आयर्लेण्डका रहनेवाला था। वह बड़ा ही खुशदिल और चालाक था। उसके चार अरबी नौकर थे। कोचबक्सपर वही आइरिश कोचवान और उसके पीछे उसके नौकर सवार थे। गाड़ी चल रही थी, दिसम्बर मासमें सवेरे सूर्यदेवके सुकोमल किरण बहुत सुखदायक होते हैं—गाड़ीमें बैठे बैठे नवाब उसी सुखका अनुभव कर रहे थे।

गाड़ीके पीछे हमलोग और हमारे पीछे शरीररक्षक चल रहे थे। बीच बीचमें मैं या और कोई मेरा साथी नवाबकी गाड़ीमें टोपी उतार जा बैठता और बातकर लौट आता। जब हम नवाबसे या नवाब हमसे बात करते, तब अङ्गरेजी प्रथाके अनुसार टोपी उतार लेना पड़ती थी। शिक्षक नवाबसे बातें कर रहा था, ऐसे समय एक आदमी सड़कके पाससे गाड़ीके पास आ खड़ा हो गया और नाचने लगा। उसकी सूरतशकल कुछ अजीब थी। वह नङ्गा था; उसका डील लम्बा और शरीर गठीला था। नवाब उसकी ओर देखने लगे। हमलोगोंसे एक दो आदमी उसे हटानेके उद्देश्यसे आगे बढ़े, इतनेमें नवाबने उन्हें आगे बढ़नेसे रोक दिया और कोचवानको गाड़ी ठहरानेकी आज्ञा दी। गाड़ी ठहराई गई; नवाब तमाशा देखने लगे। नवाबके कृपापात्रताका यह भी एक नमूना है। कौन कह सकता है, कि नवाबकी किस समय कैसी इच्छा होगी? अपने नौकरोंको जिसे

सपेकृते देख नवाब खिलखिलाकर हंस देते हैं, उसीके लिये वही नवाब अपनी गाड़ी भी ठहराते हैं।

उस जङ्गली मनुष्यका नाम पीरू था। नवाबका यह व्यवहार देख वह बहुत खुश हुआ और दूने उत्साहके साथ अपनी ही रची कविता अपने ही सङ्गीत-शास्त्रके अनुसार अलापने लगा। कवितामें कहीं कहीं नवाबकी प्रशंसा भी की गई थी नवाब ध्यानसे सुन रहे थे; अपनी प्रशंसा सुन बहुत ही सन्तुष्ट हुए उन्होंने तुरन्त अपने नौकरको आज्ञा दी, कि इसे अभी अशरफियां पुरस्कार दो। अशरफियां दी गईं। नवावने कहा,- कल महलमें आना; मैं गाना सुनूंगा। पीरूने कहा,—"हा हुजूर; जरूर पहुंच जाऊंगा। हुजूर जहांपनाह हैं; मैं जहांपनाहकी पनाहमें हूं।"

पीरू कवि था—जङ्गलका कवि। प्राचीन कवियोंकी नम्रता इसमें नहीं थी—यह बड़ा ढीठ था। नवावके आज्ञानुसार दूसरे दिन पीरू महलमें पहुंचा; पूछनेपर नवावने कहा,—"वही गाना सुनाओ, जिसे कल सुनाया था।" नवाब उस गानेको बहुत ही पसन्द करते थे। अबसे पीरू महलमें नित्य ही आने लगा नवाब रोज वही गाना सुनते थे; नवावके लिये उस गानेमें नित्य नई चांदनी उद्‌भासित होती थी। पीरू भाट नित्य नये नये पुरस्कारोंसे परिपुष्ट हो नवावको सल्तनत और दरबारमें अपना प्रभाव जमाने लगा। ५।१० रोज बाद ही नवाब रोशनुद्दौलहने पीरूको पुरस्कार प्रदान किया। सेनापति, राजा बख्तावर सिंह, पुलिस-कोतवाल आदि कर्मचारियोंने भी देखा देखी पुरस्कार दिया। पीरूकी खुली मुट्ठीमें लक्ष्मी खेलने लगीं।

पीरूका दबदबा दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था। हमलोगोंको एक तरहसे विश्वास हो हो गया था, कि अब पीरू अवधके सरदारोंमें शामिल हुआ चाहता है। पीरू जब लखनऊकी राहसे चलता, तब सभी राहचलते उसके सामने शिर नवाते। पाटक! आप क्या सोचते हैं? क्या पीरूका यह प्रभाव जाता रहेगा? वस्तुस्थिति देखनेसे यह प्रतीत होता नहीं था। पीरू महलमें रहने लगा; उसके लिये कई कमरे सजाये गये। पीरू अब पहली जङ्गली अवस्थामें नहीं था, उसके शरीरपर एकसे एक कीमती पोशाकें शोभा पा रही थीं। दरबारके मुसाहिब उससे दोस्ताना तौरपर बात करते थे, उसे न जाने कितनी ही उपाधियां दी गई थीं।

नवाब पहले, रोज फिर सप्ताहमें एकबार और फिर महीनेमें एकाध बार और बादको कभी कभी पीरूका गाना सुनते थे; पर पीरू नवाबका प्रियपात्र बना रहा।

जब मैं लखनऊ छोड़ अन्यत्र चला गया यानी जब पीरूकी उस जङ्गली सूरतको पहलेपहल देखे १८ साल हो चुके; तब पीरू एक सरदार हो गया—मामूली सरदार नहीं; लखनऊके दरबारमें जो बड़े बड़े नामाङ्कित सरदार थे, उनमें एक पीरू भी था। मैं उसकी उपाधि तो भूल गया हूं, पर इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वह कोई 'सिंह' बन गया था, उसके नामसे पहले राजाकी उपाधि व्यवहृत होती थी, क्योंकि पीरू हिन्दू था। राजा और सिंह, दोनो हिन्दू उपाधियां हैं; ऐसे ही मुसलमानी उपाधियां नवाब और मीर है।

मैं जब कपाचाचक्र ही का वर्णन कर रहा हूं, तब मेरे

मित्र उन मिडलसेक्सके भूतपूर्व शरीफके लखनऊमें आनेका हाल भी लिख दिया जा सकता है। शरीफ साहबने नवाबको बहुत ही प्रसन्न किया था।

शरीफने प्रयागसे मुझे एक पत्र लिखा, कि अब मैं विलायत लौट जाना चाहता हूं और इसलिये जानेसे पहले एकबार उत्तर हिन्दुस्थान भी देख लेनेकी मेरी इच्छा है। इसका तात्पर्य्य सिर्फ यही था, कि यदि शरीफ लखनऊ आये, तो लखनऊका दरबार, दरबारियोंका रङ्गढङ्ग और जानवरोंकी लड़ाई इत्यादि वह देख सकते हैं।

कलकत्तेमें रहते हुए शरीफने व्यवसायकर बहुतसी सम्पत्ति एकत्र कर ली थी। वह मेरे परम मित्र थे। मैं पहले ही चाहता था, कि किसी न किसी सूरतसे मैं उन्हें सहायता दूं। जिन्होंने अपनी किस्मत खोली है, उन्हें सहायक मिल मिल ही जाते हैं। मैंने उत्तरमें उन्हें चले आनेको लिख भेजा। साथ साथ यह भी लिखा, कि अगर आप आयें, तो महलके सैर, लखनऊका दरबार, पशुशाला आदि मैं आपको दिखा दूंगा और नवाबसे भेंट भी करा दूंगा। इससे अधिक वादा करना मेरे सामर्थ्यसे बाहर था। इसी विषयपर जब मैं एक मुसाहिबसे बात कर रहा था, तब उसने कहा,—हज्जाम नवाबको फुसलाकर जानवरोंकी लड़ाई करा सकता है। कोशिश कर देखें; यदि हुआ तो अच्छा ही है; कोशिश करनेमें कोई हानि भी नहीं।

हज्जामके मकानमें बिलियर्डका मेज था; यह मेज हमीं लोगोंके लिये था। नवाबके खर्चसे युरोपियनोंके लिये ही यह

ज बनाया गया था। दोपहरके समय हमलोगोंसे एक न एक आदमी यहां अवश्य हो रहा करता था। आज वहीं बहुत बड़े छोटेसे आदमी एक शरीररक्षकोंके कप्तानके साथ विलियर्ड खेल रहे थे।

मैंने उन प्रियपात्रसे कहा,—मेरे कलकत्तेके मित्र इलाहाबादसे लखनऊ आना चाहते हैं; क्या वह पशुशाला देख सकेंगे?

हज्जाम। जरूर, कहिये तो मैं आपको एक चोबदार दे दूं।

हज्जाम लखनऊके बाग-बागीचों और पशुशालाका तत्त्वावधायक था; अतः उसका दिया चोबदार देख कौन क्या कह सकता है?

मैं। शायद हाथियोंकी लड़ाई न हो सकेगी।

हज्जाम। क्यों नहीं? जरूर होगी।

इतना कहकर हज्जाम चुप हुआ—कुछ सोचने लगा। थोड़ी देर बाद मेरी ओर मुड़कर उसने कहा,—क्या आपके मित्र कोई सौदागर हैं? मुझे कम्पनीके खजानेमें कुछ धन जमा करना है। वह कुछ मदद करेंगे?

मैं। वह सौदागर हैं। आप उनका परिचय भी पा चुके हैं; वही हैं,—आर० बी० एल० कोके आर। उन्होंने अच्छी सम्पत्ति एकत्र की है, फिर भी, वह मेरा कोई काम करनेमें कभी न हिचकेंगे। हां यह जरूर है, कि काम भी न्यायसङ्गत होना चाहिये।

हज्जाम। तब ठीक है। लड़ाई जरूर होगी। अगर

पशुशालामें अच्छे लड़ाके हाथी न हुए, तो शेर-बबर व
गेंडे ही सही। अच्छा गिनो कप्तान साहब! अबके आ
मार लिया। ५० रुपये मैं देनदार हुआ।

मैं सन्तुष्ट हो चला गया। दूसरे ही दिन सवेरे मेरे ि
शा पहुंचे। मैं जानवरोंकी लड़ाई सम्बन्धी बहस सु
खास दरबारमें गया। हज्जाम नवाबके बालोंको बना ठ
ढङ्गसे खड़ा रहा था। बनावट हो चुकनेपर बातचीत आर
हुई।

हज्जाम। इधर कई दिनोंसे जानवरोंकी लड़ाई न
हुई।

नवाब। नहीं; मुझे अब वह सब अच्छा नहीं लगता क
शायद अच्छे लड़ाके हाथी भी मौजूद नहीं हैं।

हज्जाम। नहीं हुजूर; ऐसे हाथी हैं; आज सवेरे
मुझे यह खबर मिली है।

नवाब। फिर क्या आप लड़ाई करवा चाहते हैं?

हज्जाम। अगर हुजूर चाहें, तो अच्छा ही है। कलकत्ते
प्रसिद्ध धनी सौदागर मिष्टर ब्यार यहां आये हैं। वह दिल्ल
आगरा और अन्यान्य बड़े बड़े शहर देखने जायें
ऐसी अवस्थामें वह लखनऊसे विना कुछ देखे न जाये
तो बहुत ठीक होगा।

नवाब। जरूर, जरूर; उनके जरिये आप बहुत लाभ भ
उठा सकेंगे—कलकत्ते और विलायतमें वह आपके लिये उप
योगी हो सकते हैं। क्यों?

हज्जाम। हुजूरकी मेधा शक्ति बहुत ही ऊंची है।

स्थिर हुआ, कि दूसरे ही दिन चैनगञ्जमें लड़ाई होगी। अपने मित्रको यह खुशखबरी सुनानेके लिये मैं जल्द लौट गया।

मैंने अपने मित्रसे कहा,—देखो तुम्हारे लिये हम्जामने बहुत परिश्रम किया है। उसके साथ नम्रतासे पेश आना।

मित्र। उससे भला मैं क्यों उजड्ड होने लगा? उसके सामने तो सभी नम्र रहेंगे। वह नवाबका प्यारा और दरबारका मुसाहिब है—सरदार है। उससे मैं जरूर नम्रतासे पेश आऊंगा।

अच्छा मुसाहिब होनेके लिये आर० बी० एण्ड कोके मिष्टर आरमें सब गुण मौजूद थे।

ठीक वक्तपर चोबदार आ गया और हमलोग पशुशालाके शेर-बबरोंको देखनेसे पहले लखनऊके सिंह देखने चले। इन सिंहोंके सम्बन्धमें मैं आगे चलकर बहुत कुछ कहूंगा। अभी कहनेसे इस कहानीका मजा जाता रहेगा। शेर-बबरके सम्बन्धमें भी बहुत कुछ लिखा जायेगा।

उस जादूभरी चांदीकी छड़ीको देख, महल, सरकारी दफतर कचहरियां, फौजी बारिक, तोपखाना, बारूदखाना, इमामबाड़ा (जिसे विशप हीबरने मुसलमानी गिरजा बताया है) बाग-बागीचे, जनरल मारटीनका महल, पशुशाला तथा अन्यान्य स्थानोंके फाटक बेरोक खुल गये।

दूसरे दिन सवेरे चैनगञ्जकी ओर चले। हाथियोंकी लड़ाईकी सब सामान मौजूद थे। चैनगञ्ज गोमती नदीके उसपार है—लखनऊ शहरसे कोई तीन कोस दूर।

लड़ाई देखनेके लिये दूसरे चोवदारको जरूरत हुई युद्धस्थानके समीप ही निम्नगेलरी कमरेमें मैने अपने मित्रको बैठा दिया। यहांसे युद्धस्थान अच्छी तरह दिखाई देता था मैं उनके साथ रह न सका, क्योंकि इसवक्त मुझे नवावकी खिदमतमें हाजिर होना था; अवध-राज्यका सूचनारूप दमाम बजने लगा। लोगोंने समझ लिया, कि नवाब आ गये। मैं जहांपनाहके सामने हाजिर हो गया।

युद्धस्थानकी चारो तरफ गेलरियोंके ऊपर अमीर-उमरा आदिके कोच रखे थे। सबके बीच जहांपनाहका पलङ्ग था। जहांपनाह अपने पलङ्गपर विराजमान हुए। उनके पीछे कई लौंडियां हाथोंमे पङ्खा ले खड़ी हो गईं। हमलोग भी हाजिर हो गये; कुछ पलङ्गसे सटे खड़े थे और कुछ अपना एक हाथ पलङ्गसे लगाये।

मेरी ओर मुड़कर नवाबने कहा,—कलकत्तेके मिष्टर आर तुम्हारे यहां ठहरे हैं न?

मैं। हां हुजूर, मेरे ही यहां ठहरे हैं।

नवाब। वह इस वक्त कहां हैं?

मैं। नीचे।

नवाब। उन्हें यहां क्यों नहीं ले आये?

मैं। मैंने आपकी मिहरबानीका इतना खयाल किया नहीं था।

नवाब। तुम भी अजीब आदमी हो, जाओ, उन्हें यहां ले आओ। वहांसे भला वह क्या देख सकेंगे?

यदि मैं मिष्टर आरको विना नवाबकी आज्ञा लिये

ही वहां ले आता, तो नवाब उन्हें उसी दम बाहर निकलवा देते।

मैंने नीचे जा मिष्टर ग्यारसे कहा,—चलो, तुम्हें ऊपर नवाब बुलाते हैं।

उन्होंने शान्त चित्तसे उत्तर दिया,—जहांपनाहको धन्यवाद है; पर यहां ठहरना मुझे भला मालूम होता है।

मैं। नहीं, तुम्हें चलना ही होगा, वरना नवाबका अपमान होगा।

ग्यार। किसी किसीको बड़ाई हासिल करना पड़ती है और किसी किसीपर वह खुदबखुद सवार हो जाती है।

हम दोनों ऊपर चले; राह हीमें ठहराकर हमने मिष्टर ग्यारसे कहा,—जरा ठहरो, नवाबके सामने खाली हाथ जाना अच्छा नहीं। उन्हें कुछ नजर देना चाहिये।

ग्यार। क्या देना होगा? यह कैसी नजर?

मैं। कुछ अशरफियां नजर देना होगी।

ग्यार। माफ कीजिये; मैं इन सब झमेलोंमें पड़नेवाला नहीं। नवाबको देखनेके लिये कुछ अशरफियां दूं; वाहवा!

मैंने उन्हें समझाकर कहा,—सिर्फ एक मामूली रस्म है। नवाब अशरफियां थोड़ा ही लेंगे। देखकर या तो सिर जरा हिला देंगे या हाथ लगा देंगे। यह हो जानेपर अशरफियां तुम्हारी ही हैं।

अशरफियोंके लिये मैंने एक आदमी महाजनके पास भेज दिया था। अशरफियां आईं; दोनों ऊपर चले। मिष्टर ग्यारके दाहने हाथपर सफेद रूमाल बिछा था; उसपर अशरफियां

चमक रही थीं। वह नवाबके पास जा उपस्थित हुए। नवाबने बड़े गौरसे उन्हें देखा और एक हाथसे उनके हाथको नीचेसे सहारा देते हुए दूसरे हाथसे अशरफियोंको स्पर्श किया। नवाब जब किसीपर बहुत ही खुश रहते हैं, तभी वह उससे ऐसा व्यवहार करते हैं। ऐसी अवस्थामें नवाबकी खुशामद करना चाहिये थी। मेरे मित्र द्वारा यह खुशामद होना तो दूर रहा, उन्हें यह भय हुआ, कि नवाब कहीं अशरफियां झटकसे ले न लें। बादको जब वह मुझसे मिले, तो उन्होंने मुझसे कहा,—"मुझे सचमुच ही यह भय हुआ, कि नवाब अब अशरफियां उठा लिया चाहते हैं। मैंने चाहा, कि अब अशरफियांको मुट्ठीमें बांध लूं और उन्हें लेनेसे नवाबको रोकूं। पर शीघ्र ही मिष्टर आरने छुटकारा पा लिया—नवाबने अपना हाथ हटा लिया और तुरन्त अशरफियां मिष्टर आरकी जेबमें जा गिरीं।

इशारा पाते ही हाथी भिड़े। मामूली लड़ाई हुई, कोई विशेष बात नहीं। योद्धाओंमें एकके भागते ही युद्ध समाप्त हुआ।

युद्ध देख मिष्टर आर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी प्रसन्नतासे नवाब भी बहुत खुश हुए। लड़ाई हो चुकनेसे पहले ही नवाब मिष्टर आरकी बातोंसे प्रसन्न हुए और उन्होंने उन्हें अपने पलङ्गपर बैठनेका इशारा किया। मिष्टर आरने देखा, कि हम सब लोग खड़े हैं। इसलिये उन्हें नवाबके पलङ्गपर बैठना ठीक जान न पड़ा। नवाबसे उन्होंने कहा,—"यहां मैं आरामसे हूं।"

इससे बढ़कर और बेहूदगी क्या हो सकती है? नवाब उनका सम्मान करना चाहते थे; ऐसे समय उनकी बात न मानना अपराध है। इस अपराधके लिये और मौकोपर वह निकाल बाहर किये जाते; परन्तु इस समय नवाब प्रसन्नचित्त थे। उन्होंने हंसकर फिर कहा,—"आइये, बैठ जाइये।" अबकी मिष्टर आर मेरी ओर देखने लगे। नवाबके हंस पड़नेसे उन्होंने यह अनुमान किया, कि शायद उन्होंने बेजाने कोई अपराध किया है। मैंने उन्हें बैठ जानेके लिये इशारा किया। मिष्टर आर पलङ्गके एक सिरेपर बैठ गये; मारे शर्मके सिकुड़े जा रहे थे। पङ्खा झलनेवाली लौंडियाँ बंट गईं—आधी नवाबके पीछे और आधी मिहमानके; क्योंकि ऐसा ही दस्तूर था।

तमाशा खतम हुआ। हमलोग लौट चले। नवाबकी खिदमतके लिये मैं उनके पीछे हो लिया। नवाब अपनी गाड़ीमें सवार हुए। चलते समय उन्होंने कहा,—"आज हम सब अकेले ही नाश्ता करेंगे। अपने मित्रको साथ लेते आना।" नवाबके साथ पोल्ह भी था। जब नवाब बात कर रहे थे, तब उनका एक हाथ पोल्हके कन्धे पर था।

मैं विदा हो मिष्टर आरके साथ अपने हाथीपर सवार हुआ। मिष्टर आरसे मैंने कहा,—तुम बड़े खुशनसीब हो। नवाबके साथ तुम खाना खाओगे।

उन्होंने झल्लाकर बेअदबाना जवाब दिया,—यह खुशनसीबी नहीं, बदनसीबी है। नवाबके साथ खाना खानेकी अपेक्षा अकेले या तुम्हारे साथ खाना हजारगुना अच्छा है।

मैं। नहीं, यह ठीक नहीं। सच पूछो, तो तुम उनके प्रियपात्र बन गये हो। उन्होंने तुम्हारा बड़ा सम्मान किया है। नवाबके साथ-एक पलङ्गपर बैठनेका सौभाग्य किसीको प्राप्त हो सकता है?

आर। बाज आये इस सम्मानसे। पलङ्गके छुरा जैसे सिरे पर बैठनेसे खड़ा रहना ही अच्छा था।

मिष्टर आर नवाबकी बातोंसे कितनी ही अप्रसन्नता क्यों न प्रकट करते हों, किन्तु यह निश्चय है, कि वह अपने इस प्रभावसे बहुत आल्हादित हुए थे। मैंने उन्हें समझाबुझा नवाबके साथ खाना खानेकी बात निर्द्धारित की। मिष्टर आरका मन बहला; वह आजतक अपनेको सौदागर खयाल करते थे—सौदागरी हीमें अपना गौरव समझते थे। परन्तु अब उन्होंने यह समझा, कि शायद प्रकृतिने मुझे मुसाहिबोंके लिये ही निर्म्माण किया है। इसीलिये अबसे वह अपने बनाव-चुनावकी ओर विशेष ध्यान देने लगे। हमलोग जब खाना खाने महलकी ओर चले, तब मिष्टर आर अपनी पोशाककी ओर बारीकीके साथ देखते जाते थे। जब हमलोग पहुंचे, तब नवाबने अपने उन नये मित्रको अपने पास बैठनेकी इच्छा प्रकाश की।

नवाब और मास्टर पास पास बैठे थे। नवाबने उनकी ओर मुड़कर कहा,—"मास्टर। मैं चाहता हूं, कि मिष्टर आर मेरे पास यहां बैठें; आप·····।" मास्टर वहांसे उठे और दूसरी जगह जा बैठे। मिष्टर आरके सम्मानका यह दूसरा प्रदर्शन हुआ। मिष्टर आर भी क्रमशः सम्मान-प्राप्तिसे ऐसे रीझे जा रहे थे, कि उन्होंने तुरन्त नवाबकी बात मान ली। वह

उनके पास जा बैठ गये। सचमुच ही नवाबके साथ खाना खाना और विशेषतः उनके पास बैठ खाना खाना कोई मामूली सम्मान नहीं था। मिष्टर व्हार नवाबके पास इसतरह उठ बैठे, मानो नवाबके पास बैठनेका सौभाग्य प्राप्त करना उनके लिये कोई नई बात नहीं थी।

सबके सब नवाबी खाना खानेमें व्यस्त थे। उदासी जाती रही; सबके मुखकमल विकसित हुए। मदिरा देवीकी उपासना आरम्भ हुई। बोतलके बाद बोतल खाली हुए। मदिरा देवी प्रसन्न हुईं। नवाब भी उपासनासे सन्तुष्ट हो मदिराके कृपाप्रसादसे प्रसन्नचित्त हुए; उनका हृदयकपाट सूर्य्यदेवके बालारुणसे सञ्जीवित तथा विकसित कमलकी तरह खिल गया। उन्होंने कहा—मेरे सबसे बड़े मित्र इसवक्त इङ्गलण्डमें हैं और आप भी वहीं जा रहे हैं।

"सबसे बड़े मित्र" यानी नवाबके पहले रेसिडेण्ट। नवाब और रेसिडेण्टके बीच बड़ी दोस्ती थी। उनका नाम न जाने क्या था; चलिये, उन्हें हम मिष्टर स्मिथ हीके नामसे पुकारें—नाम कुछ ही हो; कामसे मतलब। मिष्टर स्मिथकी पत्नी बड़ी सुन्दरी—अप्सरा थीं। नवाब मिष्टर स्मिथकी इन पत्नीको बहुत अधिक प्यार करते थे। मैंने नवाबके विषयमें ऐसी ही बदनामी सुनी है। असल बात यह है, कि मैं उस समय लखनऊमें नहीं था—जो कुछ सुना, वही कह दिया है। मैंने यह भी सुना, कि जब मिष्टर स्मिथ लखनऊ छोड़ चले, तब उनके पास कोई ७५ लाख रुपये थे। अलावा इसके, कम्पनी-कागजमें मिष्टर स्मिथके नाम इतना धन दाखिल था, कि सरकारको इस

विषयकी जाँच करना पड़ी। बङ्गाल-सरकारने दरवाजा बन्दकर चुपके चुपके अनुसन्धान किया। फलतः मिष्टर स्मिथने इस्तेफा पेशकर वहाँसे विलायत प्रस्थान किया।

नवाब बोले,—"मेरे सबसे बड़े मित्र इसवक्त विलायतमें हैं। आप भी तो वहीं जा रहे हैं?"

इस समय नवाबकी आवाजसे उनका चित्तविकार प्रकट होता था। कोई बातचीत आ जानेसे नशेके जोरने यह विकार प्रकाश कर दिया।

मिष्टर आरने पूछा,—"हुजूरका सबसे बड़ा मित्र होनेका सौभाग्य किसको प्राप्त हुआ है?"

नवाब। वाह। नहीं जानते? उनका नाम मिष्टर स्मिथ है। वह यहाँके रेसिडेण्ट थे।

आर। कौन? मिष्टर स्मिथ? वाह। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं। एकबार मैं उनका एजण्ट था।

नवाब। आप जानते हैं? वाह दोस्त! मेरे अच्छे दोस्त। अजी मेरे प्यारे दोस्त। आप उन्हें जानते हैं? क्या यही आपने कहा? मैं उनको बहुत प्यार करता था और—पर अब उसका क्या; जाने दीजिये। इनशा अल्लाह। मेरी जान निकली जाती है—क्या करूं? मिष्टर स्मिथके नाम एक एक गिलास और—

सबने फिर एक एक गिलास शराब खतम की।

नवाब। फिर, गिलास भरो। अबके मिस्र स्मिथके नाम दो दो लबालब गिलास।

नवाबके कहनेकी देर थी, दो दो गिलास शराब सबने चढ़ा ली।

नवावको अपने आपेकी सुध न रह । उनके दमागमें खल-बली पड़ गई। कुछ तो शराबका नशा और कुछ तर्कवित-र्कका। धीरे धीरे शराबका जोर बढ़ा। नवावको मदिराने मत-वाला बना दिया।

नवाव। क्या आप इङ्गलण्ड जा मेरे सबसे अच्छे मित्र मिष्टर स्मिथसे भेंट कीजियेगा?

आर। मुझे तो उनसे मिलना ही होगा। मुझे उनसे बहुत काम हैं।

नवावने अपनी रत्नखचित बहुमूल्य घड़ी जेबसे बाहर निकाली। घड़ीपर जो काम था, वह सचमुच ही किसी बड़े कारीगरका किया था। यह घड़ी फ्रान्स—पेरिससे १५ हजार फ्राङ्क यानी अनुमान साढ़े पन्द्रह हजार रुपयेमें मंगाई गई थी। नवावने चेन घड़ी बाहर निकाल मेरे मित्रके गलेमें डाल दी और भद्दी आवजमें कहा,—आप मुझसे यह वादा करें, कि जिसतरह यह चेन मैंने आपके गलेमें पिन्हाई उसीतरह आप इसे मिस स्मिथके गलेमे पिन्हायेंगे। वादा कीजिये।

आर। मैं वादा करता हूं, कि अगर वह मान जायेंगी, तो इसे मैं उनके गलेमें जरूर जरूर पिन्हा दूंगा।

नवाव। उनसे कहिगा, कि इसे मैंने दिया है। खान। लाओ। मेरे इन दोस्तके लिये एक खिलअत—एक दामी खिलअत ला दो। यही नहीं ५ सौ अशरफियां भी दो।

खिलअत यानी नवावको नजर लाई गई—कामदार कश्मीरी शाल और एक रूमाल। स्वयं नवावने उनके गलेमें रूमाल

शाल शाल पिन्हा दिया। पिन्हानेके समय नवाबको इन्तजामका भी सहारा लेना पड़ा था। मिष्टर आरका दम फूल गया। शाल मामूली नहीं, बड़ा कीमती और गर्म्म था। मारे पसीनेके मिष्टर आर शराबोर हो गये। फिर उन्होंने इस अपूर्व गौरवके लिये कृतज्ञता प्रकाश की। सब समय मिष्टर और मिस स्मिथकी तारीफ होते बीत गया। नवाबको सिवा उनकी तारीफके और कोई बात सूझती ही नहीं थी। उन्होंने वह तारीफें सुनाईं, जिनका हाल बयान करनेमें एक बड़ी जिल्द तय्यार होगी। उन तारीफोंको सुनते सुनते मेरा जी उकता गया—यहां उन्हें उल्लिखित करनेकी बात ही दूर रही, परन्तु नवाब मिष्टर और मिस स्मिथकी गुणवर्णना करते ही गये।

नवाब उठे, हमलोग भी उठे। बाहर पालकियां बाट जोह रही थीं।

नवाबने रङ्गमहलमें प्रवेश करनेसे पहले मिष्टर आरसे शेकहैण्ड किया। अभी मिष्टर आरने अपना नया लिबास उतारा नहीं था। हम दोनो साथ ही घर आये।

दूसरे दिन सवेरे, नाश्ता हो जानेके कुछ ही देर बाद नवाबका एक नौकर खिलअतके दक्षिणारूप ५ सौ अशरफि-योंका एक थैला ले आया और थैला मेजपर रख मिष्टर आरके हवाले किया। मिष्टर आरने अशरफियां लेना अस्वीकार किया; परन्तु मैंने बहुत समझाबुझाकर अशरफियां स्वीकार कर लेनेके लिये उन्हें मजबूर किया। नवाबकी वस्तुको अस्वीकार न करना नवाबको नीचा दिखाना है। दरबारी

कायदा है, कि दान दिया जाते हो, उसे ग्रहण कर लेना चाहिये।

इस घटनाके थोड़ी ही देर बाद नवाबके पाससे एक नौकरने आ मुझसे कहा, कि आपको नवाब इसी समय महलमें बुलाते हैं। मैं चटपट महल पहुंचा, पहुंचते ही नवाबने कहा,—

मैं तुम्हारे मित्रसे परम सन्तुष्ट हूं। उसने मुझे मुग्ध कर लिया है; उससे कहो, कि यदि वह यहां ठहर जाये और मेरे यहां नौकरी करे, तो वह मेरा दिली दोस्त बन जायेगा।

हज्जामको यह बातें बहुत बुरी जान पड़ीं। मैं दरवाजे हीपर खड़ा था। उसने आ मुझसे कहा,—"मिष्टर व्यार यहां ठहरेंगे? आप क्या सोचते हैं?"

मैंने जवाब दिया,—मैं नहीं जानता। हां, नवाबकी बातें सुनकर तो वह बहुत प्रसन्न हुये हैं।

मैंने अपने मकान लौट आ मिष्टर व्यारसे नवाबका कथन विदित कर दिया। परन्तु इससे कोई फल न हुआ। उन्होंने इङ्गलैण्ड लौट जाने हीमें अपना लाभ समझा। इस लाभके सामने नवाबका दान कोई काम कर नहीं सका। उन्होंने धन्यवाद दिये, पर अपना सिद्धान्त टलने न दिया। उसी दिन सन्ध्या समय वह लखनऊसे विदा हुए।

पाठक। आप क्या सोचते है? छोटे-बड़े प्रियपात्रोंको हजारोंके हिसाबसे रुपये और सैकड़ोंके हिसाबसे अशरफियां दे, हज्जामके हिसाबमें कोई डेढ़ लाख रुपये हर महीने अपंगा-

कर और तरह तरहकी फजूलखर्ची बढ़ा ननावने शीघ्र ही दिवाला निकाल दिया होगा—यही तो? बहुत ठीक। आपका कहना यथार्थ है। अवधकी नाममात्रकी सालाना आमदनी कई लाख थी; इसी आमदनीसे सैन्य, दरबार और अदालतका खर्च निबाहना पड़ता था। यह बात स्मरण रखना चाहिये, कि नसीरके बाप गाजीउद्दीनके अन्तकालके समय अवधका खजाना भरपूर भरा था, नसीरने यह खजाना खाली कर दिया। प्रजासे कर वसूल करनेके अलावा, आमदनीकी और भी राहें थीं। विचारलयमें अन्यियोपर जुर्माना होता था, जुर्मानेका रुपया नवाबको ही मिलता था। नवाबी घरानेके कई बड़े बड़े अमीर उमरा थे जिनके पास धनकी कमी नहीं थी। नवाब धन देनेके लिये इन्हें भी समय असमयपर बाध्य करते थे। धन-प्राप्तिके इतने साधन मौजूद रहनेपर भी नवाबकी फजूलखर्चीने लखनऊके राजमहलको नसीरके अन्तिम दो वर्ष धनाभावकी वजह बड़ी मुसीबत झेलना पड़ी।

पञ्चम परिच्छेद।

अभी लखनऊके शाही महल फरीदबख्शका पूरा हाल लिखना बाकी है। महलका फैलाव और घिराव बहुत बड़ा। महलके इहातेमें तरह तरहके तालाब बागबगीचे

और भिन्न भिन्न कार्यालय हैं, जो महलकी बाहरी खासियतों या खूबियोंमें शुमार हैं। महलके भीतर जा देखनेसे आं-खोंका चकाचौंध लग जाती। छतमें तरह तरहके फा-नूस टंगे हैं, धारी दीवारें मारे जगमगाहटके देखनेवालोंका मन गम्भीर कर देती हैं, देशविदेशके रत्न और विविध प्रकारकी अनूठी चीजोंसे महलका भीतरी हिस्सा सजा है।

एक राजसिंहासनवाले कमरेको देखनेसे ही टकटकी लग जाती है। अन्यान्य कमरोंकी तरह यह कमरा भी विलायती सामानसे भरा था। नवाबकी नई विलायती चाहने लखनऊकी शाही सजावटमें बहुत कुछ रद्दोबदल कर दिया था। दीवारोंमें सुनहरी दीपाधार या शमादान लगे थे। कमरेके ऊपरसे खिड़-कियोंसे रोशनी आती थी, जिससे कमरा गाम्भीर्यपूर्ण बना चाहता था। यहां अवधके सभी नवाब और बेगमोंकी तसवीरें लगी थीं। बिशप हीबरने बहुत ठीक कहा है, कि नवाब गाजीउद्दी-नके समयका चितेरा तसवीर बनानेमें इतना कुशल था, कि लण्डन या पेरिस जैसे कौशल केन्द्रोंमें भी उसका बड़ा सम्मान होता। अकेले सिंहासन होने कमरेका ऊपरी हिस्सा छक लिया था। सिंहासन बहुत कीमती था। सिंहासन क्या था, एक दो गज लम्बा और इतना ही चौड़ा चबूतरा था, जिसपर चढ़नेके लिये ३ सीढ़ियां थीं। उसकी तीन ओर सोनेके छड़ लगे थे। चबू-तरेका कोर चांदीका था, जिसपर जवाहरात जड़े थे। नसी-रसे पहले जो नवाब हुए, वह इसपर अपने ही ढङ्गसे यानी जिसतरह विलायतके दरजी अपनी दुकानोंमें बैठते हैं, उसी-तरह, बैठते थे। एक तकिया लगा रहता, जिसके सहारे नवाब

अपना सारा शरीर पीछेकी ओर झुका देते थे। परन्तु नसीरके बैठनेका यह तरीका नहीं था; क्योंकि नसीर विलायती बाना ज्यादा पसन्द करते थे। तकिया या मसनदकी जगह, नसीरके समय हाथीदांत और सोनेकी कुरसी लगाई जाती थी।

राजसिंहासनपर, डण्डेके सहारे एक छत्र लगा था। डण्डे काठके थे सही, पर उनपर सोना चढ़ाया गया था। छत्र और डण्डोंमें जवाहरात जड़े थे। छत्रमें एक बड़ा हीरा चमक रहा था; जो पृथिवीपर बेजोड़ बताया जाता है। छत्रमें टंगे फानूस रङ्गबरङ्ग थे और उनके नीचे मोतियोंकी झालरें लगी थीं। राजसिंहासनके दाहने रेसिडण्टके लिये सदा ही एक सुनहली कुरसी लगी रहती थी।

सार्व्वजनिक दरबार या सरकारी सभाओंके अवसरपर अवधके अमीर-उमरा और रेसिडण्टके इच्छानुसार अङ्गरेज अफसर नवाबसे मिलते थे। नवाबके दर्शनके लिये जो लोग आते थे, वह सबसे पहले नवाबको नजर देते थे। नजर देनेका तरीका पहले लिखा जा चुका है। जब नवाब नजरसे बहुत ही सन्तुष्ट होते, तब नजरको हाथ लगाते और जब उदासीन रहते, तब सिर्फ सिर ही हिला देते थे। प्रधान मन्त्री नजर ले तख्तके दाहने रख देते थे। इसपर नजर देनेवाला अपने निर्द्दिष्ट स्थानपर बैठ जाता था। युरोपियन दाहने और हिन्दुस्थानी बायें बैठते थे। यह हो जानेपर नवाब रेसिडण्टके गलेमें हार पिन्हाते जिसके बाद सब नजर देनेवाले भवनके मध्यमें आ उपस्थित होते थे। यहां नवाब या रेसिडण्ट जिनका सम्मान करना चाहते, उनके गले-हार पिन्हाया जाता था। यह हार प्रायः चांदीके

होते। हम घराऊ नौकरोंको ऐसे हार कई बार मिले, जिन्हें हमलोग किसी जौहरीके हाथ बेच डालते थे। इनकी कीमत ५ से २५ रुपयेतक मिल जाती थी।

इन सब विधियोंके हो चुकनेपर दरबार बरखास्त होता था। नवाब रेसिडराटको दरवाजेतक पहुंचा आते थे, विदा होनेके समय कहते, खुदा हाफिज, यानी ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। इसके बाद नवाब अपनी प्राइवेट कोठरीमें जाते थे। यहां हमलोग उनकी राह देखते हुए पहले हीसे बैठे रहते थे। आते ही वह ताज बड़ी बेहूदगीके साथ एक ओर धर लिबास उतार फेंकते थे और प्रायः चिल्ला उठते,—

उफ। ताज बेताज, सब हुआ, शुक्र खुदाका! अल्लाअल्लाह। मारे प्यासके मेरी जान निकली जाती है। यह सब तक्लीफके ही सामान हैं।

शाही इमामबाड़ा शाह नजफके नामसे मशहूर है। लखनऊमें यह सबसे सुन्दर इमारत है—कारीगरीमें बेजोड़।

मुहर्रमका जलसा मनानेके लिये मुसलमानोंकी शीया जाति जो इमारत बनवाती है, उसे इमामबाड़ा कहते हैं। मुहर्रमके सम्बन्धमे इसके बादके परिच्छेदमें बहुत कुछ लिखा जायेगा। हरेक बड़े घरानेकी ओरसे अलग अलग मुहर्रम मनाया जाता है और सभी कर्त्ता पुरुष उसमें तनमनधनसे शरीक होते हैं।

शाही इमामबाड़ा लखनऊके 'रूमी दरवाजा'के पास है। इमामबाड़ा और यह दरवाजा, दोनों कारीगरोंके विशेष नमूने हैं। इमामबाड़ेके बाहर दो बड़े चौकोर प्राङ्गण हैं, जिनके फर्शमें

कीमती पत्थर जड़े हैं। यह प्राङ्गण भी अपने शाही सजावसे सुशोभित हैं।

इमामबाड़ेका बनाव, विशप हीबरके मतसे, यानी विलायती 'गाथ' इमारतोंसे बहुत मेल खाता है। इसका कुछ हिस्सा हिन्दूके मन्दिरकी तरह और कुछ मुसलमानके मसजिदकी तरह है। इसके बनावमें कलादृष्टिसे कोई न्यूनता नहीं। इसका मध्य भवन १ सौ ५० फुट लम्बा और ५० फुट चौड़ा है—चारों ओर बहुमूल्य झाड़ और आईने लगे हैं। एक विख्यात लेखकने इसकी सजावटकी प्रशंसा करते हुए लिखा है, कि नवाब आसिफुद्दौलहने सिर्फ आईने और बत्तीके झाड़ मंगानेमें ही १ करोड़ ५० लाख रुपया खर्च कर दिया था। मालूम होता है, कि लेखकके इस कथनमें कुछ अत्युक्ति भी है।

इमामबाड़ेसे ही अब कान्सटन शियाकी ओर चलिये। यह इमारतोंका एक समूह है। बहुतसा धन खर्च कर जनरल मारटीनने बनाया था। मारटीन फ्रान्सके रहनेवाले थे। पहले पहल जब वह इस देशमें आये, तब कम्पनीकी फौजमें एक मामूली सिपाही थे। कम्पनीने उन्हें अवधके नवाबकी फौजमें भेज दिया। लखनऊ आनेपर उनका भाग्यपट खुला और वह एक बड़े सेनापति गिने जाने लगे। उच्चपद और मानसम्मानके साथ साथ उन्होंने बहुतसा धन भी एकत्रित किया। उस समय नवाब सआदत अली लखनऊके राजसिंहासनपर विराजमान थे। सआदतअली और मारटीनके बीच प्रेमभाव घनीभूत हो जानेका एक कारण यह भी था, कि जिस मुर्गकी लड़ाईका शौक सआदत-

अलीको थो, उसीमें मारटीन बहुत ही निपुण थे। सआदत अली प्रायः मारटीनके साथ बाजी लगाकर मुर्गकी लड़ाई कराते थे।

जनरल मारटीन फ्रान्सके लायन्स नगरमें उत्पन्न हुए। धनश्रीने उन्हें लखनऊ बुला लिया और उन्हें हर तरहसे प्रसन्न रखा। मारटीन अपनी धनश्रीके लखनऊको और अपनी जन्मदात्री माता लायन्स नगरीको कभी नहीं भूले। उन्होंने लायन्सके अनाथ बालकोंकी शिक्षाके लिये १ लाख पाउण्ड या १५ लाख रुपये अर्पण कर दिया। इसीतरह कलकत्तेके अनाथ विद्यालयके लिये उन्होंने इतना ही नकद रुपया दे दिया था और लखनऊके किसी ऐसे ही सार्व्वत्रिक उपकारालयमें उन्होंने बहुतसा धन प्रदान किया था। तीनों संस्थायें 'La [illegible]tiniere' यानी उन्हींके नामसे चल रही हैं। उनके रहनेका स्थान कन्सटनशिया ही था। यह अब उन्हींकी इच्छासे मदरसा बनाई गई है। हिन्दुस्तानमें आनेसे पहले जनरल मारटीन एक फ्रेञ्च महिलाके प्रेमपाशमें आबद्ध थे। धनकी लालसासे उन्हें उस रमणीका विछोह सहना पड़ा, दुःखका विषय यही है, कि जनरल मारटीनके धन-दौलत और मान-सम्मान प्राप्त करनेके समयतक वह जीवित न रही—कृतान्त कालने उसे पहले ही इहलोकसे परलोक भेज दिया। सआदतअलीसे यद्यपि जनरल मारटीनका वेबनाव नहीं था, तथापि मारटीनके हृदयमें इस सन्देहजनित भयने स्थान पा लिया था, कि उनके मर जानेके पश्चात् उनके आवासस्थान और अन्यान्य इमारतोंका उनके उद्दिष्ट हेतुसे कहीं भिन्न उपयोग हो। इसीलिये उन्होंने मृत्युके समय अपनेको कन्स[illegible]

नीचे गाड़नेकी प्रार्थना की उनके प्रार्थनानुसार वह कान्सटनशिआमें ही दफ़न किये गये। मुसलमान, चाहे वह कैसे ही क्रूर क्यों न हो, सदा कब्रको इज्जतकी निगाहसे ही देखेंगे। मारटीनकी कब्र समागत अतिथियोंको दिखाई जाती है। वहींपर उनकी एक पत्थरकी मूर्त्ति भी खड़ी की गई है, जिसके पास ही दो रङ्गीन सिपाहियोंकी प्रतिमायें हैं। सचमुच ही यह स्थान देखने योग्य है।

मारटीनके मर जानेपर उनका सब सामान नीलाम किया गया। कम्पनीके नौकरोंने आईने और बत्तीके झाड़ खरीद लिये और उनसे कलकत्तेके गवरनर जनरलका महल सुशोभित किया। नीलामका सौदा ठीक नहीं हुआ; कम्पनीके नौकरोंको सआदतअली नवाब किसी बातसे रोक सकते नहीं थे। कम्पनी सिर्फ इसलिये सन्तुष्ट हुई, कि उसके नौकरोंने व्यापार विषयक धूर्त्ततामें बड़ी निपुणता दिखाई। बिसातियों जैसा ही कम्पनीका व्यवहार हुआ।

कान्सटनशिआके मैदानका एक हिस्सा देख वरसेलिसके बाग-की याद आती है। सफेद पत्थरोंकी प्रशस्त राहका दूरतक विस्तार देख सुदूरगामी गभीर जलविस्तारका आभास मालूम होता है। स्थान अद्‌भुत है; कीमती पत्थर जड़े हैं, सफाई और सुथराईमें कोई कसर नहीं; दोनो ओर वृक्षोंकी कतार लगी है, सब कुछ है, परन्तु उसकी विराट्‌ताके नामसे सब रमणीयता शिर झुकाये है, उसके विकासकी आभा भी दृष्टिगोचर नहीं होती।

प्राङ्गण और बुर्ज युरोपियन ढङ्गके हैं; कब्र और मीनार एशियाई ढङ्गके। भीतरतक कमरोंका कुछ हिस्सा युरोपियन

कारीगरीका नमूना पेश करता है और कुछ हिस्सा हिन्दुस्थानी कौशलका परिचय देता है।

लखनऊके बाजार और मसजिदें हिन्दुस्थानके अन्यान्य शहरोंसे इतनी भिन्न नहीं, कि उनका भी वर्णन यहां किया जाये। लखनऊके बाजारोंमें अगर कोई विशेषता है, तो वह सिर्फ यही, कि लखनऊके सैनिक अपने सिपाहियाना बानेमे बाजारोंमें घूमते फिरते प्रायः दिखाई देते हैं। लखनऊके अमीर जब घरसे बाहर निकलते हैं, तब उनके साथ कई शरीररक्षक भी चलते हैं। जो जितने बड़े या सम्मानित हैं, उनके साथ उतना ही बड़ा जमाव होना चाहिये। एक और बात है; राह-चलते बड़ोंके दल प्रायः परस्पर भिड़ जाते हैं और रोज ही एकाध छोटीसी लड़ाई हो जाया करती है। लड़ाई तङ्ग गलीमें ही होती हैं; क्योंकि यहीं दो दलोंका परस्पर भिड़ जाना बहुत सम्भव है। जब ऐसे दो दल भिड़ जाते हैं, तब तलवारोंकी खनखनाहटके साथ साथ मार मारकी चिल्लाहट भी नगरको भयभीत करनेमें सहायता देती है। ऐसे समय जो शान्तिप्रिय हैं, या कायर हैं, वह घटना-स्थलसे यथासम्भव दूर चल देते हैं; परन्तु जो अपनेको वीर कहते हैं, या जिन्हें मारकाट, लूटता-राज या झगड़ा-फसाद बहुत प्रिय है, वह आ पहुंचते हैं, जिससे हुल्लड़का जोर बढ़ता ही जाता है। हिन्दुस्थानी समाचारपत्रों और मासिकपत्रोंसे मालूम होता है, कि लखनऊमें अब भी यही हाल है। सन् १८३५ ई०में लखनऊकी जो दशा थी, वही दशा सन् १८५५ ई०मे भी दिखाई दी।

लखनऊके बड़े मकानोंके सम्बन्धमे एक बात मैं लिखना भूल

गया। लखनऊके मकानोंमें तहखाने होते हैं। गर्म्मीके दिनोंमें जब धूप अपना जोर दिखाती है, तब माकानदार इन्हीं तहखानोंमें आते हैं, और आराम करते हैं। आश्चर्य इस बातका है, कि इन्तहाकी गर्म्मी बचनेके लिये लोग इन्तहाकी ही प्रसं भोगने नीचे तहखानोंमें जा बैठते हैं।

नवाबके महलमें भी ऐसा ही एक तहखाना था; हम युरोपियनोंके लिये तो यह मानो कालकोठरी था—सांस लेना मुश्किल हो जाता था। ऊपरके कमरोंमें गर्म्मीका जोर; पर तहखानोंमें बैठनेकी अपेक्षा ऊपर बैठना ही हमलोगोंको अच्छा जान पड़ता था। मैं गर्म्मी एकबार सह ले सकता था, पर नीचेकी सर्दी, यहांकी बदहवा नहीं, सौभाग्यवश हमलोग नीचे बहुत कम बुलाये जाते थे। स्वयं नवाब तहखाना बहुत अच्छा समझते नहीं थे। जब हमलोग महलमें नवाबके साथ बैठते थे, तब गर्म्मीका उतना जोर प्रतीत होता नहीं था, क्योंकि पङ्खा झलने वाली लौंडियां मौजूद रहती थीं। नवाब कभी कभी तहखानेमें जा बैठते थे; इसलिये नहीं, कि वहां उन्हें कुछ आराम मिलता था, बल्कि इसलिये, कि लखनऊके सभी नवाब गर्म्मीके दिनों वहां बैठा करते थे।

लखनऊके बाजारोंमें भिखारियोंकी खूब भीड़ रहती है। बाजारकी यह भी एक विशेषता समझिये। कितने ही लेखकोंने इस सम्बन्धसे पृष्ठके पृष्ठ लिख डाले हैं। मैं नहीं समझता, कि अब उनके सम्बन्धमें कुछ लिखनेकी आवश्यकता है। इटलीके बाजारोंमें भी भिखारियोंकी दुतर्फा खड़ी कतार दिखाई देती है। लखनऊके भिखारियोंमें विशेषता यह थी, कि इनमें

रुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंकी संख्या अधिक रहती है, विशेषतः
द्ध स्त्रियोंकी। पहलेके लेखकोंने इसी बातको कुछ बढ़ाकर
लखा है।

सिर्फ बाजारमें ही नहीं, लखनऊके बड़े से बड़े बाजारसे ले
छोटेसे छोटे हाटतक, हरेक गलीकूचेमें निर्द्धन, नङ्गे, लूले और
हर तरहके दुःखी और दीन भिखारी दिखाई देते हैं। कोई
खड़ा है कोई बैठा है और कोई लेटा है। कोई सिसक
सिसकर रो रहा है, कोई मारे भूखके चिल्ला रहा है, कोई अपने
पत्थल प्राप्त करनेकी बाट जोह रहा है, कोई अपने जखमोंसे
मवाद बाहर निकल रहा है और कोई जखोंपर बैठी मक्खियोंको
भाल्लाकर उड़ा रहा है। लखनऊकी आलीशान इमारतोंके नीचे
बड़ी बड़ी सड़कोंपर या छोटी छोटी तङ्ग गलियोंमें चारों ओर
यही दृश्य दिखाई देता है। भिखारियोंमें बहुतेरे ऐसे निकम्मे
पुरुष और अकर्म्मण्य स्त्रियां हैं, जो मुफ्तका खानेकी
इच्छासे ही भिखारी बन जाती हैं। समय समयपर धर्म्मोत्सव
होते हैं, और ऐसे समय भिखारियोंकी खब बनती है। इससे
भिखारियोंकी संख्या बढ़ती ही जाती है। बिना उद्योग किये
जब कुछ हाथ नहीं आता, तब उनकी धीरता देखिये—वह चुप-
चाप बैठे रहेंगे; पर कोई उद्योग न करेंगे। सचमुच ही यह
धीरताका कमाल है। भिखारियोंके जीवन-निर्व्वाह, नित्यनैमि-
त्तिक कर्म्मादि और उनके गुणावगुण देख पाश्चात्य देशवासियोंको
आश्चर्य्यचकित होना पड़ता है। भिखारियोंके पास अस्त्रशस्त्र
भी रहते हैं। अस्त्रशस्त्र अपने पास रखना उन्हें बहुत प्यारा
और गौरवयुक्त जान पड़ता है। ढाल-तलवार लिये गलकूचोंपर

साव देता भिखारी राहचलते भलेआदमीके सामने खड़ा हो जाता है और बेधड़क हाथ पसारता है। प्रायः वह योंही कहता है,—"मुझ बन्देपर आफतावकी रोशनी पड़ी है; जरूर ही कुछ मिलेगा।" दाता हुए, आफताब; भिखारी खयाल करता है, कि इससे मजदूरको एक दिनकी मजदूरी मिल जायेगी। अगर आप उसे कुछ न दे झिड़ककर चले जायें, तो फिर अपनी मा-बहनोंके सम्बन्धमें उसकी राय धीमी आवाजमे पर साफ साफ सुन लीजिये। भिखारोकी राय हदसे अधिक साफ और बुद्धिमत्ताकी होती है—उसका अनुवाद हो नहीं सकता।

भिखारियोंका पेशा किसी तरह बुरा समझा नहीं जाता। जब किसी अमीरके सन्तान उत्पन्न होता है या उसके किसी रिश्तादारका विवाह होता है, तब यह उससे बेलगामकी जुबानसे रुपये पैसे मांगने लगते हैं। मुहर्रम आदि धर्म्मोत्सवों या विवाहादिक मङ्गलोत्सवोंपर कितने ही लोग भिखारी बन जाते हैं। मेरे लखनऊमें रहते एक भिखारी था, जिसके एक हाथी था और जो नित्य अपने आश्रयदाताओंके पास हाथ पसारने पहुंचता था।

षष्ठ परिच्छेद।

एक दिन सवेरे मैं एक घोड़ागाड़ीपर सवार हो लखनऊकी किसी साफ और सुथरी राहसे जा रहा था। मेरे साथ मेरे एक

मित्र भी थे; हम दोनो गोमतीकी ओरसे नवाबके किसी महलकी ओर जा रहे थे। राहका वह सन्नाटा आश्चर्यान्वित कर रहा था। बहुत दूर चले जानेपर भी कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया, यदि कहीं अचानक कोई मनुष्य दिखाई दिया तो उसकी फुरतीली चालसे यही मालूम होता था, कि वह बहुत जलदीमें है। जहां मनचले नवाबकी मनमानी नवाबी ही कानून है, वहां नित्य ही नये गुल खिलते—नित्य ही नया रङ्ग बदलता रहता और वहांके रङ्गको रङ्गारङ्गी देख अङ्गरेज अजनबीके आश्चर्यका वारापार नहीं रहता, परन्तु हम तो अजनबी थे नहीं; हम जो बात रोज देखते उससे क्यों आश्चर्यान्वित होने लगे। हमारी आपसकी कानाफूसीसे तय पाया, कि आज किसी न किसी प्रजापर नवाबके कोपातिरेकरूप कृत्रिम कृतान्तका आक्रमण होनेवाला है—नवाबीका कोई ताना नमूना पेश होनेवाला है—बस और कुछ नहीं।

आधी राह तयकर जब हम आगे बढ़ने लगे, तब देखा, कि पास ही एक कुचला हुआ और खूनसे शराबोर मांसपिण्ड पड़ा है, जिसकी सूरत शकल अब भी मनुष्याकृतिसे बहुत कुछ मिलती-जुलती है। "गाड़ी रोक दो" कहते ही गाड़ी रुक गई। हम मांसपिण्डकी परीक्षा करने लगे। देखा, कि एक गरीब स्त्रीकी लाश है; स्त्रीकी सूरत इतनी बिगड़ गई थी, कि देखनेसे भय उत्पन्न होता था। देहके सभी अवयव किसी शैतानने कुचल डाले थे, मानो बोटी बोटी काट डालनेकी चेष्टा की गई थी; स्त्रीकी देहपर जो रहीसही पोशाक थी; वह भी बचने न पाई थी, चेहरेको मानो शैतानके दांतोने कुचलकर एक अजीब और डरावनी चीज बना दिया था; लम्बे लम्बे

बाल शिरसे अलग जमीनपर तितरवितर हो पड़े थे; खूनसे शराबोर हो जमीनमें जम गये थे। इससे भी भयानक दृश्य और कौनसा हो सकता है? जाहिरा तो वह मर ही चुकी थी; इसलिये वहांसे हम तुरन्त विदा हुए।

हम आगे बढ़े; पुरुषोंकी चिल्लाहट या स्त्रियोंकी चुल बुलाहट कहीं कुछ सुनाई नहीं देती थी—सब सुनसान। सब मकान और इमारतें एकबारगी बन्द थीं। बेसासका डर अपना अमल फैला रहा था। कुछ दूर पहुंचते ही एक और लाश सड़कपर पड़ी दिखाई दी। यह लाश एक नौजवान पुरुषकी थी; इसकी भी वही दुर्दशा थी। पास ही एक मकानकी छतपर खड़ा नवाबका एक तुर्क सवार सड़ककी ओर, यानी जिस सड़कसे हम जा रहे थे, उसीकी ओर आंख गड़ाकर देख रहा था।

मैंने पूछा,—क्या बात है?

सवारने जवाब दिया,—मनुष्य-भक्षक निकल भागा है, वल्लाह। फिर आया चाहता है। साहब आप अपने बचनेकी तरकीब सोचिये; आज वह बहुत ही मतवाला हो उठा है।

एक जङ्गली घोड़ेका हाल मैंने सुना था। वह घोड़ा नवाबके किसी तुर्क-सवारका था। इसका नाम था, मनुष्य-भक्षक; क्योंकि कितने ही मनुष्योंको इसने घायलकर मार डाला था।

मकानकी छतसे सवार चिल्ला उठा,—साहब। वह आया; सावधान!

देखा,—दूरसे घोड़ा आ रहा है। उसका डील बहुत लम्बा चौड़ा और मजबूत है। उसने अपने दांतोंमें एक बच्चा दबा

लिया था—उसीको बेतरह झकझोरता हुआ हमारी ही ओर आ रहा है।

दूसरे ही क्षण उसकी दृष्टि गाड़ीपर पड़ी। बच्चेको एक ओर फेंक, हमारी ओर लपकता हुआ बड़े वेगसे आने लगा। अभी कुछ कदमका फासिला था; इतना काल अपने बचावका उपाय सोचते ही बीत गया। हम फिरे, हमारा घोड़ा मारे डरके भड़क उठा अपनी सारी शक्ति खर्चकर भागने लगा और हम एक लौहकपाटवाले घिरावमें घुस गये, जिसे हम अभी पीछे छोड़ आगे चल पड़े थे; मनुष्य-भक्षक पीछा कर ही रहा था। उसकी कानके परदे फाड़नेवाली हिनहिनाहट सुनाई दे रही थी।

घिरावमें पहुंचते ही लौहकपाट पहले बन्द कर दिया और हम सुस्ताने लगे। वह बस एक क्षणका काम था। इतने हीमें मनुष्य भक्षक आ पहुंचा। उसका शिर रक्तसे तरबतर था और मुंह तथा जबड़ोंसे खून निकल रहा था। लौहकपाटके बाहर हीसे वह हमारी ओर तेज निगाहसे देखने लगा। उसकी वह चमकती बड़ी बड़ी आंखें, खड़े लम्बे कान और फूले नथुने और साथ साथ उसकी रक्तप्लावित विशाल देह, आंखोंके सामने एक भयानक दृश्य उपस्थित करती थी। वह घोड़ा क्या था, मनुष्य भक्षक शैतान था। देखकर नसें ढीली पड़ जाती थीं। हमारा घोड़ा उसका वह सर्व्वसंहारकारी विराट् रूप देख और गर्ज्जन सुन भयसे थरथर कांपने लगा। मनुष्य-भक्षकने उस छड़दार घिरावमें आनेकी हर तरहसे चेष्टा की—कोई बात उठा न रखी; पर वह छड़ लोहेके थे; मनुष्य-

भक्षक होने ही वह क्या कर सकता था? सब प्रयत्न निष्फल हो चुकनेपर जोरसे हिनहिनाता हुआ मनुष्य-भक्षक सड़ककी ओर सरपट चल पड़ा और पास होकी मिहराबदार राहकी ओर झपटा। यहां कितने ही तुर्क-सवार उसकी राह देख रहे थे। घोड़ा शिर उठाये था। बड़ी होशियारीके साथ उसके शिरमें फन्दा डाल दिया गया। घोड़ा छटपटाने लगा; पर क्या करता? अस्तबल पहुंचा दिया गया। पाठक! आप उस वृद्धा स्त्री, युवा पुरुष और बालककी दशा जानना चाहते हैं? परन्तु मैंने उनके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं सुना। यह तो बनी बनाई बात है, कि उनके मित्रोंने उनका अनुसन्धानकर उचित कारवाई की होगी।

खाना खानेके समय मैंने यह वारदात नवाबको कह सुनाई।

नवाब बोले—हां, उस मनुष्य-भक्षकके बारेमें कई बार ऐसी ही शिकायतें सुन चुका हूं। मालूम होता है, कि वह कोई भयङ्कर जानवर है।

मैं। शेरसे भी बढ़कर खूंखार है, हुजूर!

नवाब। शेरसे भी बढ़कर......अच्छा; शेरसे उसका सामना हो। देखें, 'बढ़िया' उसपर क्या असर डालता है।

बढ़िया नवाबके एक अजीज शेरका नाम था। यह शेर हिमाचल पर्वतकी तराईके किसी बढ़िया नामक ग्रामसे लाया गया था। इसीलिये शेरका भी नाम बढ़िया ही हुआ। नवाबको इससे बड़ा स्नेह था; यह कभी किसी शेर या हाथीसे लड़ाया जाता नहीं था,—सिर्फ उन्हीं जानवरोंसे मुकाबला करता, जिन्ह

यह बिना दिक्कतके मार सकता था। मतलब यह, कि बढ़ियाके दिन बड़े सुखसे कटते थे।

दूसरे ही दिन चैनगञ्जमें लड़ाईका आयोजन हुआ। ६० गज लम्बे और इतने ही चौड़े प्राङ्गणमें सब लोग एकत्रित हुए। प्राङ्गण चारो ओरसे बड़ी बड़ी इमारतोंसे घिरा था। प्राङ्गणके निम्नपार्श्वमें एक बरामदा था। बरामदेके सामने बांस गाड़कर अखाड़ेका इहाता काइम किया गया था। सब तय्यारी हुई; अब मनुष्य-भक्षक आना चाहिये। उसे ले आना कोई मामूली बात नहीं। यदि कोई सवार उसे भीतर ले आनेकी चेष्टा करता तो शायद उसकी जानपर बीतती। इसलिये एक तरकीब निकाली गई।

दुर्द्धर्ष, उद्दण्ड और महापराक्रमी पुरुषको वशीभूत करनेमें एक स्त्री जितनी सहायता दे सकती है, उतनी सहायता और किसीसे मिलना असम्भव है। मानवीय प्रपञ्चमे यदि यह बात सत्य है, तो पाशविक प्रपञ्च भी इससे अलग नहीं। बेतहाशा भड़क गये घोड़ेको घोड़ी ही फुसलाकर ठिकाने ला सकती है। मनुष्य भक्षकको अखाड़ेमें एक घोड़ी ही फुसलाकर ले आई।

नवाब अपनी लौंडियों समेत आये और गेलरीमें रखे पलंग-पर विराजमान हुए। लौंडियां पीछे करीनेसे खड़ी हो गईं। हमलोग नवाबके दाहने बांए पलंगसे सटे खड़े हुए। नवाबकी स्त्रियां योग्य स्थानपर बैठी थीं। सब कोई तमाशा मजेसे देख सकते थे।

हुक्म पाते ही नौकर बढ़ियाका पिञ्जरा ले आये। अखा-

ड़ेका फाटक बन्द हुआ और पिञ्जरेका दरवाजा खोल दिया गया। बढ़िया अखाड़ेमें कूद पड़ा और दुम फटकारता हुआ मनुष्य-भक्षक और उसकी घोड़ीकी ओर देख गुर्राने लगा। बढ़िया जैसे शेर हिन्दुस्थानमें बहुत ही कम पाये जाते हैं। उसकी सुन्दरता बेजोड़ थी; बढ़ियाकी धारीदार देह बिलकुल साफ और चिकनी थी। मनुष्य-भक्षकका शरीर भी चमकीला था। परन्तु बढ़ियाके मुकाबले उसकी चमक किसी गिनतीमें नहीं। बढ़ियाके मैदानमें उतरते ही मनुष्य-भक्षकका वह चमकीला रङ्ग फीका पड़ गया।

शेर दो दिनका भूखा था। उसे इसलिये खाना दिया नहीं गया, कि वह आक्रमणके समय खूंखार बन जाये। आते ही वह घोड़ा-घोड़ीकी ओर देखता क्या था, अग्नि बरसा रहा था। धीरे धीरे बढ़ियाने अपने कदम आगे बढ़ाये। प्रत्, परस्परको अच्छीतरह देखने लगे। घोड़ेकी पलक एक क्षणभरके लिये भी न झपकी। शिर नीचाकर और एक पैर आगे बढ़ाकर वह आक्रमणके लिये तय्यार हो गया। बढ़िया जो चाल चलता था, घोड़ा उसीके अनुसार अपना पैतरा बदलता था। यह सब करते हुए भी, वह आंख गड़ाये शेरकी ओर एकटक देख रहा था। परन्तु उस बेचारी घोड़ी की मट्टी खराब थी; मारे डरके वह हिलने डोलनेसे भी बाज आई थी—मानो खड़ी खड़ी पत्थरकी तरह निर्जीव हो गई थी। उसके दिलमें अगर कोई खयाल आया हो, तो वह यही था, कि अब मैं मरी। एक क्षणकी देर थी, बढ़िया घोड़ीपर झपट पड़ा। एक पञ्जा जमा घोड़ीको जमीनपर लेटा दिया और उसकी गर्दन अपने दांतोंमें दबा बड़े चावसे उसका

खून पी अपनी प्यास बुझाने लगा। यह सिर्फ खूँरेजी हुई; क्योंकि इसमें कोई रोकटोक हो नहीं थी।

यह काम ४।५ मिनटमें तमाम हुआ। मनुष्य-भक्षककी ओर निगाह गई। दोनो एक दूसरेको फिर देखने लगे। मनुष्य-भक्षक वीर्य्यशाली रणरङ्गरञ्जित शत्रुदलनकारी महापराक्रमी वीरकी तरह शेरकी ओर एक टक निहारता रहा। उसने जरा भी भय प्रकाश नहीं किया। अभीतक शेर घोड़ीकी रक्तशून्य देहसे अलग हुआ नहीं था। घोड़ेने जब देखा, कि अब शेर झपटा चाहता है, तब उसने अपना पैंतरा ठीक किया और बड़े गम्भीरभावसे आक्रमणकारीके आनेकी राह देखने लगा। शेर घोड़ीकी देहसे अलग हो बिल्लीकी तरह चुपके चुपके पीछे हटा और अखाड़ेकी प्रदक्षिणा करने लगा। शेरने कोई ध्वनि नहींकी। इसके बाद किसी पटाबाजकी तरह शेर उछल-कूद करने लगा— मानो दांव पेंच दिखा रहा था। इस समयका दृश्य कुछ विचित्र हो था—जल्द भूलनेवाला नहीं। नवाब देख रहे थे; लौंडियां देख रही थीं। युरोपियन तमाशाई भी बड़े गौरसे देख रहे थे; घोड़ेके पैंतरा बदलनेके समय उसके टापकी आवाजके अतिरिक्त कोई ध्वनि कर्णगोचर होती नहीं थी। सन्नाटा बढ़ता जाता था; परन्तु साथ हो लोगोंकी चिन्ता भी बढ़ती जाती थी।

मौका देखकर शेर मनुष्य भक्षकपर झपट पड़ा; घोड़ा भी तय्यार था। शेर चाहता था, कि घोड़ेका शिर नोच लें; परन्तु मनुष्य-भक्षक सावधान था, उसने शेरके झपटते हो उसे दे मारा। शेर चारो शाने चित गिर पड़ा; फिर

चढ़ाईकर शेरने घोड़े की टांगोमें गहरी चोट पहुंचाई। घोड़ा ऐसा वैसा नहीं था; उसने अपने शिरके बल शेरको उठा लिया और जमीनपर जोरसे पटक दिया। शेरको गहरा जखम आया, पर वह शेर ही था; फिर उठा और पहलेकी तरह फिर चक्कर देने लगा। घोड़े ने भी अपना पैतरा बदल पहला स्थान अधिकार कर लिया। घोड़े की देहसे खून बह रहा था; फिर भी वह एक डग भी पीछे न हिगा।

पास ही बैठे एक युरोपियनसे नवाबने कहा,—अब भी बढ़िया मार लेगा।

सुसाहिब। हां, हुजूर। ऐसा ही होगा।

मत्त गयन्दकी तरह बढ़िया झूम रहा था; शेर,की प्रदक्षिणा कर रहा था—चक्कर दे रहा था। बीच बीचमें वह घोड़ेकी ओर देखता और गरजता था। घोड़ा शिर नीचा किये बड़ी तेज निगाहसे उसको देख रहा था। शेर घोड़े को डरानेके लिये कितनी चालें चलता; पर मनुष्य-भक्षकने गम्भीर-भाव धारण किया था। कई घण्टे योंही बीत गये।

अन्तमें फैसलेका समय आया। एकाएक शेर उछल पड़ा, —यह काम इतनी जलदी हुआ, कि देखनेवाले चौंक पड़े—नवाबके एक नौकरके तो डरके मारे होश हवास उड़ गये। शेरने किसी तरहकी गुर्राहट नहीं की—न घोड़ा ही हिनहिनाया।

शेरके आक्रमणके साथ ही घोड़े ने अपना शिर और नीचे कर लिया। शेरने घोड़े के मुंहपर एक तमाचा जमा ही तो दिया। इसके बाद घोड़े ने पैरसे काम लेना आरम्भ किया।

शेरने पैरपर आघातकर। पीठपर सवार होनेकी चेष्टा की; परन्तु घोड़ेने पैरोंकी ठोकरोंसे शेरको इस कदर चोट पहुंचाई, कि शेर छटपटाकर जमीनपर पीठके बल गिर गया।

थोड़ी देर इसी अवस्थामें पड़ा रहनेके बाद शेर फिर उठा और पहलेकी तरह चक्कर देने लगा। अबके उसका वह पहला जोश दिखाई देता नहीं था। मालूम होता था, कि अब वह घोड़ेपर फिर आक्रमण करनेके बदले भाग ही जायेगा। वह घोड़ेकी ओर ताकता नहीं था, भाग जानेकी राह ही ढूंढ रहा था। उसका जबड़ा टूट गया था। वह पहलेकी तरह चक्कर देता हुआ, पिछली टांगोंके बीच दुम दबाये कुत्तेकी तरह चीखने लगा। घोड़ा वीरकी तरह शेरकी ओर तेज निगाहसे देखता रहा। इतनेमें गेलरीसे किसीने कहा, कि बढ़ियाका जबड़ा फट गया है। यह आवाज नवाबके कानोंतक पहुंचा।

नवाब। बढ़ियाका जबड़ा फट गया। तो उसका बचाव क्यों न हो?

हम। हुजूर जो फरमायें।

इशारा पाते ही नौकरोंने पिञ्जरेका दरवाजा खोल दिया; शेर पिञ्जरेके भीतर घुस गया और एक कोनेमें सिकुड़कर बैठ गया।

मनुष्य-भक्षकने जब देखा, कि मेरी ही जीत हुई, तो वह अखाड़ेमें भयङ्कर दृश्य उपस्थित करने लगा। पहले वह मरी घोड़ीके पास गया; शिरसे पैरतक उसे देखभालकर जब उसने मालूम किया, कि घोड़ी जीवित नहीं, तब उसका दमाग भड़क गया—खून खौलने लगा और वह अखाड़ेमें ओरसे छोरतक

उछलने-कूदने लगा ; इस जोरसे हिनहिनाने लगा—मानो घोड़ा नहीं शेर गरज रहा है। घोड़ा चाहता था, कि अखाड़ेके इहातेके बाहर जो नवाबके नौकर हैं, उन्हींको मट्टीमें मिला दिलका गुबार निकाल लूं, क्योंकि घोड़ीको किसने हत्या की, यह जाननेको तो उसे फुरसत ही नहीं थी।

नवाबने देखा, कि तमाशेकी वजह अब महाअनर्थ हुआ चाहता है। तब उन्होंने अपने हिन्दुस्थानी नौकरोंसे कहा—"घोड़ेपर अब दूसरा शेर छोड़ो। उसने बढ़ियाको गहरा जखम पहुंचाया है। मैं बिना इसका बदला लिये रह नहीं सकता।" बदला लेनेकी बात धीमी आवाजमें सिर्फ युरोपियन नौकरोंसे कही गई। हमलोगोंने हाथ मलते हुए हंस दिया और कहा,—बहुत ठीक।

नवाब। घोड़ेने पिछले पैरोंसे जो आघात किया, वह बहुत ही भयङ्कर था।

हममें एक। हां, हुजूर। वह बहुत ही भयङ्कर था; उससे बढ़ियाके जबड़ेकी हड्डीमें सख्त जखम आया है।

इसीतरह बातें चल रही थी; इस बीचमें एक मनुष्यने आकर नवाबसे कहा,—शेरोंका रखवाला आना चाहता है।

नवाब। आने दो।

रखवाला आ पहुंचा।

रखवाला। सिर्फ दो ही घण्टे हुए,—शेरोंकी खुराक दी जा चुकी है; उनमें जो अच्छे हैं, वह हाजिर है।

नवाब। क्यों रे बदमाश! शेरोंको अभीसे खाना क्यों खिला दिया?

रखवाला। हुजूर! रोज इसी वक्त खाना दिया जाता है।

रखवालेकी देह आपादमस्तक कम्पायमान हो रही थी।

नवाब। अगर इस शेरने मनुष्य-भक्षकसे मुकाबला न किया, तो तुम्हें सामने आना होगा।

शेरका पिञ्जरा बरामदेमें आ पहुंचा, सबके सब उसीकी ओर देखने लगे। रखवाला पीछे चला आया, उसने कोई भय-भाव प्रकट नहीं किया, क्योंकि वह जानता था, कि नवाब अपना हुक्म वापस कर लेंगे।

बछियाके दुम दबाकर पिञ्जरेमें घुस पड़ते ही उसका पिञ्जरा वहांसे हटा दिया गया था और उसी समय नवाबने शराबके लिये भी आज्ञा दे दी थी। आज्ञानुसार कई शराबकी बोतलें आईं। नवाब और उनके साथी शराबसे लबालब भरे गिलास बरफ मिलाकर पी गये। पीते ही जरा तरावट आई। मारे गर्मीके खून उबल रहा था। नवाब आरामसे थे। पलंगपर लेटे तमाशा देख रहे थे; पीछे लौंडियां खड़ी खड़ी पङ्खा झल रही थीं, जिससे नवाबको हमारी अनुभूत उष्णताका कुछ भी परिचय न मिला। लौंडियोंकी अनावृत आस्कन्ध बाहुलतायें उन मोरपङ्खी पङ्खोंकी बजह हुत ही सुन्दर मालूम होती थीं। पङ्खा झलनेमें वह कमनीय हाथ अलङ्कारोंसे चमकता हुआ कमनीय तर हो जाता और देखनेवालोंको मतवाला बना देता था।

शेरका पिञ्जरा अखाड़ेमें आया। पिञ्जरेका दरवाजा खोल दिया गया और शेर अखाड़ेमें उतर पड़ा। उतरते ही उसने मनुष्य-भक्षकको देखा—देखकर सहम गया और निस्तब्ध खड़ा रहा। पीछेसे किसीने भाला भोंका और शेर आगे बढ़ा। पिञ्ज-

रेका दरवाजा बन्द कर दिया गया। शेर शत्रुको आपादमस्तक निहारने लगा। शेरकी यह गुस्ताखी देख मनुष्य भक्षक सामना करनेके लिये आगे बढ़ा। दोनो परस्परको देखने लगे। शेरने एक दो क्षणमें घोड़े को अच्छी तरह देख लिया। जिसके बाद वह घोड़ीकी ओर चला और उसकी छातीपर सवार हो उसके गलेसे एक दो घूंट खून पीकर चला आया। शेर चाहता था, कि घोड़ा आक्रमण करे और मैं अवरोध करूं।

शेर बढ़ियासे कदमें बहुत बड़ा था, पर बढ़िया जैसा सुन्दर नहीं। बढ़ियाकी शान कुछ और ही थी। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि यह शेर बड़ा खूंखार था। अगर बढ़ियाकी तरह यह भी दो रोज भूखा रखा जाता, तो वह अपनी खूंरेजी दिखाकर तमाशाइयोंको अवश्य ही प्रसन्न करता।

मनुष्य-भक्षकने बढ़ियापर आक्रमण किया न इसी शेरपर वह खुद चढ़ाई करनेवाला था। शेरके आक्रमणसे अपना बचावकर मौका देख शेरकी सब सट्टीपट्टी भुला देना ही उसका उद्देश्य था। शेरने जब देखा, कि घोड़ा आक्रमण नहीं करता, तब वह घोड़ीकी लाशपर सवार हुआ। लाशपर मनमाना अत्याचारकर वह अपनी शक्तिका परिचय देने लगा।

नवाब चिल्लाये—तुम लोग कैसे बेहूदे हो; उस लाशको बाहर क्यों नहीं फिंकवा देते?

नवाबके हुक्मकी उसी दम तामील हुई।

लोहेके एक दो डण्डे खूब तपाकर लाल किये गये और उन्हींके बलसे शेर लाशसे हटा दिया गया। घोड़ीके गलेमें एक फन्दा डाल दिया गया और देखते देखते लाश वहांसे उठवा दी गई।

शेरके क्रोधका वारापार न रहा ; वह लाशपर आसन लगा इच्छा-भोजन कर रहा था, ऐसे समय उसके साथ छेड़ की गई ; शेरके हृदयमें इस छेड़से दावानल धधकने लगा। वह बरामदमें खड़े लोगोंकी ओर देखता ; कभी मनुष्य-भक्षककी आंखोंसे आंखें भिड़ाना और कभी इधरसे उधर उछल-कूद करता हुआ भयङ्कर गर्ज्जन करने लगता था। मनुष्य भक्षक आक्रमणके लिये तय्यार था। वह निडर था, गर्ज्जनसे उसका एक बाल भी बांका न हुआ।

अजीब तमाशा था। लोग चाहते थे, कि जल्द लड़ाई हो जाये। शेरने सिवा चक्कर देने, गरजने, गुर्रानेके और आंखसे आंख भिड़ानेके और कुछ किया ही नहीं। लोग उकता गये। मनुष्य-भक्षक स्थिर भावसे खड़ा था ; वह तय्यार था। शेरके आक्रमण करनेकी देर थी। बरामदेमें खड़े नौकर भाले भोंककर, तप्तलौहका दाग देकर और हर तरहसे उसे आक्रमणके लिये उत्तेजित करनेकी चेष्टा कर रहे थे ; पर वह एक नहीं मानता था,—सिवा गुर्रानेके और कोई काम ही नहीं करता था।

यदि शेर मनुष्य-भक्षकसे सामना न करेगा, तो रखवालेको अपना ही बलिदान करना पड़ेगा। नवाबकी आज्ञा कौन टाल सकता है? मारे भयके रखवालेका चेहरा सुर्ख हो चला। भयसे मुझे भी ग्लानि आ गई। परन्तु रखवालेके सौभाग्यसे नवाब अपनी धमकी भूल गये। उन्होंने चिल्लाकर कहा,—"मनुष्य-भक्षक दिलेर है, शेर उससे सामना कर नहीं सकता। शेरको अखाड़ेसे निकाल ले जाओ।" नवाबकी यह आज्ञा सुन पाठक

यह न समझें, कि खूंरेजोका अब अन्त हुआ। अगर शेर नहीं लड़ सकता, तो क्या और जानवर नहीं, जो घोड़े से सामना करें? नवाबने फरमाया,—तीन जङ्गली भैंसे घोड़े से सामना करेंगे।

जङ्गली भैंसा भयङ्कर जानवर है। इसकी सूरतशकल बड़ी ही भद्दी और उसका डील बहुत ही लम्बा चौड़ा होता है। जब वह किसी कारणसे क्रुद्ध हो जाता है, तब उसकी भयङ्करताका कोई मुकाबला कर नहीं सकता। जङ्गली भैंसे बड़े बड़े मत्त गयन्दोका सामनाकर उन्हें समराङ्गणसे भगा देते हैं। मैंने अपनी आंखो एक ऐसे ही हाथीको जान ले भागता हुआ देखा था। वह चीख रहा था; हांफ रहा था और मारे डरके सरपट भाग रहा था। उसका शरीर जखमोंसे चतविच्चत हो गया था, जखमोंसे रक्त-धारायें वह रही थीं।

हुक्मकी देर थी; तुरन्त पिञ्जरेका दरवाजा खोल दिया गया। शेर भीतर घुस आया—बाहर आनेके समय उसे भय हुआ था भीतर घुसनेमें जरा भी नहीं। पिञ्जरा अखाड़ेसे बाहर किया गया। नवाबको तमाशा देखनेसे फुरसत मिली; शराब आई, सभी मन लगा मदिरा देवीको उपासना करने लगे। इतनेमें तीन ज[illegible] भैंसे लाये गये।

भैंसे अखाड़में आते ही बेमतलब इधर उधर देखने और घूमने लगे। उनके वह विशाल मस्तक और भद्दी आंखें कुछ अजीब तमाशा पैदा कर रही थीं, मानो वह अपने ही स्थानपर नित्यकी काररवाई मे व्यस्त थे—किसी नये कामके लिये नये स्थानमें लाये ही नहीं गये थे।

उनकी सूरत शकल देख मनुष्य भक्षक पीछे हटा; उनका लम्बाचौड़ा डील देख डर गया। दूसरे बार शेरसे सामना करनेके समय मनुष्य-भक्षक जरा भी डिगा नहीं था। परन्तु इन भैंसोंकी यह शैतानी सूरत चौड़ा और चिपटा शिर, लम्बे लम्बे सींग और उनका कालकूट रङ्ग देख घोड़ेने हिम्मत हार दी। कदम दर कदम वह पीछे हटने लगा और हिनहिनाने लगा। मनुष्य-भक्षक डर गया था। अब भी यदि भैंसे डरका कुछ भी लक्षण दिखाते, तो घोड़ा दिलेरीके साथ उनसे टक्कर लेता; पर भयका कोई लक्षण न देख वह घबरा गया। भैंसे उत्सुक दृष्टिसे चारों ओर देख रहे थे—कभी जमीन सूंघते, कभी बरामदेमें खड़े मनुष्योंकी ओर दृष्टिपात करते; कभी बांसकी दीवारका मतलब समझनेकी चेष्टा करते, कभी घोड़ेकी हरकतोंको निहारते, कभी ऊपरकी गेलरियोंपर नजर डालते और कभी तटस्थ वृत्ति ही स्वीकार करते। वह यही सोच रहे थे, कि हम यहां क्यों लाये गये हैं। उनके कभी ध्यानमें भी यह बात नहीं आई, कि घोड़ेसे भिड़नेके लिये वह लाये गये हैं। जब घोड़ेने देखा, कि भैंसे निरुद्देश्य और विकल हैं, तब उसके जीमें जी आया। उसने हिम्मत बांधी और धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। भैंसोंने उसकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया।

भैंसोंको कोई परवा नहीं थी; घोडा बढ़ता आता था; अन्तमें एक भैंसेके शरीरको घोड़ेने अपने शिरसे छुलिया। घोडा फुफकारता हुआ और आगे बढ़ा। भैंसा वेफिक्र था। एकाएक घोड़ेने भैंसेपर दुलत्ती फटकारना आरम्भ किया। भैंसा सोचता ही रह गया। घोड़ेके इस एकाएकके आक्रमणसे

भैंसेके होशहवास उड़ गये। साथके भैंसे शिर हिलाने लगे। देखनेवाले आश्चर्यसे मुग्ध हो गये।

नवाब हंसने लगे। उन्होंने कहा,—"मनुष्य-भक्षककी जिन्दगी बरबाद होने काबिल नहीं। उसका जीवन बहुमूल्य है, उसे छुडाओ।" नवाबकी आज्ञा तुरन्त कार्यमें परिणत हुई। मनुष्य-भक्षककी जयजयकार हुई और वह अपने अस्तबल पहुंचाया गया। नवाबने कहा,—मनुष्य-भक्षक अपने जीवनके शेष दिन सुखसे बिताये।

नवाब बोले—उसके लिये मैं लोहेका एक पिञ्जरा बनवाऊंगा। वहां उसकी खातिर की जायेगी। वालिदकी कसम, मैं सच कहता हूं, कि वह बड़ा ही दिलेर जवान है। यह पिञ्जरा लखनकके भोजनालयसे दूना लम्बा और चौडा था। इसीमें वह मदमत्त केशरीकी तरह घूमता फिरता था। उसे देखनेके लिये दूर दूरसे लोग आते थे। देखनेवालोंको वह अपने दांत दिखाता और छलककर काटनेकी धमकी देता था। भैंसेकी पसलियोंको अपने पैरोंकी नालोंसे किस कदर उसने ढीली कर दीं, यह बात उसे अन्ततक याद रही; प्रायः ही वह पिञ्जरेके छड़ोंपर दुलत्ती फटकार उस प्रसङ्गकी नकल करता और याद दिलाता था।

जब मैं लखनऊसे विदा हुआ, तब लखनऊकी देखनेयोग्य चीजोंमें मनुष्य-भक्षक भी गिना जाता था।

सप्तम परिच्छेद ।

अन्यायकी ललक ।

दरबारके अफसरोंमें राजा वख़तावर सिंहसे बादशाहका जैसा हेलमेल था वैसा दूसरे किसीसे भी नहीं। यह बादशाही सेनाके नाममात्रके सेनापति थे। मैं इन्हें नाममात्रका सेनापति कहता हूं ; कारण अवधकी प्रधान सेना—जो वास्तवमें उस देश भरमें एक मात्र त्रासजनक सेना थी—कम्पनीकी थी और वह रेज़िडाट्के शासनाधीन थी। तो भी नवाबके पास अश्वारोही तथा पैदल दोनों प्रकारकी सैन्य थी, जिनकी पोशाक तथा अस्त्र-शस्त्र कुछ फारिसके सिपाहियोंके ढङ्गके और कुछ कम्पनीके सिपाहियोंके ढङ्गके थे। अश्वारोही, पैदल तथा तोपखाना सब मिलाकर इस सेनाकी संख्या कोई चालीस या पचास हजार थी और नवाबके पुत्र इन सबके कमाण्डर-इन-चीफ अर्थात् प्रधान सेनानायक थे तथा वख़तावर सिंह 'जनरल' अर्थात् सेनापति थे। दरबारमें जब कभी हमलोगोंका भोजनादिके निमित्त आमन्त्रण होता तो उस समय लोग वख़तावरको 'सेनापति' कहकरही सम्बोधन करते थे—शायद ही कभी कोई उनका नाम लेता था। नवाबको हंसी दिल्लगी तथा लड़कोंकी तरह कूदफांद करनेका इतना शौक था और इन कार्य्योंमें वख़तावर तथा वह हज्जाम, यह दोनों ऐसे निपुण थे, कि यदि कोई दर्शक कभी दरबारमें आता, तो वह यही अनुमान करता, कि यह अल्प समयके लिये

दबावसे छुटकारा पाये हुए जवान लड़कोंका दरबार है। नवाबके स्वयं उदाहरण दिखानेके कारण कुढङ्गी तथा हास्यजनक भंड़ेतीकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती थी और देशी मुसाहिबोंमें बख्तावर सिंह तथा यूरोपीय मुसाहबोंमें वह हजाम बहुत प्रसन्नतापूर्व्वक भड़ैती किया करते थे।

तो भी बख्तावर किसी प्रकार नीच स्वभावके आदमी नहीं थे। उन्हे अपने दरबारके पदका अभिमान था और उन्होने यथासम्भव उस पदको काइम रखनेका सङ्कल्प किया था। इसीसे वह बादशाहकी ओछाईकी प्रशंसा करते और स्वयं कपटपूर्व्वक इस प्रकार उन ओछे कार्य्यों का अनुकरण किया करते मानो वह सच्चे दिलसे सब कर रहे हैं। परन्तु प्रत्यक्षमें फूहरपनका आड़म्बर रखनेपर भी इनके विचार बहुत गम्भीर थे और इन्हे सांसारिक कार्य्यों का पूरा अनुभव था। देशके लोग यह समझकर उनका आदर करते थे, कि वह उत्तमरीतिसे शासन करना जानते थे और अपने अधिकारको जावाबदेही भी अच्छी तरह समझते थे। वह सेनापति कहे जाते थे, किन्तु यदि उन्हें प्रधान पुलिस अफसरकी उपाधि दी जाती, तो बहुत उपयुक्त होता; क्योंकि उनके सैनिकगण प्रायः वही कार्य्य किया करते थे, जो इङ्गलैण्डकी पुलिस करती है। पूर्व्वीय दरबारोंकी प्रचलित प्रथाके अनुसार वह लोग यात्रा तथा अन्य धूमधामके अवसरोंपर भी मौजूद रहा करते थे।

अतएव यह सहज ही अनुमान किया जायेगा, कि देशीय समाजमें बख्तावरका बड़ा आदर था। अपने धन, राजपूत जातिमें प्रधान होनेके कारण अपनी वंशमर्य्यादा, राजाके साथ

हेलमेल तथा अपने राजपदके कारण वह अतीव विख्यात, प्रभुत्वशाली तथा पराक्रमशाली पुरुष हो गये थे। नवाब या वजीरकी आंखोंमें इनकी यह प्रधानता खटकती थी ; किन्तु जब बखतावर नवाब तथा उस हज्जामके कृपापात्र बने थे ; तबतक उन्हें इस नाममात्रके वजीरके ईर्ष्याद्वेषकी चिन्ता ही क्या थी। वह लोग आपसमें मित्रताका बनावटी बरता करते थे। बखतावर और नवाब दोनो आपसमें गले गले मिला करते, एक दूसरेकी प्रशंसा करते, सलाम करते, लल्लोचप्पो तथा सुशीलताकी बातें कहते और सदैव सौजन्यताके नियमोंका ध्यान रखते—जिसके लिये हिन्दुस्थानी विख्यात हैं, तो भी नवाब मुसलमान थे और 'रैन पति' हिन्दू।

हमलोग लखनऊके निकटवर्त्ती बादशाहके एक देहाती किलेमें तमाशा देख रहे थे। यह पशुओंकी लड़ाईका तमाशा था। पशुगण एक दूसरेको चीरफाड़कर टुकड़े टुकड़े कर देते और घोर शब्द करते और खूनके प्यासे जङ्गली जानवर अपनी जीत होनेसे भयङ्कर गर्ज्जन और उछलकूद करते।

यह तमाशा देखते देखते उकताकर हमलोग उस रमनेकी बगलमें बने हुए भोजनालयमें चले गये और वहां हमलोगोने एक दो बिस्कुट तथा कुछ बरफ दी हुई शराब पीकर अपनी थकावट उतारी। नवाब मारे अभिमानके फूले हुए थे और बारबार हंसी मजाक करते थे। बखतावर भी सर्व्वदाकी तरह मौकेसे नवाबके मजाकका जवाब देते और उनकी मूर्खताकी दिल्लगीपर हंसते थे ; किन्तु जाहिरा ऐसा दिखाते मानो वह नवाबकी चुहलबाजीसे अत्यन्त प्रसन्न हैं।

आखिर भोजनालय छोड़नेका समय उपस्थित हुआ, कारण उपाहारका समय हो चुका था। बाडीगार्ड सेनाके सवार बुलाये गये। उनके कप्तानने उन्हें क्रमानुसार इकट्ठा करके नवाबको खबर दी, कि सब ठीक है। नवाब टेबुलके सामनेसे उठे—वह अङ्गरेजी पोशाक पहने थे। उन्होंने अपना टोप दाहिने हाथके अङ्गुठेपर रख उसे ऊपर उठाकर घुमाना आरम्भ किया। इसके उपरान्त सदाकी भांति सब कार्य्य हुए, किसी प्रकारकी कोई विलक्षणता देखनेमें नहीं आई। हम सब उस क्रीड़ा स्थलसे रवाना हुए। नवाबको यह आदत थी, कि जब कभी वह अधिक प्रसन्न होते, तो अपने काले यूरोपीय टोपको ऊपर उठाकर नचाने लगते। नवाब आगे आगे जाते थे और उनसे कई क़दम पीछे बखतावर मेरे साथ साथ जाते थे। हम सब इसीतरह दरवाजेकी ओर बढ़ते गये, ऐसे अवसरपर मरतबाका अधिक विचार किया नहीं जाता था।

निदान इसी तरह अपने टोपको घुमाते घुमाते कुछ दूर आगे चलकर नवाब रुके और हमलोगोंकी ओर हंसते हुए देखने लगे, मानो उनकी इच्छा थी, कि हमलोग भी हंसें। आज्ञाकारी दरबारीकी तरह हमलोग भी हंसने लगे। बादशाहके टोपमें एक छिद्र हो गया था और उसमें उनकी अङ्गुली घुस गई यह देखकर बखतावरने हंसते हंसते कहा,—There's a ho'e in your Majesty's crown. अर्थात् श्रीमान्‌के मुकुटमें एक छिद्र है।

अवश्य ही यह बात बिना सोचे विचारे केवल दिल्लगीके लिये

कही गई थी, किन्तु नवाबके दिलपर इसका उलटा असर हुआ। उस समय उनके पिता तथा परिवारके लोग उन्हें सिंहासनसे हटाकर उनकी जगह उनके भाईको बैठानेका प्रयत्न कर रहे थे; अतएव राजमुकुटका नाम किसीके मुखसे सुनते ही नवाब चौंक उठते थे। वास्तवमें यदि कम्पनी तथा रेजिडण्टका आश्रय नहीं होता, तो वह राजमुकुट धारण कर नहीं सकते। तो भी यदि किसी दूसरे समय अथवा दूसरे ढङ्गसे यह बात कही जाती तो उसकी उपेक्षा की जाती।

उक्त कथन सुनते ही नवाबका चेहरा बदल गया। उनकी चुहलबाजी गाइब हो गई और उनके चेहरेपर क्रोधकी कालिमा प्रकट हुई। उनकी काली चमकीली आंखोंसे क्रोधकी चिनगारियां छिटकने लगीं। मैं उनके समीप ही था। मेरी ओर फिरकर उन्होंने पूछा,—तुमने इस दगाबाजकी बात सुनी? इस समय उनका क्रोध इतना बढ़ गया था, कि उनके वाक्यमें रूखापन आ गया था।

"हां हुजूर" केवल इतना ही मैं कहने पाया था और कुछ कहाही चाहता था, कि इतनेमें बादशाहने अपने बाडीगार्डके कप्तानको चिल्लाकर कहा,—"इस आदमीको अभी पकड़ लो। रोशन। (वजीरको सम्बोधन करके) जाओ इसका शिर उतार लो।"

यह अतीव भयङ्कर शङ्काका समय है। कम्पनीके नौकरोंके सिवा बाकी सब देशी मनुष्योंके जीवन-मरण पर बादशाहका पूर्ण अधिकार था और उनका स्वभाव ऐसा था, कि उनका क्रोध शान्त करनेके लिये कोई भी प्रयत्न करनेसे वह और भी आग-

बगूबूला हो जाते। बाडीगाडका कप्तान—जो एक अङ्गरेज अफ़-सर था और वजीर, दोनो बखतावरके पास पहुंचे। वह उस समय शिर नीचा किये, कर जोड़े खड़े थे। एक शब्द भी उनके मुंहसे न निकला।

वजीर यद्यपि प्रत्यक्षमें बखतावरके दोस्त थे, तथापि वह उनके राजपदसे सन्तुष्ट न थे। उन्होंने मन ही मन कहा,—यह संसारसे विदाईकी आज्ञा तो मानना ही पड़ेगी। अव्यवस्थित चित्तके स्वतन्त्र राजोंके दरबारके आदमियोंकी उन्नति तथा अधःपतन इतनी जल्द होती है, कि जिन लोगोंको ऐसे दरबारोंमें रहनेका अभ्यास है, उनके हृदय-समुद्रमें भी आश्चर्य्यकी तरङ्ग उठने लगती हैं।

"बखतावर मेरे बन्दी हैं" ऐसा कहकर कप्तान उन्हें बाहर ले गये और चलते समय हमलोगोकी ओर (अपने अङ्गरेज साथियोकी ओर) एक मतलब भरी दृष्टिसे देखते गये—उस दृष्टि द्वारा उन्होंने मानो यह कहा, "इस विपद्ग्रस्त मनुष्यके निमित्त तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो और मैं अपना करूंगा।"

उधर बखतावर वहांसे हटाया गया और इधर नवाबने अपने टोपको जमीनपर पटककर उसे पांवसे कुचल दिया। इस समय-तक वह क्रोधके मारे लाल हो रहे थे; कारण, मैंने जो कुछ वर्णन किया है वह क्षणभरका कार्य्य था।

पुनः मेरी ओर फिर कर उन्होंने पूछा, "इस प्रकार अप-मानित करनेवालेको इङ्गलैण्डका शाह क्या दण्ड देता?" इस समय भी क्रोधसे उनका मुखड़ा भयङ्कर हो रहा था और वह पृथ्वी पर पांव पटक रहे थे।

मैंने उत्तर दिया, "वह उसे गिरफ्तार करवाते, जैसा श्रीमान्ने किया और पीछे विचार होनेपर जैसा फैसला होता, वैसा दण्ड दिया जाता।"

दरवाजेकी ओर धीरे धीरे चलते हुए वह बोल उठे, "मैं भी ऐसा ही करूंगा" उन्हें यह स्मरण नहीं रहा, कि उसका शिर काटलेनेकी आज्ञा पहले ही दी जा चुकी है।

"मैं रौशनको श्रीमानकी आज्ञाकी सूचना दिये देता हूं" ऐसा कहकर मैं झुककर आदाब बजालाया और उनके आगेसे निकल गया।

वह लोग घोड़ोपर सवार हो चुके थे। बखतावर दो घुड़सवारोंके बीचमें थे और कप्तान उनके आगे आगे चल रहे थे एवं वजीर फौजके पीछे पीछे जा रहे थे। मैंने वहां पहुंचके उन्हें नवाबके आदेशकी सूचना दी। यह सुनकर रौशनने यद्यपि प्रकट रूपसे उत्तर दिया, किन्तु मुझे विश्वास था, कि शरणागत व्यक्तिपर अवश्य ही दया दिखाई जाएगी, तो भी दिलसे उसने मुझे धन्यवाद नहीं दिया। उस जगह समीप ही बहुतसे मुसाहिब मौजूद थे और ऐसा उत्तर विशेषत: उन्हीं लोगोको सुनानेके लिये दिया गया था। बखतावरने भी अवश्य ही मेरी बातें सुनी और समझी होंगी, कारण यह बातें हिन्दीमें और जोरसे कही गई थी। किन्तु उन्होंने हमलोगोंकी ओर घूमकर देखा भी नहीं, जिससे यह मालूम हुआ, कि उन्होंने हमलोगोकी बातें सुनी हैं। दरबारमें रहनेवाले लोग इस विषयमें खूब सावधान रहते हैं।

नवाबने हाथीपर सवार होते समय अपने मित्र उच्च हुक्का-

नसे कहा—बखतावर अवश्य मरेगा—संसारकी कोई भी शक्ति उसे मरनेसे बचा न सकेगी ; अन्धकार होनेसे पहले ही उसका शिर उतार लिया जायगा। किसीने भी यह कहनका साहस नहीं किया, कि ऐसा नहीं करना चाहिये। किन्तु हमलोग—अच्छी तरह जानते थे, कि यदि रेसिडगट साहबसे इस विषयमें आपत्ति करनेकी प्रार्थना की जाय, तो उस दुर्भाग्य मनुष्यकी जान अवश्य बच जावेगी, धनसम्पत्तिके विषयमें चाहे जो व्यवस्था हो।

जिस रमनेमें यह घटना हुई थी, वहांसे केवल कई मीलके फासिलेपर गोमती नदी थी। चौड़े पेंदेवाली बड़ी किश्ती या बेड़े अथवा उतरानेवाले पुलपर चढ़के हमलोग हाथी घोड़ोंके साथ नदीपार हुए और कई मिनटमें ही लखनऊकी ओर चले आये। यह उतरानेवाला पुल केवल नवाब तथा उनके मुसाहिबोंके कामके लिये संरक्षित था और और हमेशा ही नदीके किसी न किसी किनारे बोझ ढोनेके लिये मौजूद रहता था। इसकी बनावट बहुत ही भद्दी और विलक्षण थी; किन्तु उस समय यह अपने ढङ्गका एक था, इसीसे इसकी अधिक प्रशंसा होती थी। साधारण लोगोंके लिये किश्तियोंका एक पुल बना हुआ था, जो देखनेमें खूबसूरत न होनेपर भी नदीके एक किनारेसे दूसरे किनारे जानेके लिये बहुत ही सुविधाजनक था। दोपहरमें एक दो घण्टे तक इस पुलके बीचका हिस्सा नाव आदिके इधरसे उधर जानेआनेके लिये खोल दिया जाता था। उस समय इस पुलकी राह रुकी रहती थी।

सिवेलक पहुंचनेपर नवाबका क्रोध बहुत कम हो गया और तब

अधिक बुद्धिमानोंके साथ बातचीत करने लगे। बखतावर सिंहके सम्बन्धमें उनकी इच्छा जाननेके लिये हम सब उत्सुक हो रहे थे। हमलोग जब विदा लेनेके लिये तय्यार हुए, तो एक उच्च-पदस्थ दरबारीने दोस्तीके तौरपर बहुत नम्रताके साथ इस बातकी चर्चा उठाई।

नवाबने उत्तर दिया,—"जबतक इस बातकी अच्छी तरह जांच न हो लेगी, तबतक वह मारा न जायगा।"

हमलोग यह दिलजमईकी बात सुनकर सन्तुष्ट हुए; किन्तु हमलोग नवाबको देशी मुसाहिबोंके साथ छोड़कर चले आये उसके नतीजेका खयाल करके भयसे हमलोगोंका कलेजा कांपता था। बखतावरकी बिलकुल सम्पत्ति जब्त की जाकर उन लोगोंमें बांटी जानेवाली थी। अतः वह लोग धन पानेके लोभसे सदैव उसकी मृत्यु तथा जायदादकी जब्तीका परामर्श देनेको तय्यार थे। रेजिडेण्टको इस घटनाकी सूचना देनेके लिये बड़ी-गार्ड सेनाके कप्तान ही बहुत उपयुक्त पुरुष समझे गये। किन्तु रेजि-डेण्ट साहब यह स्थिर कर न सके, कि वह किस प्रकार इस विषयमें हस्तक्षेप करेंगे—यह एक ऐसे देशी आदमीकी बगा-वतका मुकद्दमा था, जो कम्पनीके मातहत नहीं था और रेजि-डेण्टको इसमें हस्तक्षेप करनेका कोई भी बहाना नहीं था।

हमलोग जब किलेसे रवाना हुए, तब हम सबमें जिन लोगोंका नवाबके खानदानसे सरोकार था, वह लोग बदनसीब बखतावरसे मिले। वह बेचारा किलेके बाहरकी एक बहुत ही गन्दी कोठरीमें रखा गया था, जिसमें पहले एक नीच जातिका नौकर रहता था। यहां यह देशी सिपाहियोंके पहरेमें रखा गया था। ऐसे ऊंचे

दरजे तथा उच्च जातिके आदमीके लिये ऐसी खराब जगहमें रखा जाना ही बहुत भारी सजा था, किन्तु जब हमलोग कोठरीके अन्दर पहुंचे, तो उसकी दशा देखकर रुलाई आती थी।

उस कोठरीमें एक बहुत ही मामूली चारपाई बिछी थी उसपर एक चटाईतक नहीं थी। चारपाई भी वैसी थी, जो बहुधा नौकरोंके काममें आती है। हमलोगोंने सुना, कि नवाब वजीरकी मारफत नवाब साहब बड़ी-गार्डके कप्तानको जैसी आज्ञा देते हैं उसीके अनुसार सब कारवाइयां होती हैं। इस अपमानित सरदारकी सब पोशाक उतार ली गई थी—बेशकीमत कामदार पगड़ी, उमदा चोगा, तलवार, तमञ्चा, काश्मीरी कमरबन्द—सभी छीन लिये गये थे। जिस समय हमलोग उस कोठरीमें घुसे, उस समय वह नग्नप्राय केवल एक लंगोटी पहने उसी चारपाई-पर पड़े थे।

हमलोग जब उनसे बातचीत करने लगे, तो उन्होंने कहा, "मैंने जो कुछ कहा था, वह बिलकुल नादानीसे और सिर्फ दिल्लगीके लिये। नवाब साहब यह जानते हैं, कि जब उनके पिता तथा उनके परिवारके लोग उनका तख्त छीन लेनेका गुप्तप्रबन्ध करते थे, उस समय मैंने कभी उनके विरुद्ध साजिश नहीं की। मैं मरूंगा—महोदयगण! मैं जानता हूं, कि मैं जरूर मरूंगा, शैतान शान्त मित नहीं। किन्तु ऐ नेक अङ्गरेजो! मेरे परिवारको बेइज्जतीसे बचाना। यदि आपलोग रेजिडेण्ट साहबसे कहें, तो वह अवश्य उनकी रक्षा करेंगे। मैं मर्दबच्चा हूं, सब प्रकारके कष्ट तथा मृत्युका भी सामना करूंगा; किन्तु मेरी स्त्रियां तथा लड़के—मेरे वृद्ध शक्तिहीन पिता—मेरी स्त्रियां, जिन्होंने अपने

सम्बन्धीके सिवा किसी मर्दकी सूरत भी नहीं देखी है—मेरे लड़के जो अभी एकदम बच्चे हैं—हा! जब मैं मरजाऊंगा तो उन सबकी क्या दशा होगी? भद्र महोदयगण। इस बातका वादा कीजिये, कि आप उनके सम्बन्धमें रेसिडेण्ट साहबसे कहेंगे।"

हमलोगोंने उन्हें यथासाध्य सब तरहसे दिलासा दिया। उन्होंने अपने शोक तथा उद्वेगका जो वर्णन किया वह कवितासे ढङ्गका था। उसका ऐसा प्रभाव हमलोगोंपर पड़ा, कि यद्यपि हमलोग नवाबी दरबारके घेरेमें थे और वहांकी सङ्गदिली तथा खूनखराबीकी सब बातें जानते थे, तथापि वह दुःख-कहानी सुनकर हमलोगोंमें कई आदमियोंने आंसूकी नदियां बहाईं।

बखतावरने कहा;—"उन लोगोंने सब चीजें तो ले लीं, किन्तु मैंने इस जवाहरको बचा रखा है।" यह एक सोनेकी अङ्गूठी थी, जिसमें एक बहुमूल्य पन्नेका नग जड़ा हुआ था। उन्होंने हमलोगोंमें सर्वप्रधान आदमीके हाथ वह अङ्गूठी देकर कहा—"यदि मेरे परिवारके लोग दरिद्र हो जायें—यदि उनकी सम्पत्तिमात्र हरण कर ली जाय, और दूसरी विपत्ति उनपर न आये, तो आप इस अङ्गूठीको बेचकर इसका मूल्य उन्हें दे दीजियेगा। चेष्टा करके उन लोगोंको दुःख और अपमानसे जरूर बचाइयेगा; वह विधवा स्त्रियां तथा अनाथ लड़के आपलोगोंको आशीर्वाद देंगे।"

हमलोग थोड़ी ही देरतक उनसे बातचीत कर सके। हमलोगोंने उन्हें फिर भी बहुत समझाया बुझाया और यथासाध्य इस विषयमें हस्तक्षेप करनेकी प्रतिज्ञा की। उन्हें शान्त तथा निरवलम्ब अवस्थामें छोड़कर हमलोग वापस आये। अपनी

जानके विषयमें उन्होंने क्षणमात्रके लिये भी ऐसा नहीं सोचा था, कि इसकी रक्षा होगी ; कारण, वह अपने मारडाले जानेकी आज्ञा स्वयं सुन चुके थे। विलम्बके विषयमें उनका अनुमान था, कि अधिक कष्ट देनेके लिये ही विलम्ब किया जा रहा है। वह कष्ट भोगनेके लिये तय्यार भी थे। दुःखके साथ माथा नीचा करके उन्होंने कहा था, कि मैं नवावको आपलोगोंकी अपेक्षा अधिक जानता हूं। मुझे जितना कष्ट दिया जा रहा है, उससे कहीं अधिक कठोरताके साथ लोगोंके साथ वर्त्ताव होते मैंने देखा है।

नवावने जिस जांचका वादा किया था, वह सन्ध्या समय होनेवाली थी। उसके बाद सदाकी तरह हमलोगोंको नवावके साथ बैठकर खाना खानेकी व्यवस्था हुई थी। तबतक हमलोग उदास चित्तसे अपने अपने घर लौट गये।

उस सन्ध्याको जब हमलोग उस किलेकी एक कोठरीमें इकट्ठे हुए, तो बडी-गार्डके कप्तान हमलोगोंसे मिले और रेसिडेण्ट साहबने उनसे जो कुछ कहा था, सो सब कह सुनाया। उन्होंने दुःखके साथ कहा, -"इसका फल क्या होगा सो तो ईश्वर ही जाने,—मैं यदि अपने वर्त्तमान पद पर न होता, तो अच्छा था। वखतावरके शक्तिहीन वृद्ध पिता, उसकी स्त्रियां तथा लड़के सब गिरफ्तार किये जाकर उन्हीं बुरे जेलखानोंमें बन्द किये गये हैं। एक देशी चपरासीने उसी समय आकर हमलोगोंसे कहा, कि नवाब आध घण्टेके बाद आप लोगोंसे मुलाकात कर सकेंगे। हमलोग एक ही साथ बोल उठे, "चलो, हम सब उन लोगोंसे मिलकर उन्हें समझा बुझा आवें ; रेसि-

डरु साहब निश्चय उनकी रक्षा करेंगे।" दयापरवश हो हम-लोग उस जगह पहुंचे, जहां बखतावरके परिवारके लोग बंद थे।

मैंने अपने जीवनके इस दीर्घ कालकी विभिन्न अवस्थाओंमें अनेकानेक दुःखप्रद तथा हृदयविदारक दृश्य देखे हैं; किन्तु उन हतभाग्य स्त्रियों तथा लड़कोंको देखकर जैसा दुःख हुआ था वैसा दूसरे किसी अवसरपर नहीं हुआ। उन लोगोंके साथ भी वैसा ही क्रूर बर्त्ताव किया गया था, जैसा बखतावरके साथ—उनके सब गहने तथा कपड़े छीन लिये गये थे—बखतावरकी तरह उन्हें भी 'लंगोटी' मात्र दी गई थी। वह सब इस प्रकार चिल्ला रहे थे, जैसे कतल किये जानेके लिये रखी हुई भेड़-बकरियां चिल्लाती हैं। वह वृद्ध शक्ति हीन पिता, जिनके शरीरका चमड़ा एकदम सिकड़ गया था और हड्डियां भलभल करती थीं—वह भी रो रहे थे—अपनी दुर्दशा तथा अपमानके लिये नहीं रोते थे, बल्कि अपने लड़के तथा वधूकी दुर्दशा देखकर उनकी छाती फटती थी। वह कमसिन और कोमलाङ्गी स्त्रियां—जिन्होंने आजन्म दुःखका नामतक नहीं सुना, जो सब दिन ऐश आराममें रहीं और जिनके मुखपर कभी किसी दूसरे मर्दकी दृष्टि नहीं पड़ी थी—वह सब अपने लड़कोंके साथ इस प्रकार कैदखानेमें रखी गई थीं, जैसे कसाई लोग जानवरोंको रखते हैं और उस जगह इधर उधर घूमनेवाले दुष्ट पहरेके सिपाही लोग उन्हें देख देख कर हंसी ठट्ठा करते थे। एक स्त्री अपने बच्चेको छातीसे लगाकर अपने दुःखित चित्तको कुछ शान्त करती थी। दूसर, दुःखसे शिर नीचा किये सिकड़ी हुई बैठी थी। इनमें दो स्त्रियां ऐसी खूब सूरत थीं, जिनसे अच्छी स्त्रियोंका कोई अनुमान भी

नहीं कर सकता है। उनका रङ्ग सांवला था, उनके काले लम्बे बाल इस प्रकार बिखरे थे, कि उनके दोनों कन्धे उनसे छिप गये थे। इससे उनकी खूबसूरती और भी बढ़ गई थी।

जब उन लोगोंको यह मालूम हुआ, कि यह लोग बखतावरके दोस्त हैं और हमलोगोंको तसल्ली देने आये हैं, तो उनका डर छूट गया और वह हमलोगोंको बार बार धन्यवाद देने तथा प्रार्थना जताने लगे। स्त्रियां तथा लड़के हमलोगोंके पांव पर गिर पड़े और अपराधीकी रिहाईके लिये मध्यस्थता करनेके निमित्त हमलोगोंसे प्रार्थना करने लगे; भय, दुःख तथा अपमानसे कातर होकर हमलोगोंके सामने उनका जमीनपर लोटना देखकर दया आती थी। उनकी प्रार्थना अपने लिये नहीं, बल्कि उसी आदमीकी रक्षा तथा सहायताके लिये थी, जिसके असावधानीके कारणने उन लोगोंको ऐसी दुःखकी अवस्थामें पहुंचाया था। सचमुच, यदि हिन्दुस्थानकी कभी रक्षा होगी, तो यहांकी स्त्रियोंके गुणसे ही होगी। यहांकी स्त्रियोंसे बढ़कर इज्जतदार, नेकमिजाज तथा दियानतदार स्त्रियां पृथ्वीके बड़े बड़े सभ्य देशोंमें भी नहीं मिलतीं। अङ्गरेज लोग प्रायः छोटी तथा नीच औरतोंको ही देखते हैं और उन्हींको देखकर वह यहांकी सब स्त्रियोंका अनुमान करते हैं, किन्तु उनका वह अनुमान वैसा ही होता है, जैसा इङ्गलण्डके जनसङ्कुल मार्गमें सूर्यास्तके बाद गैसकी चमकीली रोशनीमें चटकीले पोशाकोंमें दिलेरीके साथ खड़ी होनेवाली स्त्रियोंको देखकर इङ्गलण्डकी सब स्त्रियोंका अन्दाजा करनेवाले मनुष्यका अनुमान हो सकता है।

हमलोगोंने उन सब छोटे बड़े आदमियोंको बार बार समझा-

कर शान्त किया और उन्हें सहायता देनेका वचन दिया। हम-लोगोंको उन्हें इस प्रकार तसल्ली देनेका कारण भी था; रेजि-डण्ट साहबने नवाबको बुलाकर कहा था, कि बखतावर अपराधी प्रमाणित होता हो, परन्तु उसके परिवारके लोग सर्व्वथा निर्दोष हैं, अतएव उनके प्रति सतलकी आज्ञा या किसी प्रकारका अत्याचार होना नहीं चाहिये। कम्पनी अवश्य ही कभी कभी किसी आदमीको प्राणदण्ड देनेकी आज्ञा दे सकती है; किन्तु एक समूचे परिवारको मार डालने या निर्दोष स्त्रियों तथा लड़कों-को सतानेकी आज्ञा वह कभी दे नहीं सकती। यदि यह बात युरोपवालोंके कानोंतक पहुंची, तो वह कम्पनी तथा उसके भार-तीय गवरमेण्टके सम्बन्धमें क्या खयाल करेंगे?

हमलोग अधिक समयतक बखतावरके परिवारके लोगोंके साथ ठहर न सके। कारण, यदि नवाब हमलोगोंको गैरहाजिर पाते और उन्हें यह मालूम हो जाता, कि हमलोग उनके विश्वास-घाती तथा उसके परिवारके लोगोंको तसल्ली देने गये थे, तो वह बहुत दुःखित होते। उस विपत्तिग्रस्त परिवारको बचानेके लिये यथासाध्य चेष्टा करनेका इरादा करके हमलोग वहांसे जल्द जल्द लौटे।

बखतावरके परिवारवालोंके निमित्त रेजिडण्ट साहबका हस्त-क्षेप करना ही बखतावरकी प्राणहत्याका कारण हुआ। जब स्वयं रेजिडण्ट साहबने नवाब वजीरको इस बातकी सूचना दी, कि उस अभियुक्त राजेके परिवारके निरपराध व्यक्तियोंके प्रति जो कुछ अत्याचार होगा, उसके लिये कम्पनी तथा मैं भी आपको (सौमनको) ही अपराधी समझूंगा, तो वह एकदम डर गये।

रेसिडराट साहबका विरोध करना नवाब वजीर तथा हज्जाम, दोनोंके सामर्थ्यसे बाहर था। अतएव उस सन्ध्याको जब मन्त्रि-सभाकी बैठक हुई, तो सब किसीने गला फाड़ फाड़कर दया दिखानेका प्रस्ताव किया।

नवाबने आजिज होकर कहा,—"खैर, ऐसा ही हो। उस दगाबाजकी जान छोड़ दी जाये, किन्तु उसकी सम्पत्ति जब्तकर ली जाये और वह लखनऊके बाहर एक पिंजड़ेमें बन्दकरके हमेशाके लिये कैद रखा जाये।"

इस हुक्मकी तामीलका भार नवाब वजीरपर दिया गया। अवधके दक्षिणका रहनेवाला एक मुसलमान सर्दार उसके दूसरे दिन अपने मकान जानेवाला था। अतएव यह स्थिर हुआ, कि बखतावर बन्दी बनाकर उसीके साथ भेजा जाये।

नवाबने कहा,—"उसे बेइज्जत करना चाहिये। उसकी पगड़ी, पोशाक, तलवार, तमग़ा—सब चीजें मंगाई जायें।"

यह सब काम नवाबके आदेशानुसार हुए। हिन्दुओंका खयाल है, कि किसी आदमीकी पगड़ीके साथ यदि किसी प्रकारका बुरा बर्त्ताव किये जाये, तो उससे उस पगड़ीके पहननेवालेका अपमान समझा जायेगा। नवाबने एक मेहतरको बुलाकर उस पगड़ीको सब आदमियोंके सामने अपवित्र करनेकी आज्ञा दी और उस मेहतरने बहुत प्रसन्नताके साथ आज्ञापालन किया। कारण, इस अपवित्र पदार्थको फिर उसके सिवा और कोई आदमी छू भी नहीं सकता। उसी समयसे वह पगड़ी उस मेहतरकी सम्पत्ति हो गई।

फिर तलवार मंगाई गई और उसे एक लुहारने तोड़कर

कड़े टुकड़े कर दिया। तब तपञ्चेकी बारी आई। वह लुहार थोड़े से मारकर उसे टुकड़े टुकड़े किया चाहता था, इतनेमें उसे सन्देह हुआ, कि शायद यह भरा हुआ, तो नहीं है। जांच करनेपर मालूम हुआ, कि वह सचमुच भरा है। यह देखकर वह रुक गया।

उसकी यह हरकत देखकर नवाबको सन्देह हुआ। उन्होंने पूछा, "क्या वह भरा हुआ है?"

लुहारने जवाब दिया;—"जहांपनाह इस तावेदार पर रहम किया जाये, यह तपञ्चे भरे हुए हैं।"

यह सुनते ही नवाब हमलोगोंकी ओर मुड़कर बोल उठे,—या हैदर! मैंने कहा था न, कि यह बड़ा भारी दगाबाज है। कहिये, अब आप लोग क्या कहते हैं? क्या यह भी बिना पहलेका विचारा कार्य्य है? आप सुनते हैं न—उस दगाबाजके तपञ्चे भरे हुए हैं?"

उस्तादने दृढ़ताके साथ जवाब दिया,—"सेनापति होनेके कारण उनका यह कर्त्तव्य था, कि आपकी रक्षाके लिये भरे हुए तपञ्चे साथ रखे।"

नवाब हां! आप भी ऐसा ही कहते हैं? अच्छा, मैं देखूंगा, कि और लोग भी इसे उसका कर्त्तव्य बतलाते हैं या नहीं। बडी-गार्डके कप्तान शीघ्र बुलाये, जायें।

उस दुर्भाग्य मनुष्यकी जिन्दगी फिर भी सङ्कटमें पड़ी; एक ही लहजेमें उसका फैसला होनेवाला था। कप्तान जब वहां मौजूद हुए, तो हम लोगोंने देखकर अथवा कुछ बोलकर उन्हें किसी प्रकारकी सूचना देनेकी चेष्टा नहीं की। हमलोग जानते थे, कि

वह भी हमलोगोंकी तरह बखतावरके हितेच्छु है; किन्तु यह समय ऐसा था, कि उनके मुखसे एक शब्द निकलनेसे उस अभियुक्तकी जान जा सकती थी। कप्तान वहां आये और सर्व्वदाकी तरह सलाम करके नवाबके निकट पहुंचे।

नवाबने पूछा,—"कप्तान साहब! राजा बखतावर सिंहका क्या कर्त्तव्य था, भरे हुए तपञ्चे साथ रखना या बे भरे हुए?"

अब कप्तानके जवाबपर ही बखतावरका जीवन निर्भर करता था। हमलोग दम रोके हुए उनके उत्तरकी प्रतीक्षा करते थे। किन्तु उस समयका दृश्य लुहारका वहां खड़ा होना—नवाबकी चञ्चलता—मेजपर रखे हुए तपञ्चे—हमलोगोंके उदास चेहरे—देखकर ही कप्तानको उक्त घटनाका ज्ञान होगया और उन्होंने फौरन उत्तर दिया;—"श्रीमानके बडी-गार्ड-सेनाके प्रधान सेनापति तथा सेनापतिका यह अवश्य कर्त्तव्य है, कि आकस्मिक विपत्तिसे श्रीमानकी रक्षा करनेके लिये सदैव तय्यार रहें। यदि उनके तपञ्चे भरे हुए नहीं हों, तो वह बेकार समझे जायेंगे।"

हारकर नवाबने कहा,—"इन तपञ्चोंको फेर करके, सब इन्हें छोड़ो और चारो ओर छोंट दो।"

उस दिनका सन्ध्याका भोजन नियमानुसार ही हुआ। जैसे अन्यान्य दिन भोजनके स्वाद-अस्वादकी आलोचना होती थी, वैसे ही आज भी हुई; जैसे अन्यान्य दिन शराबका दौर चलता था, वैसे ही आज भी चला। घासके आंगनमें सपरिवार बखतावर सिंह दीन-हीन भावसे बैठा हुआ था; उसे सपरिवार निर्वासन और कैदकी सजा मिल चुकी थी; किन्तु किसीने उस दुःखिया या उसके राजकोपमें पतित परिवारका खयाल न किया।

भोजनके समय इन बेचारोंका कोई जिक्र ही छेड़ा न गया। नवाब वैसे ही खुश थे, जैसे पहले रहते थे। शराबकी कब्बत चखते थे, तमाशे देखते थे, हंसी-मजाक करते थे बच्चोंकी तरह छिछोरापन दिखाते थे।

दूसरे दिन स्वयं रेसिडण्ट बखतावर सिंहके दुःखी परिवारके पास गये। रेसिडण्टने बखतावर सिंह तथा उनके परिवारके लोगोंको बहुत धैर्य धराया और कहा, कि भविष्यत्में तुम्हारी इससे अधिक दुर्दशा होने न पायेगी। बखतावर सिंह और उनके परिवारने रेसिडण्ट या बड़े साहबको विशुद्धान्तःकरणसे धन्यवाद दिया। इसमें सन्देह नहीं, कि बड़े साहब बखतावर सिंहके दुःखित परिवारसे मिल उसके जखमी हृदयपर मरहम रख आये और उनके मुंहसे जो आशापूर्ण बातें निकलीं, वह अन्तःसार-शून्य नहीं थीं।

इसी दिन सपरिवार बखतावर सिंह कैदीकी अवस्थामें उत्तरके एक राजाके पास कैद रहनेके लिये भेज दिये गये। बखतावर सिंह जङ्गली पशुओंके एक बड़े पिंजरेमें बन्द थे; हां उनके परिवारकी उतनी दुर्दशा की नहीं गई थी। बखतावर सिंहके मुकद्दमेमें रेसिडण्टके दखल देनेसे देशी लोगोंके मनका भाव बदल गया था। धनी-दरिद्र, शिक्षित-अशिक्षित सभी कम्पनी बहादुर और उसके प्रतिनिधि रेसिडण्टसे डरते हैं। उनकी समझमें कम्पनी बहादुर एक भयङ्कर चीज थे; कम्पनी सात समुद्र पार रहकर भी भारतका हर तरहका हाल जानती थी।

बखतावर सिंह चले गये। उनके सम्बन्धमें हमें सिर्फ इतना

ही सुनाई दिया, कि उन्हें जिन राजाने अपने राज्यमें कैद किया था, वह राजा उनके साथ बड़ा ही अच्छा व्यवहार करते हैं और उन्हें किसी तरहका कष्ट होने नहीं देते थे। इस देशके अन्यान्य लोगोंकी तरह शायद बखतावर सिंहने भी अपना धन कहीं छिपा रखा था और जानेके समय अपना वह छिपा धन अपने साथ लेते गये। रौशनुद्दौलहने भी बखतावर सिंहके प्रति बड़ी कृपा दिखाई थी।

अब यह देखिये कि इस बखतावर सिंहवाली दुर्घटनाका अन्त किस तरह हुआ। बखतावर सिंहकी कैदके कुछ ही दिनों बाद समग्र अवधमें भयङ्कर दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। निरन्नोंने अशान्तिके लक्षण दिखाये, खास लखनऊ शहरमें अशान्तिकी अग्नि रह रहकर धधकने लगी। नगरवासियोंने बनियों तथा गल्लेके व्यवसायियोंको दूषण देना आरम्भ किया। और किया, कि बनियोंने अपने लाभके लिये गल्लेका भाव चढ़ा रखा और महार्घ बना दिया है। नवाबके बाहर निकलनेपर सहस्र सहस्र अरजियां उनके सामने गुजरतीं। हाथीपर निकलते, तो हौदा अरजियोंसे भर जाता, घोड़ेपर निकलते, तो घोड़ेके सामने अरजियोंका ढेर लग जाता। अरजियोंसे तङ्ग आ नवाबने बाहर निकलना ही छोड़ दिया।

क्रम क्रमसे बखतावर सिंहको कैद हुए एक वर्ष बीता। फिर भी; दुर्भिक्षसे अवधवासियों और अरजियोंसे नवाबका पिण्ड न छूटा। अन्तमें एक दिन दरबारमें नवाबने कहा,—"कुछ न कुछ दालमें काला जरूर है। लखनऊमें दुर्भिक्षकी इतनी लम्बी स्थिति मैंने कभी नहीं देखी।"

रौशनुद्दौलहने प्रार्थना की, कि हुजूर फसलकी खराबीसे दुर्भिक्ष अबतक टला नहीं है।

नवाब। बस, रौशन। बस। इन बातोंकी जरूरत नहीं। मैं कहता हूं, कि कुछ न कुछ दालमें काला है। गत वर्ष फसल अच्छी हुई थी। आप क्या कहते हैं, माष्टर साहब ?

माष्टर। मेरी प्रार्थना यह है, कि बाजारका बन्दोबस्त दुरुस्त नहीं, इसकी दुरुस्ती होना चाहिये।

नवाब। बल्लाह! माष्टर साहब। मेरा भी यही खयाल है। हम सबको बुगदादके खलीफहकी तरह वेश बदल बाजारके बन्दोबस्तकी जांच करना चाहिये। मैं भी आप लोगोंके साथ चलूंगा; इसमें मुझे मजा आयेगा।

नवाबके मनमें यह बात जम गई थी और कोई उसे निकाल नहीं सकता था। हम सबको सूरत बदल नवाब साहबके साथ बाजार जाना होगा। यह किसीकी समझमें न आया, कि हमारी इस दौड़धूपका फल क्या होगा। नवाबने चटपट युरोपियनकी पोशाक पहनी, रौशनने भी ऐसा ही रूप भरा। दो युरोपियन मुसाहिबोंने भी अपने वस्त्रमें कुछ उलटफेर कर लिया। अन्यान्य लोग दूर दूर रहनेको थे; नवाबके साथ रहनेसे मना कर दिये गये थे। नवाब और उनके शरीररक्षकोंके कपतानने आत्मरक्षाका सामान किया। कारण, लखनऊमें छेड़कर खूनखराबी करनेवालोंकी कमी नहीं थी और नवाबके परिवारके लोग उनसे काम भतृता करते नहीं थे। इसतरहकी दुर्घटनासे रक्षा पानेके लिये नवाब और कपतान दोनोंने कुछ सिपाहियोंको सशस्त्र हो लखनवी बानेमे पीछे पीछे रहनेकी आज्ञा दे दी थी।

इतने लोगोंके कुछ दलोंमें विभक्त हो बाजारमें प्रवेश करनेपर नगरवासियों द्वारा किसी तरहका सन्देह होनेकी कोई आशङ्का नहीं थी। कारण,—सन्ध्या समय लखनऊके बाजार खूब ही भरे रहते थे; राहचलतोंको कठिनतासे राह मिलती थी। सिवा इसके कितने ही बाजार खूब तङ्ग हैं, उनसे होकर कई आदमियोंके एक साथ निकलनेसे किसीको किसी तरहका सन्देह हो नहीं सकता था।

महलसे निकल हमलोग बाजार पहुंचे। बड़ी भीड़भाड़ थी। भीषण-दर्शन राजपूत और पठान पीठसे ढाल और बगलसे तलवार लगाये दाहने बायें धक्के देते चले जाते थे। बड़ी बड़ी दाढ़ियोंवाले स्वधर्म्मनिष्ठ मुसलमानोंने हमपर निगाहें डाल मानो यह कहा, कि साहबोंका यहां क्या काम। विनम्र हिन्दू दुकानदारोंने मुस्कुरा मुस्कुराकर हमें अपने माल दिखाये और उनकी प्रशंसा की। अन्तमें हमलोग सराफेमें घुस एक सर्राफकी दुकानकी ओर झुके, यहां उतनी भीड़ नहीं थी, सर्राफकी दुकानपर चमकीले सिक्कोंकी छोटी छोटी ढेरियां लगी थीं। सर्राफ बड़े ठस्सेके साथ पालथी मारे दुकानपर बैठा था। दो बलिष्ठ पुरुष दूर खड़े दुकानकी रक्षा कर रहे थे। ऐसे समय एक सौदागर सर्राफकी दुकानपर पहुंचा। दोनोंने एक दूसरेको सलाम किया।

सौदागर। भाई साहब। आज गल्लेकी दर और भी चढ़ गई।

सर्राफ। बहुत ही खराब समय आया है।

यह कह सर्राफ नवाबको खरीददार समझ उनकी ओर

देखने लगा। किन्तु नवाब उसकी दुकानके सामने न ठहर बगलके एक तंबोलीकी दुकानके सामने ठहर पान खरीदनेके बहाने दोनोंकी बातचीत सुनने लगे।

सौदागर। ऐसा खराब समय आया है, कि लोग बाजारमें अपना माल निकाल नहीं सकते।

सर्राफ। अगले समयमें ऐसा होता नहीं था।

सौदागर। अजी अगला समय गया खिलन ; राजा बखतावर सिंहके समयमें भी ऐसा होता नहीं था ; वह बाजारका बहुत ही अच्छा बन्दोबस्त करते थे।

नवाब यह बात सुन चौंक पड़े और पान खा बगलकी दुकानके बरतन देखने लगे।

सर्राफ। इसमें सन्देह नहीं, कि राजा बखतावर सिंहका प्रबन्ध प्रशंसनीय था ; किन्तु अब तो बात ही और है। बड़ा ही खराब समय आया है।

सौदागर यह कह चलता बना। मेरी समझमें वह सौदागर बखतावर सिंहका कोई मित्र था और नवाबको पहचान उनके कानोंमें बखतावरकी प्रशंसाकी बातें डालने वहां आया था।

नवाब गंभीर चिन्तामें डूबे महल लौटे। उनके मनमें एक नई चिन्ताका अभ्युदय हुआ था। मनुष्य स्वभावतः नूतनत्व-प्रिय होता है, नवाबको चिन्ताका जो एक नया विषय मिला, तो उसे उन्होंने अपने मस्तकके सुदृढ़ कोष्ठमें बन्द किया। नवाबको चिन्ता थी, तो बखतावर सिंहकी और उस बातकी, जिसे वह बाजारमें सुन आये थे।

दो ही महीने बाद राजा बखतावर सिंह दरबारमें अपनी पुरानी

लगाह लौट आये और नवाबके ऐसे कृपापात्र बने मानो उनके और नवाबके बीच कभी किसी तरहकी रञ्जिश हुई ही नहीं थी। दूसरे वर्ष अच्छी फसल हुई और जिस समय मैंने लखनऊ परित्याग किया, उस समय रखनावर सिंहपर नवाबकी दया-दृष्टिमें कोई फर्क आया नहीं था।

———

अष्टम परिच्छेद

नवाबका हरम।

हम पुरुषोंको हरमके भीतर रहनेवाली बेगमोंके देखनेका सौभाग्य कभी प्राप्त हुआ नहीं था। फिर भी, कितनी ही अङ्गरेज बीबियां हरममें आया-जाया करती थीं; बाहर आने-जानेवाले खाजासराओंका तो वहां पहरा ही रहता था; इस-लिये हरमका भीतरी हाल हमलोगोंसे उतना छिपा हुआ नहीं था।

हरमका एक वैचित्र्य वहांकी पहरादार स्त्रियोंका दल था। हरमके द्वारा द्वारपर इन स्त्रियोंका पहरा रहता था। यह स्त्रियां अपने लम्बे लम्बे बाल अपने शिरपर रख टोपीमें छिपा लेती थीं। वही सङ्गीनदार बन्दूक, वही कारतूसकी पेटी, वही कन्धोंसे कमरतक दाहने-बायेंके तसमे जो सिपाहियोंकी देहपर रहते थे, वही इन स्त्रियोंकी देहपर भी थे। हरमोंके बड़े बड़े बागीचोंमें यह सब स्त्रियां नित्य कवायद किया करती थीं। नवाबकी सैन्यके एक अफसरने इन्हें घूमना, फिरना, आगे बढ़ना, पीछे हटना, तरह तरहकी व्यूह-रचना, बन्दूक भरना, बन्दूक सर करना आदि सभी बातें सिखाई थीं। जिसतरह फौजमें, उसीतरह इन स्त्री सिपाहियोंमें भी सरजण्ट, कारपोरल प्रभृति होते थे। इन पहरादार स्त्रियोंकी छातीपर निगाह न डालनेसे सिपा-

हियों और इन स्त्री सिपाहियोंमें कोई प्रभेद दिखाई देता नहीं था। इन स्त्रियोंमें कितनी ही विवाहिता थीं और समय उपस्थित होनेपर माह दो माहके लिये अपना पद-कार्य्य छोड़ अपने घर बैठती थीं। नवाब ऐसी स्त्रियोंसे तरह तरहकी खिदमी लिया करते थे।

यह स्त्रियां सिर्फ शोभा होकी सामान नहीं थीं, प्रयोजन उपस्थित होनेपर युद्धमें भी प्रवृत्त होती थीं। वर्त्तमान नवाब नसीरुद्दीन जब बच्चे थे, तब इनकी माता और इनके पिता गाजीउद्दीनके बीच युद्ध हुआ। गाजीउद्दीनने कहा, कि मैं नसीरुद्दीनको अवधके सिंहासनपर बैठने न दूंगा; अपनी बेगमसे कहा, कि नसीरुद्दीनको मेरे हाथ सौंप दो। नसीरुद्दीनकी माताने यह आज्ञा प्रतिपालन करनेसे इनकार कर दिया। इसपर उनके पति गाजीउद्दीनने नसीरुद्दीनको छीन लाने या उन्हें मार डालनेके लिये अपनी स्त्रियोंकी फौज भेजी। बेगमके महलमें भी स्त्रियोंकी फौज थी। दोनों दल भिड़ गये। खूब गोलियां चलीं। कितनी ही स्त्रियां मारी गईं। अन्तमें गाजीउद्दीनकी स्त्रियोंकी फौज बेगमकी स्त्रियोंकी फौजसे परास्त हो भाग आई। एकबार ऐसा ही एक युद्ध मेरे सामने हुआ। इन्हीं बेगमने भावी नवाब, नसीरुद्दीनके पुत्रको अपने महलमें बैठा लिया; नसीरुद्दीनके मांगनेपर भी उसे न दिया। यह देख नवाबने अपना स्त्रियोंकी फौज भेजी, उसे आज्ञा दी, कि मेरी माताको महलसे निकाल दो। फिर वैसा ही युद्ध हुआ। घटनास्थल मेरे मकानके समीप था; कितनी ही गोलियां आ मेरे मकानकी दीवार और खिड़कियोंपर लगीं। इसतरह दस पांच गोलियां चलना मामूली बात थी;

लिये पहले मैंने कोई खयाल नहीं किया अन्तने जब गोलि-
को बौछार बढ़ी, तब यथार्थ घटनासे अवगत हुआ। दोनो
रकी बहुतेरी स्त्रियां मारी गईं। खून-खराबी बढ़नेकी आश-
से रेसिडण्ट साहबने इस झगड़ेमें दखल दिया। बेगमको
समझा-बुझा उस महलसे निकाल दूसरे महलमें बैठा दिया,
बेगम अपने पुत्र नसीरुद्दीनकी बातकी अपेक्षा रेसिडण्टकी बातपर
अधिक विश्वास करती थीं। लखनऊमें अङ्गरेजोंकी बातपर
बड़ा विश्वास किया जाता था।

बेगमके इतने यत्न और इतनी चेष्टाओंका कोई फल नहीं हुआ।
नवाबने लोगोंमें प्रकाशित किया, कि जो लड़का मेरी माता लिये
बैठी हैं और जिसे वह मेरे बाद मेरे सिंहासनपर बैठाना चाहती
है, वह मेरा नहीं; जाने किसका है। इतना ही नहीं; नवा-
बने अपनी यह बात विज्ञापनोंमें छपवाई और वह विज्ञापन
लखनऊ नगरके फाटकोंपर चिपकवा दिये। अङ्गरेजोंने भी स्थिर
किया कि ऐसे लड़केको सिंहासनदान ठीक नहीं। इज्जामके
निकाले जानेके बाद ही जब नसीरुद्दीनको विष दिया गया, तब
बेगमने एकबार फिर अपना जोर दिखाया। अपनी फौज द्वारा
रेसिडेन्सी घिरवा ली और उस लड़केको नवाब प्रसिद्ध किया।
किन्तु रेसिडण्ट इन धमकियोंसे भीत होनेवाले आदमी नहीं थे।
उन्होंने छावनीसे अङ्गरेजी फौज मंगाई। अङ्गरेजी फौजके कुछ
ही गोलोंने भीड़ भगा दी। नसीरुद्दीनकी आंखोंके शूल उनके
चाचा सिंहासनपर बैठा दिये गये। मैं समझता हूं, कि नसी-
रुद्दीनकी बूढ़ी माता और उनका वह प्रिय पोता अबतक लख-
नऊहीमें हैं। बूढ़ी बेगमका उद्देश्य अच्छा था; किन्तु वह

पूर्ण हो नहीं सका। यदि समय अनुकूल होता, तो बेगम अपना नाम इतिहासके पृष्ठोपर छोड़ जाती। किन्तु मैं क्या कहता कहता क्या कहने लगा? सिपाही स्त्रियोका हाल छेड़; किन झगड़ोंको ले बैठा।

हरममें और एक दल कहारनोंका था। वह सब हरमकी बेगमो और नवाबको पालकियां हरमके एक भाग दूसरे भागमें पहुंचाया करती था। इन सबका दल भी सुशृङ्खलित था। उनमें अफसर जमादार आदि सभी थीं। इस दलकी अफसर हाथ-पैरसे तय्यार और हंसमुख थी; नवाबकी बड़ी मुंहलगी थी। नवाबमें और उसमें बड़ी ही वाहियात बातें हुआ करती थीं; खैरियत इतनी थी, कि वह बातें गुप्तरूपसे होती थीं, कोई बाहरी आदमी इन्हें सुन नहीं सकता था। बादको मुझे मालूम हुआ, कि नवाब-परिवारके किसो आदमीसे रिश्वत ले इसी स्त्रीने नवाबका विष दे दिया था। सिवा इस दलके हरममें लौंडियोका भी एक दल था। कितनी ही पुश्तैनी लौंडियां थीं, कितनी ही अपने गानेके गुणसे सौन्दर्य्यके गुणसे या अन्यान्य गुणोंसे लौंडियां बना ली गई थीं। इसमें सन्देह नहीं, कि इन्हीं लौंडियो और ख्वाजासराओंके साहाय्यसे हरमकी कितनी ही फालतू बीबियां समाप्त कर दी जाती हैं। हरमकी लौंडियां बड़े यत्नके साथ रखी जाती थीं, कैदोकी तरह रहती थीं सही, किन्तु तकलीफसे नहीं। कितनी ही लौंडियां उम्र बढ़नेपर विवाह करनेकी आज्ञा पाती थीं, लौंडियोंके लड़कोकी भी बड़ी इज्जत होती थी, कभी कभी महलके मालिक या मालिका उन्हें गुलामीकी कैदसे स्वतन्त्र भी कर देती थी, लौंडियोंको

स्वतन्त्र कर देती थीं। अवधमें यह लौंडियां मुसलमान-परिवारका एक अङ्ग समझी जाती थीं। लौंडियोंकी सजा भी बड़ी ही नाजुक होती थी। मैंने सुना था, कि एक बेगमने अपनी लौंडीसे असन्तुष्ट हो उसे बांधनेके लिये चांदीकी जञ्जीर तय्यार कराई थी, इस चांदीकी जञ्जीर द्वारा वह लौंडी दिनमें कई घण्टे बंधी रहती थी। किन्तु लौंडियोंके लिये सदा फूलोंकी शय्या ही तय्यार नहीं रहती; किसी कोपनस्वभाव मालिक या मालिकाके पाले पड़नेपर उनकी दुर्दशाकी अवधि नहीं रहती। मैंने सुना था, कि कलकत्तेकी किसी बेगमने अङ्गरेजोंका कोई खयाल न करके अपनी एक लौंडीको चिलममें गुलकी जगह आङ्गारे रख देनेके अपराधमें कठोर दण्ड दिया था। उसके हाथ-पैर बंधवा उसकी देहपर लाल गुल रखवा दिये थे। लौंडीकी देहपर जखम हो गये, जिनके फलसे उसकी मृत्यु हुई। बेगमपर मुकद्दमा चला, उन्हें यावज्जीवन द्वीपान्तरवासका दण्ड मिला। खैर; अपने लखनऊके प्रवासमें मुझे इसतरहकी बातें बहुत ही कम सुनाई दीं। जितनी बातें सुनाई दीं, उनसे मैं यह निर्णय कर सका, कि लौंडियोंको जो सजायें मिलती हैं, वह मालिक-मालिकाओंके क्रोधसे नहीं, महलके खाजासराओं या हिंजड़ोंकी शिकायतसे। वह जिस लौंडीसे चिढ़ते हैं, उसकी शिकायतकर स्वामी या स्वामिनसे आज्ञा ले उसे स्वयं दण्ड देते हैं और दण्ड देनेमें एक तरहकी लज्जत पाते हैं।

लखनऊके राजसंसार और अन्यान्य मुसलमान-परिवारमें हिंजड़ों या इन खाजासराओंकी भरमार होती है। नवाबके

बड़ा ठस्सा, बड़ी हुकूमत रहती है। उनकी मातहत स्त्रियां उनकी बातें ध्यानसे सुनती हैं, उनकी आज्ञायें पालनकर अपनेको धन्य समझती हैं और उनके आचरणको नकलकर अपनेको गौरवान्वित मानती हैं। किन्तु बेगमोंका संसार चहारदीवारीके भीतर ही भीतर है। एक बेगमने एक सुन्दर फूल देख कहा था,—"अहा। कितना सुन्दर है। जिस जमीनने इसे उत्पन्न किया है, वह कितनी सुन्दर होगी।" एक बेगमने पूछा था,—"यह सब कैसे उगते हैं। जमीनपर कैसे दिखाई देते हैं?"

आंगनकी तरह बड़े बड़े कमरोंमें भी बेगमें बैठती हैं। सिवा बेगमके मसनदसे टिककर और कोई बैठ नहीं सकता। फर्शपर किसी कालीनपर कोई दो गज चतुष्कोण मखमली या रेशमी जरतार आसन होता है, जिसपर उसी कपड़े और जरीके वैसे ही कामकी मसनद रहती है। मसनदकी दोनों ओर दो तकिया रहते हैं; यह भी मखमली और जरतार होते हैं। नवाब नसीरुद्दीनके पिता गाजीउद्दीन झाड़-फानूसके उतने शौकीन नहीं थे। उनके समय सिर्फ दरबारके कमरे और इमामबाड़ोंमें झाड़-फानूस रहते थे। इन नवाब नसीरुद्दीनके समय भीतर-बाहर सर्वत्र शीशे ही शीशे झलकने लगे थे; हरेक हरम—विशेषतः उन हरमोंके हरेक मिलने-जुलनेके कमरेमें झाड़-फानूसकी बड़ी बहार दिखाई देने लगी थी।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि नवाबकी हरेक बेगमके लिये एक जुदा हरम था। कोई कोई बेगम महीनोंतक नवाबके दर्शन न पाकर भी उनकी बेगम ही थीं। नवाब और

उनकी लौंडियोंके बीचका सम्बन्ध जानकर भी बेगमें किसी तरहकी शिकायत करती नहीं थीं। नवाब जिसीको चाहें,—किसीको प्यार करें; किन्तु इससे हरमके भीतर बैठी बेगमकी ममता तथा प्रभुत्वमें किसी तरहकी कमी आ नहीं थी। बेगमोंकी पोशाकें और पोशाकोंके पहननेका ढङ्ग हमने प्रायः ही देखा था। भोजनके समय या अन्यान्य समय नवाबकी सेवा करनेवाली खूबसूरत लौंडियोंकी भडकीली पोशाकें हमने प्रायः ही देखी थीं; सिवा इसके नवाब स्वयं कभी कभी यह पोशाकें दिखा दिया करते थे। नवाब जब हरममें स्नान करते थे या पाक होते थे, तब बेगमोंकी पोशाकें पहन लिया करते थे और उन्हीं पोशाकोंमें हंसने-हंसानेको हमारे सामने निकल आया करते थे। कपड़े जुदा हो सकते हैं, पोशाकका साज-सामान जुदा हो सकता है; किन्तु उनकी बनावट प्रायः समान होती है। शिलवारोंकी बनावट एक ही है; हां कोई रेशमी होता है, कोई साटनका; किसीमें काम काम रहता है, किसीमें अधिक। पायजामे बहुत बड़े बड़े होते हैं। कभी कभी आगे खोस लिये जाते हैं, कभी कभी खुले छोड़ दिये जाते हैं; जो चलनेके समय पहननेवालियोंके पीछे पीछे दूरतक पसरे रह आगे खिसकते हैं। इजार सुनहले-रुपहले दोनो तरहके तारोंके बने होते हैं। इजारके दोनो बहुमूल्य छोर पहननेवालोंके घुटनोंतक लटकते रहते हैं। चूड़ीदार पायजामे ऊपर चौड़े और नीचे नंकरे होते हैं। पिंडलियोंसे नीचे बहुत ही तङ्ग और फंसे हुए होते हैं। सबसे नीचेकी कुरती या तो जालीकी होती है या बहुमूल्य बहुत ही बारीक पड़की; कुरतीको

खूबी यह है, कि वह बदनपर ठीक ठीक बैठ जाती है, उसमें एक भी शिकन रहनेसे दूषित समझी जाती है। शाही बेगमोंकी कुरतियोंमें गलेके समीप जरीके तरह तरहके बेल-बूटे बने होते हैं। इस कुरतीके ऊपर बड़ा ही बहुमूल्य अंगरखा कुरता होता है। सबके ऊपर दुपट्टा होता है। दुपट्टा या तो सुनहले-रुपहले तारोंका होता है या मखमल प्रभृति बहुमूल्य कपड़ेका, जिसके किनारे चमकीले तारों द्वारा बड़े श्रमसे भरे जाते हैं। दुपट्टा सिरसे ओढ़ा जाता है और ओढ़नेवालीका सौन्दर्य्य तथा शान बढ़ाता है।

ऐसी ही पोशाकोंसे सजी अपने साफ और सुन्दर छोटे छोटे पैरोंमें नुकीला कामदार मखमली जूता पहने किसी युवतीका चित्र अपने सामने खींचिये। बनी हुई भवोंके नीचेकी वह बड़ी बड़ी आंखें कितनी प्यारी हैं। ऊंची पेशानीवाले गोल मुखड़ेके ऊपर और अगल-बगल पड़ी सुगन्धित तेलसे बसी जुलफें कहांतक चित्ताकर्षक हैं। जुलफोंका अधिकांश भाग चोटीमें गुंथकर पीठपर पड़ा है। कीमती बाले-बालियों और कर्णफूलसे दोनों कान भरे हुए हैं नाकमें बुलाक या नथ झूलता है। इन आभूषणोंमें मणि-मुक्ताकी कमी नहीं। ऐसा ही चित्र अपने सामने खींचिये, जिसका ऊपरी अङ्ग चमकीली पोशाकों द्वारा आधा छिपा और आधा खुला हो, जिसके नीचेका अङ्ग भड़कीले पायजामेसे सुशोभित है। यह चित्र अपने सामने खींचते ही आप अवधकी एक बेगमका नकशा हृदयङ्गम कर सकेंगे।

कभी कभी बेगमें इमामबाड़ा या किसी पीरकी मजार जाती हैं।

पूज्य स्थानोंमें पुत्र-प्राप्तिकी प्रार्थना ही इस यात्राका उद्देश्य होता है। बेगमोंकी सवारी बड़ी ही धूमके साथ निकलती है। प्रधान बेगमकी सवारीमें बादशाहके सामने भी नक्कारा बजता है और उनकी पालकीपर जरीका छाता, चँवर, मोरछल आदि रहते हैं। मान लीजिये, कि बादशाह बेगम या बड़ी बेगमकी सवारी आ रही है। आगे आगे भड़कीली वरदीवाले बेण्डवालेके साथ शाही गार्ड सिपाही हैं। उनके पीछे कोई दो बटालियन पैदल फौज। उनके पीछे शत शत असा और बल्लमबरदार हैं। उनके पीछे भण्डीबरदार हैं। इसके पीछे बेगमकी पालकी है। पालकी क्या है, चांदीकी जङ्गम कोठरी है, जिसके दोनों सिरोंपर चांदीसे मढ़े दो डण्डे हैं। यह डण्डे भड़कीली वरदियां पहने कहारोंके कन्धोंपर हैं। प्रत्येक बार बीस कहारोंका दल पालकी उठाता है और प्रत्येक पाव मीलपर यह दल बदला जाता है। कहारोंकी वरदियां चुस्त और सफेद हैं; ऊपर एक कबा है, जिसके किनारोंपर सुनहले तारोंकी गुलकारी है। कहारोंके शिरोंपर लाल रङ्गकी गोल पगड़ियां हैं, जिनके भब्बे उनके कन्धेपर लटकते रहते हैं और जिनके सामने चमकीली मछलियां लगी रहती हैं। पालकीके पीछे कहारनोंका दल है; दरगाहके द्वारपर पालकी पहुंच चुकनेपर उसे कहारनियां दरगाहके भीतर ले जाती हैं। पालकीकी चारो ओर कड़खैत, नकीब और बल्लमबरदारोंका दल है। पालकीपर मुट्ठियों पैसे-रुपये न्योछावर हो रहे हैं और अगणित कङ्गाल उन्हें लूट रहे हैं। पालकीके पीछे पीछे प्रधान खवासासरा या हिंजड़ेका हाथी है। हिंजड़ेकी देहपर आज बड़ी ही भड़कीली पोशाक

है; कन्धेपर महामूल्य शाल। हाथीके पीछे सुसाहबों, खवासों आदिके रथ, चण्डोल, पालकियां आदि हैं। गिनतीमें कोई डेढ़ या दो सौ होंगी। इनको भी चारो ओर असावरदार आदि हैं। पाठक पूछ सकते हैं, कि इतनी स्त्रियां शाह-बेगमकी कौनसी सेवा करती होंगी? इनमें कोई कहानी कहती है, कोई पैर दबाती है, कोई उगालदान लिये खड़ी रहती है, तरह तरहकी बातें सुना बेगमका मन बहलाया करती है, कोई कुरान पढ़ती है। महलमें छोटेसे छोटा काम करके भी बाहर यह सब परदानशीन हैं; परदेसे बाहर नहीं आतीं। इस धूमसे बेगमकी सवारी निकलती है और उस समय वह शोर होता है, कि कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती।

नवम परिच्छेद।

पशु-पक्षियोंकी लड़ाई।

अवधके दरबारमें पले हुए पशु-पक्षियोंकी लड़ाई साधारण आमोदकी सामग्री बन गई थी। मुरगेकी लड़ाई नवाबको बहुत पसन्द थी। साधारणतः भोजनोपरान्त टेबुल साफ हो जानेपर मुरगोंके पैरोंमें छोटी छोटी छुरियां बांध दी जाती थीं और वह नवाबके सामने लड़नेके लिये छोड़ दिये जाते थे। नवाबकी आज्ञा होते ही दो मुरगे टेबुलपर छोड दिये जाते थे और कुछ देर तक वह दोनो इधर उधर घूम घूमकर देखते और मन ही मन शायद यह सोचते थे, कि वह वहां किस लिये लाये गये थे। अन्तमें एक मुरगी दोनोंके बीच रख दी जाती थी। मुरगे दोनो उसकी ओर बढ़ते थे। दोनो एक दूसरेका बढ़ना देख असन्तुष्ट होते थे, दुश्मनी आरम्भ हो जाती थी। अन्तमें दोनो गुंथ जाते थे। मुरगी दोनोंका युद्ध आरम्भ होते ही वहांसे खिसक जाती थी। दोनो पर फैला गरदनें आगे बढ़ा समय समयपर गुंथ जाते थे और समय समयपर आक्रमण करनेकी घातमें इधर उधर घूमते फिरते थे। दोनो ही एक दूसरेके खूनके प्यासे हो जाते थे; एक दूसरेका मांस नोच लेनेमें—रक्त पी जानेकी चेष्टा करते थे। टेबुलके गिर्द बैठे तमाशाई; विशेषतः नवाब बड़ी ही उत्सुकताके साथ इस लड़ाईका तमाशा देखते थे।

अन्तमें दोनो प्रतिद्वन्द्वी आन छुरियोंपर से हाथबात वाहुमें

उलझ लड़ जाते थे। दोनोंके पैरोंकी बंधी हुई छुरियां दोनोंकी देहमें घुस जाती थीं; दोनो की चोंच दोनोंकी आंखोंपर चलने लगती थीं। दोनोकी देहसे रक्त बहने लगता था। इस अन्तिम घोर युद्धके उपरान्त एक मुरगेकी जय और दूसरेकी पराजय होती थी। विजित मुरगा युद्धस्थल परित्यागकर दूर जा खड़ा होता था; जयी गरदन ऊंचीकर बांग देने लगता था। दर्शक तारीफ करने लगते थे। किन्तु निश्चिन्त होनेकी जरूरत नहीं; देखते देखते विजित मुरगा एकबार फिर जयी मुरगेकी ओर बढ़ता था। उसकी देह क्षत-विक्षत हो जानेपर भी वह फिर लड़ना चाहता था। दोनो एकबार फिर गुंथ जाते थे। किसी मुरगेकी आंख निकल जाती थी; किसीकी चोंचकी बगलका मांस उड़ जाता था। अन्तमें दोनोंमें एक अधिक रक्त बह जानेकी वजह मरकर या मरनेके लिये टेबुलपर गिर पड़ता था, दूसरा मुरगा विजयी कहलाता था सही, किन्तु उसकी दुर्गति हो जाती थी और कुछ देर बाद वह भी मर जाता था। इस एक ही लड़ाईसे नवाबको सन्तोष नहीं होता था। आप स्वेच्छानुसार ऐसी ही और भी कई लड़ाइयां देखते थे, कभी मुरगोंकी लड़ाईके बाद मुर्गोंकी ही लड़ाई होती थी, कभी इसके बाद तीतर, बटेर, आदि अन्यान्य पक्षियोंकी।

हिमालयकी तराईमें पकड़े और लखनऊमें सिखाये गये हरिणोंकी लड़ाई प्रायः बाग या किसी हातेमें हुआ करती थी। नवाब बेड़ेके बाहर बरामदे या दालानमें बैठते; उनके दरबारी उनकी चारो ओर खड़े होते थे। हातेमें दो हरिण छोड़ दिये जाते थे। दोनो एक दूसरेसे भिड़ जाते थे। सींगसे सींग

बढ़ती थी; शिरसे शिर टकराता था। दोनो अपने अपने खुर जमीनमें गाड़ एक दूसरेको पीछे हटानेकी चेष्टा करते थे। अन्तमें एककी शक्ति जवाब देती थी; वह पीछे हटता था। तमाशाई शोर मचाते थे। विजयी विजितको ढकेलता हुआ हातेसे जा लगाता था, वहां विजितको दबा उसकी देहमें सींग घुसेड़ देता था समय समयपर विजित हरिण विजेताके साम-नेसे निकल भागता था और प्राण-रक्षाके लिये हातेमें चारो ओर चक्कर लगाने लगता था। किन्तु प्राण-रक्षा असम्भव हो जाती थी। घातमें लगा विजयी हरिण एक बार फिर विजित हरिण-पर आक्रमण करता और उसकी देहमें अपनी सींग घुसेड़ उसे धराशायी बना देता था। विजित हरिण अपनी बड़ी बड़ी आंखें निकाल आंसू बहाता अन्तमें इहलोक परित्याग करता था। नवाब और तमाशाई 'शाबाश शाबाश'की आवाजें लगा विजेताका हौसला बढ़ाते थे।

किन्तु हाथी, गेंडे, शेर प्रभृति भयङ्कर पशुओंकी लड़ाईकी अपेक्षा मेंढे, हरिण प्रभृति की लड़ाई किसी गिनतीमें नहीं थी। लड़ाईसे पहले हिंस्र पशु कई दिनोंतक भूखे और प्यासे रखे जाते थे। इस क्षुत्पिपासासे उनका युद्ध और भी भीषण होता था। नवाबकी पशु-शालामें कगरा नामक एक शेर था। अच्छा था, इतना बड़ा और इतना सुन्दर शेर मैंने कभी देखा नहीं था। बहुत ढूंढनेपर भी इस शेरका जोड़ा हाथ आता नहीं था। एक दिन एक एक समाचार मिला, कि तराईमें एक बहुत बड़ा शेर पकड़ा गया है। यह समाचार पा सभी प्रसन्न हुए; सबने खयाल किया, कि अब कगरा और उस शेरकी

लड़ाई होगी। उन्हीं दिनो कम्पनीको फौजके प्रधान सेनापति लखनऊ आये। उन्हें प्रसन्न करनेके बड़े बड़े यत्न किये गये। इहाता तय्यार किया गया। इहातेके किनारे राज-सिंहासन बिछाया गया, जिसपर बहुमूल्य शामियाना ताना गया। नवाब देशी पोशाक और नया मुकुट धारणकर सिंहासनपर बैठे। उस समय उनकी शोभा देखने योग्य थी, उस समयकी उनकी वह मनोहारिणी मूर्त्ति मुझे कभी न भूलेगी। प्रधान सेनापति अपनी पूरी वरदीमें थे। रेसिडण्ट साहब मामूली पोशाक पहने थे। इहातेकी चारो ओर तमाशाइयोकी भीड़ लग गई थी। कगरा और तराईवाला पिंजरे द्वारा इहातेमें लाये गये। दोनो अपने अपने पिंजरेमें घूम रहे थे; कभी कभी डकारते और अपने बड़े बड़े दांत निकाल जुम्हाई लेते थे। दोनो कई दिनोंसे भूखे और प्यासे रखे गये थे और दोनो एक दूसरेको देख डकारने और दांत दिखाने लगे थे। प्रधान सेनापतिको निगाहें शेरोंपर देख उनसे नवाबने पूछा,—"कहिये, आप किस शेरपर बाजी लगाना चाहते हैं?"

प्र० से०। हुजूर मुझे क्षमा ही कीजिये, तो अच्छा।

नवाब। (रेसिडण्टकी ओर मुड़कर) कगरापर सौ अशरफियां।

रेसिडण्ट। मञ्जूर। आशा है, कि तराईवाला ही जीतेगा।

यह सुन नवाब मारे प्रसन्नताके दोनो हाथ मलने लगे। फिर एकाएक वजीरकी ओर मुड़ प्रश्न किया,—"क्या आप तराईवाले-पर शर्त बदना चाहते हैं?"

वजीर । हुजूर । रेसिडण्ट साहबको पसन्दका मैं कायम हूं ; मेरा भी तराईवाला ही समझिये ।

नवाब । कगरापर सौ अशरफियां ।

वजीर । मञ्जूर ।

इशारा किया गया । दोनों पिञ्जरोंके द्वार खोल दिये गये । तराईवाला एक छलांगमें हहातेमें आया और बहुत लम्बी एक जुम्हाई ले अपनी दुम इधरसे उधर और उधरसे इधर जमीनपर पटकने लगा । कगरा भी हहातेमें आया ; किन्तु खूब संभलकर । कोई पचास फुटके अन्तरपर दोनो एक दूसरेके सामने ठहर गये । दोनोंके मुंह खुले हुए थे ; दोनो एक दूसरेको देख रहे थे, दोनोंकी दुमें हिल रही थीं । अन्तमें कगरा कुछ कदम और आगे बढ़ा । उधर तराईवाला जिसजगह खड़ा था, उसी जगह बैठ गया । उछलनेसे पहले शेर जिस तरह बैठता है, तराईवाला उसीतरह अपनी जगह बैठा । कगरा अपने शत्रुकी यह चाल देखकर भी आगे बढ़नेसे न रुका ; वह चक्कर बनाता उसकी ओर बढ़ता ही गया ।

अन्तमें तराईवाला भी अपनी जगहसे उठा और वैसा ही चक्कर बनाता कगराकी ओर बढ़ने लगा । तमाशाई टकटकी लगाये यह कौतुक देख रहे थे । हरेककी निगाह दोनों शेरोंपर थी । तराईवाला किसी कदर उजला और कगरा किसी कदर मैला था । फिर भी ; दोनो ही सुन्दर थे ; दोनो ही हृष्ट-पुष्ट थे । कुछ ही कदम और आगे बढ़ एकाएक कगराने आक्रमण किया । मानो कगरा अपना तेज दबानेमें असमर्थ होकर ही

एकाएक टूट पड़ा। तराईवाला भी तय्यार ही था। जैसे ही कगरा उछला, वैसे ही वह भी उछला और कगरासे दूर जा पड़ा। आक्रमण और बचाव दोनो पलक झपकते हुए। कगराका वार खाली गया। वह अभी संभलने भी पाया था; ऐसे समय तराईवाला उसपर आ गिरा। तराईवालेका पञ्जा कगराकी गरदनपर पड़ा और उसका मुंह उसके गलेकी ओर बढ़ रहा था। एक क्षणमें इतना हुआ। दूसरे ही क्षण कगराने अपनी सारी शक्तिसे एक छलांग मारी और कुछ दूरतक तराईवालेको घसीट अन्तमें अपनेको उससे छुड़ा लिया। उसके कन्धे और गलेपर गहरे जख्म आ गये। जखमी होनेसे कगरा और भी क्रुद्ध हुआ।

नवाब। मरहबा, आफरी। अब मैं कगराके लिये दो सौ अशरफियां बदनेको तय्यार हूं।

वजीर। जहांपनाहकी जैसी मरजी।

उधर कगरा जब अपनेको छुड़ाकर दूर जा खड़ा हुआ, तब कुछ क्षणतक दोनो शेर एक दूसरेको देखते रहे। दोनोंके मुंह खुले हुए थे; दोनोंके पञ्जे निकले हुए थे, दोनोंकी आंखोंसे मानो चिनगारियां निकल रही थीं। अबके फिर कगराने ही आक्रमण किया। इस बार तराईवाला छूट न सका; इसलिये वह कगरासे भिड़ गया। दोनो शेर खड़े हो गये। बारंबार बड़े बड़े पञ्जे चलने लगे और दोनोंके मुंह दोनोंके गलेकी ओर लपकने लगे। यह सब काम इतनी फुरतीसे हो रहे थे, कि समझमें नहीं आते थे। दोनो इसतरह लड़ते और भयङ्कर गर्जन करते हुए एक दूसरेके समीप होते जाते थे।

में दोनोके मुंह दोनोंके गलेपर जम गये, दोनोंके पञ्जे दोनोंके
ओर गरदनमें न घुसे। यह बड़ा भयङ्कर अथच दर्शनीय
। उपस्थित हुआ।

दोनो अपने पिछले दोनो पैरोंपर खड़े हो भयङ्कर युद्धमें
त थे। दोनोके मुंह और-पञ्जे अपने शत्रुकी देहमें घुस
थे, दोनोकी देहसे रक्तकी धारा बह रही थी; दोनो प्राण
या लेनेकी चेष्टा कर रहे थे।

पढ़नेमें देर लगती है, किन्तु इस युद्धमें देर नहीं लगी।
ाग्राइयोंसे भरे हुए उस विशाल मैदानमें चारो ओर सन्नाटा
या हुआ था। लोग मुंहसे एक शब्द भी न निकालकर
टकी लगाये लड़ाई देख रहे थे। अन्तमें देखते देखते कगराने
ाईवालेको जमीनपर पटक दिया। दोनो गुंथे हुए तो थे
, लगे दूर दूरतक लुढ़कने। कभी एक ऊपर होता था,
ी दूसरा। अन्तमें कगरा ऊपर हुआ। नवाबने पुकारकर
ावाज दी,—"शाबाश, कगरा, शाबाश। कगरा बाजी मारना
ाहता है।"

किन्तु कगराकी विजय चणस्थायी निकली। कगराके दोनो
र तराईवालेके पेटमें घुसे हुए थे, उधर तराईवालेका मुंह
गराके गलेसे लगा हुआ था; ऐसे समय नीचे पड़े तराई-
ालेने कगराके चेहरेपर एक तमांचा लगाया। तमांचा गजबका
ा। कगराके चेहरेका मांस और उसकी एक आंख बाहर
िकल पड़ी। कगरा मारे वेदनाके चीख उठा और अपनेको
त्रुके पञ्जेसे छुड़ानेकी चेष्टा करने लगा। किन्तु छुड़ाना कठिन
ा। तराईवाला दृढ़तापूर्व्वक उसे अपने पञ्जेमें पकड़े

उसके दांत कगराके गलेमें डूबे हुए थे। कगरा कुछ दूरतक तराईवालेको घसीट ले गया, फिर भी, तराईवालेने कगराको न छोड़ा। अन्तमें तराईवाला एकाएक तड़पकर उठा और उसने कगराको गिरा उसकी छातीपर सवारी की।

युद्ध समाप्तिके समीप था। कगरा नीचे गिरा था और उसके जखमोंसे शीघ्र शीघ्र रक्त बह रहा था। उधर तराईवालेने अपना मुंह कुछ और ऊपर बढ़ा कगराके गलेसे लगा दिया। कगराने दश पांच तमाचे चला तराईवालेका मांस नोच लिया सही; किन्तु उसकी शक्ति शीघ्र शीघ्र घट रही थी।

तमाशाइयोंने एक स्वरसे चिल्लाकर कहा,—"कगरा हारा।"

नवाबने भी "बेशक" कह नौकरोंको आज्ञा दी, कि वह तराई-वालेको अखाड़ेसे निकाल दें। लाल लाल लोहेकी सलाखें तराईवालेकी देहसे छुलाई जाने लगीं। बहुत जलनेके बाद तराई-वालेने कगराका पिण्ड छोड़ा। उसके पञ्जे और मुंहसे खून टपक रहा था। दोनो शेरोंके पिंजरे खोल दिये गये। कगरा बड़ी ही कठिनतासे अपने पिंजरेमें जा सका। लाल सलाखोंके साहाय्यसे तराईवाला पिंजरेमें बन्द किया गया। तराईवाला भी अच्छा नहीं था, जगह जगहसे उसकी देह विदीर्ण हो गई थी और उसके चतस्थानसे रक्तकी धारा बह रही थी।

———

दशम परिच्छेद।

बड़े पशुओंकी लड़ाई।

छोटे छोटे पशु और पक्षियोंकी लड़ाइयां देख चुके, अब बड़े बड़े पशुओंकी लड़ाइयां देखिये। ऊंटकी लड़ाई मनोहर न होनेपर भी भीषण होती है। ऊंट निरीह पशु हैं; लड़ाई-भिड़ाईसे उतना सरोकार नहीं रखते; तथापि लखनऊमें उन्हें भी लड़ना पड़ता था। लड़ाईके मैदानमें दो ऊंट जब छोड़े जाते थे, तब दोनों पहले खूब बलबलाते थे; इसके बाद अपने मुंहसे खूब थूक उड़ाते थे, अन्तमें एक ऊंट दूसरेका होंठ पकड़ नोच लेता, रक्त बहने लगता था। लड़ाईमें ऊंटोंकी उस लम्बी-चौड़ी बेढङ्गी देहपर कोई असर पहुंचता नहीं था; सिर्फ उनके चेहरेपर बड़े बड़े घाव हो जाते थे।

गेंडे और गेंडेकी लड़ाई, गेंडे और हाथीकी लड़ाई और गेंडे और शेरकी लड़ाई अधिक भयङ्कर होती थी। इससे भी अधिक भयङ्कर लड़ाई हाथी और हाथीकी होती थी। एक दिन गोमतीकिनारे हाथीकी लड़ाई हुई। नवाबके साथ हमलोग एक सुरक्षित स्थानमें तमाशा देखने बैठे। नशेसे दोनों हाथी मस्त कर दिये गये थे; नवाबके इशारेपर दोनों मैदानमें लाये गये। दोनोंपर महावत बैठे थे। दोनोंने ज्यों ही एक दूसरेको देखा, वैसे ही दुम और सूंड उठा एक दूसरेकी तरफ झपटे। दोनोंने समीप पहुंच एक दूसरेको

टक्कर दी, मानो पत्थर पर पत्थर पड़ा; दूर दूरतक आवाज पहुंची। पहली टक्कर हो चुकनेपर दोनो हाथी एक दूसरेको पीछे हटाने लगे। शिरसे शिर भिड़ गया, दांतसे दांत भिड़ गये, सूंड जिस तरह पहले वायुमें उठे हुए थे, इसी तरह अब भी उठे रहे। दोनो हाथियोंके पैर बड़ी ही दृढ़ताके साथ जमीनपर जमे हुए थे। दोनो रह रहकर जोर लगा रहे थे। जोर लगानेके समय दोनोंकी पीठें कमानकी तरह उठ आती थीं। इस अवसरमें महावत बेकार नहीं थे। वह अपने हाथियोंको कस कसकर अङ्कुश मारते और उनके गलेमें जितना जोर था, उतने जोरसे चिल्ला चिल्लाकर अपने अपने हाथियोंको बढ़ावा दे रहे थे। यह वह अवसर था, जिसमें तमाशाई तन्मय हो पाषाण-मूर्त्ति बन तमाशा देख रहे थे; उन्हें अपने हृदयकी धड़कनतक सुनाई देती थीं।

लड़ाई जोरका खेल है। दोनोंमें जो जोरदार होता है, वही बाजी ले जाता है। कभी कभी जोरदार अपने भद्दे पनसे कमजोरको बाजी मार लेनेका अवसर देता है सही; किन्तु ऐसी घटना विरल होती है और इस हाथीकी लड़ाईमें तो और भी विरल। कमजोर हाथी जब भागता है, तब अपनी विशाल देहको वजह हरिणकी तरह चौकड़ियां भरता भाग नहीं सकता, पीछा करनेवाला हाथी द्वारा शीघ्र ही गिरा दिया जाता है। इसके उपरान्त ही लड़ाईकी समाप्ति होती है। विजयी हाथी बड़ी ही निर्दयताके साथ अपने सामने पड़े असमर्थ हाथीके पेटमें अपने दांत घुसेड़ देता है, जिससे अभागा तुरन्त मर जाता है। और यदि विजित हाथी फुरतीला हुआ; उसमें

भागनेकी शक्ति हुई, तो भागता भागता अन्तमें या तो निकल जाता है, या मनुष्यके मध्यस्थ होनेतक सूंड और दांतकी भयङ्कर मार खाता है।

दोनों हाथी अपने प्रतिद्वन्द्वीको पीछे हटानेके लिये जोरपर जोर लगा रहे थे। इनमें एकका नाम मालियर था। मालियरके मुकाबिलके हाथीका अगला पैर एकाएक उठ गया; कोई भी उद्देश्य समझ न सका, कि भागनेके लिये उठा था और जमकर जोर लगानेके लिये। दूसरे ही क्षण उद्देश्य प्रकट हो गया; जोर लगानेके लिये नहीं; पीछे हटनेके लिये उठा था। उठा हुआ पैर जमीनपर आया और दूसरा जमा हुआ पैर जमीनसे उठा; इसीतरह कई बार अगले पैरोंमें एक गिरा तो दूसरा उठा। मालियरके महावतने यह गति देखी और मतलब समझ अपने हाथीको बढ़ावा देनेमें अपनी सारी गलेकी शक्ति और अङ्कुश मारनेमें अपना सारा भुज-बल लगाने लगा। किन्तु मालियरको इतने बढ़ानेकी जरूरत नहीं थी। वह पुराना लड़ैया था और समझ गया था, कि उसकी पिछली बहुसंख्यक विजयोंमें और एक शामिल हुआ चाहती है। विजयप्राप्तिकी प्रत्याशासे मालियर और उसका महावत दोनों अधीर हो उठे।

इस समय दोनों हाथी गोमती तटसे कुछ ही गज दूर थे। हम अपनी जगहोंसे उनकी प्रत्येक गति-विधि अच्छी तरह देख सकते थे। हमने देखा कि मालियरके प्रतिद्वन्द्वीके पैर उखड़े और वह कदम कदम नदीकी ओर पीछे हटने लगा। अन्तमें एकाएक वह पीछे उछला और घूम नदी-तटसे गहरा जलमें कूद पड़ा। उसका महावत उसकी पीठपर जैसे रस्सेसे चिमट गया

और जिस समय वह नदी पैरने लगा, उस समय फिर उसके गरदनपर सवार हो गया। मालियर अपने शत्रु के इस तरह निकल आनेसे बड़ा ही क्रुद्ध हुआ। उसके महावतने उसे पानीकी ओर रेल देनेकी चेष्टा की; किन्तु वह एक जगह ठहर गया और रोषसे जलती अपनी आंखों द्वारा अपने आक्रमणके लिये कोई चीज या किसीको ढूंढने लगा। इस अवसरमें महावत मालियरको मार मारकर आगे बढ़नेके लिये ललकारता जाता था। महावतकी मार मालियरके लिये असह्य हुई। वह एकाएक इस वेगसे मुड़ा, कि महावतका आसन उखड़ गया और वह धमसे हाथीके ठीक सामने जमीनपर आ गिरा। मरा—मरा—महावत मरा। अभागा गिरनेकी चोटसे विकल हो गया, न्स्यु स.मने देख घबरा गया। उसका एक पैर मुड़कर उसके नीचे हो गया था; दूसरा पैर फैला हुआ था; भयके पागलने मानो उस मत्त गजेन्द्रको रोकनेके लिये अपने दोनों हाथ आगे उठा दिये थे। एक क्षणमें क्रुद्ध हाथीका एक पैर महावतपर आ पड़ा, उसकी हड्डियोंके टूटनेकी चरचराहट हमारे कानोंतक आई; एक ही दावमें महावतकी देह निर्जीव रक्त-मांसके पिण्डमें परिणत हुई।

यह सब बातें पलक झपकते हुईं। वह उसका गिरना, वह उसका हाथ उठाना, वह झपटकर हाथीका पैर रखना, वह उस पैरके दबावसे महावतका मांस-पिण्डमें परिणत होना; एक या दो क्षणकी बात थी, अभागेको चिल्लानेतकका अवसर न मिला। किन्तु इतने होसे हाथीका क्रोध शान्त नहीं हुआ; उसने मृत महावतका एक हाथ पकड़ा और उसे उस झपटकी

हुई सायसे उखाड़ लिया। कुछ देर सूंडमें रख अन्तमें जोरसे वायुमें उछाल दिया; रक्तमांसके छींटे दूर दूरतक गये। बड़ा ही भीषण दृश्य था। इसीतरह दूसरा हाथ भी उखाड़ा और फेंका गया।

ऐसे स य यह क्या दिखाई देता है? जिस ओरसे मालियरने प्रवेश कि ा था, उस ओरसे वह कौन दौड़ा आ रहा है? एक स्त्री है; अभागिनी सीधी मत्त गयन्दकी ओर दौड़ी चली जाती है। अकेली अभागिनी नहीं है; उसकी गोदमें एक शिशु-सन्तान भी है। हम सब अङ्गरेज व्याकुल हो अपनी अपनी जगह खड़े हो गये; हममें एकने कहा,—"और दो खून हुआ चाहते हैं, जहांपनाह। क्या यह किसी तरह रोके जा नहीं सकते?"

नवाब। बखुदा; यह महावतकी बीबी है, इस वक्त क्या तदबीर की जा सकती है?

रेसिडण्टने तदबीर हूंढ़नेकी आज्ञा दी थी। कितने ही सवारोंको आज्ञा दे दी गई थी, कि वह आगे बढ़ें और अपनी लम्बी लम्बी बरछियोंके साहाय्यसे स्त्री और उसके शिशु-सन्तानकी रक्षा करें। आज्ञा दी गई सही; किन्तु इसका प्रतिपालन होना समयसापेक्ष काम था। यह सवार मस्त हाथीके समीप पहुंच उसपर अपनी बरछियां चला उसका मुंह फेरते हैं और अपना वार खाली जानेपर बड़ी ही फुरतीके साथ एक ओर भागते हैं। जिस समय यह सवार आगे बढ़नेके लिये तय्यार हो रहे थे, उस समय वह स्त्री हाथीके समीप पहुंच रही थी। उसने सामने [illegible] लोने चीखकर कहा,—"मालियर! पापी! बेईमान! अरे तूने

यह क्या कर डाला? जब मेरे घरका ताज छीन लिया, तब इस घरको भी मिटा डाल। मेरे जिस आदमीको तू इतना चाहता था, उसे तूने मार डाला, अब मुझे और इस बच्चेको भी मार अपनी आत्मा ठण्ढी कर।"

हम समझते थे, कि अब हाथी पलटा और अब उस स्त्री और बच्चेको समाप्त करना चाहता है; किन्तु ऐसा नहीं हुआ; मलिथरका क्रोध ठण्डा पड़ गया और अब उसके मनमे अपने किये कुकर्मका पछतावा आया। उसने अपना पैर उस पिसी हुई लाशसे उठा लिया। स्त्री अपने शौहरकी लाशपर गिर पड़ी और हाथी दुःखपूर्ण दृष्टिसे विधवाका मातम देखने लगा। यह दृश्य बड़ा ही मर्म्मस्पर्शी था। दुःखिनी उच्चस्वरसे क्रन्दन करती शिर पीट रही थी; छाती पीट रही थी और समय समयपर मलिथरकी ओर घूम उसका तिरस्कार कर रही थी। उधर भीम-काय गजराज स्त्रीका यह दुःख देख दुःखित हो रहा था। शिशु लाशके पास बैठा दिया गया था; खेलता खेलता वह मालिथरके समीप चला गया और कई बार उसने उसकी सूँड पकड़ ली। शिशु और हाथीकी क्रीड़ा कोई नई बात नहीं, महावतके शिशु प्रायः ही हाथियोंके पैरतले जा खेला करते हैं। हाथी शिशुको भागने देते है और अन्तमें माताके यत्नके साथ उन्हें अपने सूँडसे पकड़ फिर अपने समीप बैठा लेते हैं। माता अपने शिशुको हाथीके पास छोड़ अपने गृह-कर्म्ममें लगती हैं।

इस अवसरमें बर्छीबरदार सवार हाथीके समीप पहुँच गये और उन सबने अपनी बर्छीकी नोकसे हाथीको देह छू दी। मलिथरके क्रोध एकबार फिर सर्जे हुए। उसने कुपित हो

सवारकी ओर देखा। मानो वह उस स्त्रीकी आज्ञा मानना चाहता था; सवारोंकी नहीं। सवारने एकबार फिर बरछी चुभा दी, इस बार पहलेकी अपेक्षा अधिक चुभा दी। अब मालियर अपना क्रोध संवरण कर न सका, भयङ्कर गर्जनकर और अपना सूंड उठा उसने अपने बायें खड़े सवारोंपर धावा किया। सवार भागे, एक दीवार फांद उन सबने अपनी प्राण-रक्षा की। उनका भागना देख मालियर और भी कुपित हो बाकी सवारोंकी ओर पलटा। इन सवारोंने भी भाग अपनी प्राण रक्षा की।

नवाबने पुकारकर कहा,—"मालियर छेड़ा न जाये, उसे महावतकी स्त्री ठण्डा करे।"

ऐसा ही किया गया। महावतकी स्त्रीके आवाज देते ही इतना बड़ा हाथी क्रोध दबा, कान दबा उसके समीप आया।

नवाबने आज्ञा दी,—"महावतकी स्त्री हाथीपर सवार हो उसे अखाड़ेसे ले जाये।"

स्त्रीकी आज्ञासे मालियर अगले दोनों पैर मोड़ झुक गया। स्त्री अपने शिशु-सन्तानके साथ मालियरकी गरदनपर सवार हुई और उसे अखाड़ेसे बाहर ले गई। उस दिनसे वह स्त्री ही मालियरकी महावत बनी। मालियर दूसरे महावतको अपने पास आने नहीं देता था। मस्तीमें भी मालियर उस स्त्रीकी आज्ञा प्रतिपालन करता था। मालियरका अधिकसे भी अधिक क्रोध स्त्रीके हाथके स्पर्शसे मिट जाता था। इसमें सन्देह नहीं, कि स्त्रीके उपरान्त उसका पुत्र ही मालियरका महावत

और एक लड़ाईमें एक महावत बाल बाल बच गया था। लड़ाई हुई, ज़बरदस्त हाथीने निर्बल हाथीको भगा दिया। निर्बल हाथीका महावत अपने हाथीकी गरदनसे गिर गया। मैदानको चारो ओर लोहेका जंगला था। निर्बल हाथी तो एक फाटकसे भाग गया; उसका महावत जमीनपर पड़ा रह गया। विजयी हाथी महावतकी ओर मुड़ा। वह बेचारा भागकर लोहेके जंगलेसे सटकर खड़ा हुआ और मृत्यु-भयसे थरथर कांपने लगा। हाथीने बढ़कर उसपर अपने दोनो दांत लगा दिये। हमलोगोंने खयाल किया, कि उसका काम तमाम हो गया, किन्तु वह हाथीके दोनो दांतोंके बीच सिमटकर रह गया। हाथीने जंगलेको जमीनसे मिला दिया, उसने भी महावतको मृत खयाल किया। अन्तमें जब हाथी वहांसे हट गया, तब पुनर्जीवन-प्राप्त महावत भागकर निकल गया। उसकी प्राण-रक्षासे सभीको आश्चर्य हुआ।

इसी जगह यह भी कह देना चाहिये, कि इतना बड़ा हाथी लाख क्रुद्ध और लाख मस्त होनेपर भी आतिशबाजीसे बहुत डरता है। उधर आतिशबाजी छुटी और इधर हाथीको कुल मस्ती भूल गयी।

एकादश परिच्छेद।

मुहर्रम।

बहुतेरे लोगोंको मालूम है, कि मुसलमानोंमें दो सम्प्रदाय हैं; एक शीया और दूसरा सुन्नी। रूम सुन्नी है; ईरान शीया। अरबी महीना मुहर्रम उपस्थित होनेपर शीया मुसलमान मुसलमान धर्मके प्रतिष्ठातक मुहम्मदके सम्बन्धी हसन और हुसेनकी मृत्यु पर बड़ा मातम किया करते हैं।

सुन्नी खयाल करते हैं, कि हसन और हुसेन अपराधी थे; उस समयके खलीफाका सिंहासन छीनना चाहते थे, इसलिये उनका वध कर खलीफाने न्यायसङ्गत कार्य्य ही किया। उधर शीया खयाल करते हैं, कि खलीफाने अन्याय किया; मुहम्मदके इन दोनों सम्बन्धियोंको बड़ी ही दुर्दशासे मरवा घोर पापका आचरण किया। आज वह खलीफा भी नहीं हैं; हसन-हुसेन भी नहीं हैं; तथापि मुहर्रम उपस्थित होनेपर उन दोनोंके पक्षपाती आपसमें लड़झगड़ भयङ्कर दङ्गा-फसाद किया करते हैं।

अवधमें शीयोंका प्राबल्य है; फलतः मुहर्रम उपस्थित होते ही लखनऊके मुसलमानोंका आमोद-प्रमोद मानो किसी मन्त्र-बलसे भाग जाता है। बाजारोंमें सन्नाटा छा जाता है; लोग अपने घरोंमें बैठ अपने परिवारके साथ हुसेनके मातममें लग जाते हैं। मुहर्रमकी २री तारीखको बाजारोंमें मातमी जुलूसके साथ ताजिये निकाले जाते हैं। ईरानके मशहद या करबलेमें

हसन और हुसैनकी कब्रें हैं; ताजिये इन्हीं कब्रोंके कल्पित रूप हैं। वर्षभर इमामबाड़ों या धनाढ्योंके घरोंमें रखे रहते हैं, मुहर्रमपर बाहर निकाले जाते हैं। शाही ताजिया वर्त्तमान नवाबके पिताने इङ्गलण्डसे बनवा मंगाया था। हरे शीशेका बना था, जिसपर सोनेकी मीनाकारी थी, बड़ा ही पवित्र समझा जाता था।

मुहर्रमके दिनों इमामबाड़ोंमें बड़ी धूम रहती है। लख नऊके शाही इमामबाड़े शाहोंके दफन करनेके काममें लाये जाते थे सही, किन्तु अन्यान्य इमामबाड़े ताजियों और ताजियादारी हीके कामके लिये बनाये जाते हैं। मुहर्रमके दिनों शामियानेतले अच्छे फर्शपर ताजिये रखे जाते हैं। वाएज या वक्ताके लिये लकड़ीके मेम्बर तय्यार किये जाते हैं। साथ साथ हजारों दीवारगीर और झाड़-फानूस लगा दिये जाते हैं। रातिको रोशनीमें इमामबाड़े जगमगा उठते हैं। ताजियेके सामने मृत हसन-हुसैनके स्मृति चिह्नस्वरूप पगड़ी, तलवार, खञ्जर, आदि हथियार रखे जाते हैं। इन स्मृति-चिह्नोंके सामने सहस्र सहस्र मनुष्य मातम करने बैठते हैं। नवाब भी मातम करने बैठते हैं। उस समय उनकी देहपर मातमी पोशाक और उनके माथेपर कलगीदार राज-मुकुट रहता है। इमामबाड़ेमें धनी-दरिद्र वृद्ध युवक सभी श्रेणी और सभी अवस्थाके मनुष्योंके एकत्र होनेपर भी किसी तरहका शोर नहीं होता, वहां शोर करना पाप समझा जाता है। उस छाई हुई शान्तिमें वाएजकी गुरु-गम्भीर ध्वनि दूर दूरतक सुनाई देती है।

क्रम क्रमसे वाएजकी आवाज उच्चसे उच्चतर होती है,

उसकी आंखोंकी ज्योति बढ़ती जाती है ; उसका चेहरा लाल होता जाता है। क्रम क्रमसे श्रोता भी क्षुब्ध होने लगते हैं। उनमें बेचैनी दिखाई देती है। निस्तब्धता भङ्ग होती है, 'वाह वाह'की आवाजें आने लगती हैं। कितने ही श्रोताओंकी आंखोंसे आंसू बहने लगते हैं, कितने हो श्रोता उच्चस्वरसे रो उठते हैं। अन्तमें दुःख असह्य हो जाता है; श्रोता उच्च-स्वरसे 'हसन हुसेन' कहते छातियां पीटने लगते हैं। पहले यह नाम धीरे धीरे लिये जाते हैं; इसके उपरान्त उच्च स्वरसे। फिर तो लोगोंके मुंहसे चीखें निकलने लगती हैं। कोई दस मिनटतक ऐसा ही मातम चलता है। इसके उपरान्त एकाएक श्रोता निस्तब्ध हो जाते हैं; इमामबाड़े में एकबार फिर सन्नाटा छा जाता है। लोग थक जाते हैं, उन्हें शरबत या हुक्का दिया जाता है। इसके उपरान्त मरसिया पढ़ा जाता है। मरसिया,— उर्दूमें हुसेनकी शहादतका पद्यमें वर्णन है। सब लोग उसे सम-झते और पसन्द करते हैं। अन्तमें हुसेनके घातक खलीफाको शाप दे यह मातमकी मजलिस भङ्ग होती है।

मुहर्रममें महीनेभर नगरके हरेक इमामबाड़ेमें ऐसी ही मजलिसें हुआ करती हैं। नवाब शीया थे और उन्हें हुसेनके मातमका बड़ा ख़याल था। उन्होंने सिंहासनारूढ़ होनेसे पहले शपथ ग्रहण की थी, कि यदि सिंहासनपर बैठना नसीब हुआ, तो दसके बदले चालीस दिनों मातम करूंगा और अपनी यह शपथ उन्होंने अक्षर अक्षर पूर्ण की। इन दिनों हरम, शराब, भोग, आमोद-प्रमोद सभी बन्द हो जाते थे। घरमें इमामबाड़े थे और जिवतरह मर्द नाहर मातम करते थे

तरह बेगमें और अन्यान्य स्त्रियां महलकी चहारदीवारीके भीतर। उन दिनों हरमकी भी रौनक फीकी पड़ जाती थी, वहां भी बनाव-श्टङ्गार मौकूफ कर दिये जाते थे। गद्दे, गद्दी, मसनद, मसहरी, चारपाई सब किनारे कर दिये जाते थे। भोजन भी उतना सु-स्वादु बनाया जाता नहीं था। प्राणोंसे भी अधिक प्रिय जेवर उतार रखे जाते थे।

लखनऊमें किसी धातुका एक टुकड़ा था। लोग उसे मशहदसे लाया हुआ स्वयं हुसेनके अलमका टुकड़ा समझ बड़ी ही भक्तिके साथ पूजते थे। दरगाहमें यह टुकड़ा रखा रहता था और मुहर्रमकी ५वीं तारीखको वहीं नगरभरके अलमों और पञ्जोंका जमाव होता था। नगरसे कोई पांच मील दूर दरगाह एक सुविशाल शाही इमारत है। इसके सुविशाल आंगनके बीच बहुत बड़ा एक अलम था; उसीके सिरेपर वह पूज्य धातु-खण्ड लगा था। ५वींको इस अलमके इर्द-गिर्द अन्यान्य अलम खड़े किये जाते थे। ५वींको प्रातःकाल हीसे दरगाह जानेवालोंकी धूम मचती थी। नवाबों अपने अपने अलम ले दरगाह जाते दिखाई देते थे। बड़े इमामबाड़ेसे शाही जुलूस निकलता था। आगे आगे सोने और चांदीकी नदीमें गोता मारे हुए हाथी होते थे। इनपर अलम लिये अलमबरदार बैठे रहते थे। पीछे सिपा-हियोंकी एक पलटन रहती थी। इसके पीछे मातमियोंका एक दल रहता था, जिनके बीच एक काला निशान रहता था, निशा-नके माथेपर झण्डेकी जगह एक लकड़ीके दोनों सिरोंपर दो तलवारें लटकती रहती थीं। इसके पीछे मौलवियों, आलिमों और अपने परिवारके लोगोंमें घिरे स्वयं नवाब रहते थे। इनके

पीछे दुलदुल रहता था, जिस घोड़े पर सवार हो हुसेनने युद्ध-यात्रा की थी, उसका ऐसा ही नाम था। दुलदुल श्वेत रङ्गका असल अरबी था, उसकी देहमें जगह जगह लाल दाग बना दिये गये थे; जिससे जान पड़ता था, कि युद्धस्थलके तीरोंकी बौछा-रसे अभी अभी चला आता था। उसके जीनपर एक अरबी पगड़ी और तीरोंसे भरा तरकश तथा कमान रखा रहता था। घोड़ेके जिस गाशियापर यह चीजें रखी रहती थीं, वह बड़ा ही बहुमूल्य होता था; उसके कुल तार सच्चे होते थे और उसकी सच्ची मोतियोंकी झालरके बीच गुल-बूटोंमें सच्चे जवाहरात टंके रहते थे। दुलदुलके साईसोंकी पोशाकें भी बड़ी ही बहु-मूल्य होती थीं; यह सब हाथोंमें चंवर लिये रहते और घो-ड़े की मक्खियां हांका करते थे। दुलदुलके पीछे घोड़े पर तथा पैदल नवाबके कर्मचारियों और नौकरोंकी बहुत बड़ी फौज रहती थी। इसतरह दिनभर दरगाहमें मेला लगा रहता था। यह कहनेमें अत्युक्ति न होगी, कि इस दिन कोई पचास हजार आलम दरगाह जाते थे।

दुःख और सुख जीवनके चिरसङ्गी हैं। अतीव दुःखपूर्ण इस मुहर्रममें भी एक सुखका सामान मौजूद था। छठीको हुसेनकी कन्याके साथ क़ासिमके विवाहके उपलक्ष्यमें मेंहदीका जुलूस निकलता था। परितापकी बात देखिये, कि जिस दिन क़ासिमका विवाह हुआ, उसी दिन वह रणस्थलमें मारे गये। इस दिन रातको नगरके कितने ही स्थानोंसे कितने ही जुलूस निकल पड़े धमाधमाड़े जाते थे। इस दिन इमामबाड़ा जगमगाकर 'ज्योतिर्मय' बन जाता था। उसका विशाल रूपसे सज्जित ...

रङ्ग बरङ्ग झाड़ लटका दिये जाते थे; कितने ही सौसे अधिक बत्तियोंके होते थे। सिवा इसके लाल, पीले, नीले, हरे बैंगनी फानूसोंसे इमामबाड़ेका कोना कोना जगमगा उठता था। ताजियेकी एक ओर बहुत बड़ा एक सिंह और दूसरी ओर शाही निशान तले-ऊपर दो मछलियां रखी रहती थीं। ताजियेके इर्द गिर्द चांदीकी चौकियोंपर चांदीका मक्केका फाटक, चांदीका हुसेनका खीमा, चांदीकी हुसेनकी कब्र आदि रखे रहते थे। सिवा इसके दीवारें ध्वजा-पताकाओं और विविध अस्त्र शस्त्रसे सजा दी जाती थीं। उस रातका इमामबाड़ा देख आश्चर्य-चकित होना पड़ता था।

ऐसे ही विचित्र इमामबाड़ेमें मेंहदीका जुलूस पहुंचता था। जुलूसके साथ चलती हुई बन्दूकोंकी बाढ़ोंसे दूर हीसे मेंहदीका आना मालूम हो जाता था। उस समय नवाबकी आज्ञा होती थी, कि इमामबाड़ा खाली किया जाये। किन्तु इमामबाड़ा खाली कैसे कराया जाये? बड़ी बड़ी दाढ़ियोंवाले शानदार हथियारबन्द अगणित तमाशाइयोंसे भरा इमामबाड़ा खाली कैसे कराया जाये? मैं नहीं जानता, कि लण्डनकी पुलिस ऐसे समय किस तरह लोगोंको हटाती, किन्तु नवाबकी आज्ञा पा नवाबके कर्मचारी पहले भीड़में घुस उच्चस्वरसे तीन बार लोगोंको इमामबाड़ेसे चले जानेकी आज्ञा देते थे। कितने ही लोग चले जाते थे; कितने ही इमामबाड़ेका रूप-रस आंखों द्वारा जी-भरकर न चखनेकी वजह खड़े रहते थे। ऐसे ही लोगों द्वारा इमामबाड़ा खाली करानेकी जरूरत होती थी। सङ्कोच होता नहीं था, सिपाहियोंके डण्डे, चाबुक, धक्के—घूंसेतक चलने ल-

जाते थे। किसीपर ग्रूरसे चाबुक पड़ता था, किसीको पीठपर गदेसे उण्डा पड़ता था; किसीको पीठपर जोरका घूंसा आ लगता था। यह सब पुष्प-शलाकाकी तरह लगते नहीं थे, इस जोरसे लगते थे, कि मार खानेवाले कुछ देरके लिये अस्थिर हो जाते थे। एक ओरसे हाथ चलता था, तो दूसरी ओरसे जुबान चलती थी। तरह तरहकी गालियां सुनाई देती थीं। गालियां देते और धक्के खाते तमाशाई इमामबाड़ेसे बाहर निकलते थे। इमामबाड़ेमें एकबार फिर शान्ति स्थापित होती थी। क्रमसे जुलूस आकर द्वारपर लगता था। जुलूसके हाथी आदि बाहर रह जाते थे, मिठाई, फल, वस्त्र, फूल, मेंहदी आदिसे भरी सोने-रूपेकी तश्तरियां शिरपर रखे नौकरोंका दल इमामबाड़ेमें दाखिल होता था। इनके पीछे अगणित मनुष्योंसे घिरी कल्पित दूलहकी चांदीकी पालकी इमामबाड़ेमें आती थी। इमामबाड़ेका सुविशाल आंगन जुलूसके लोगोंसे भर उठता था। तश्तरियां ताजियेके समीप रख दी जाती थीं। बस; इतनी ही खुशी मनाई जाती थी; इसके बाद तो फिर मातम आरम्भ किया जाता था। उधर जिस दिन विवाह हुआ था, उसी दिन दूल्हेकी मृत्यु हुई थी, इधर उसे ही मेंहदी ताजियेके समीप रख दी जाती थी, वैसे ही मातम आरम्भ किया जाता था। साथ साथ और एक ताजिया इमामबाड़ेमें रख दिया जाता था और मृत कासिमके घोड़ेके नामसे एक घोड़ा इमामबाड़ेमें इधर उधर घुमाया जाता था।

भीतर यह होता था, बाहर खैरात बटती थी। रुपये, नवाबजादियोंसे नौकरोंसे मुंह पोंछ दिये जाते थे और ...[illegible]

भर मुट्ठियां भर भर, लोगोंपर रुपये-अशरफियोंकी वृष्टि करते थे। मुहर्रममें नवाब प्रचुर धन व्यय करते थे। मैंने सुना था, कि लखनऊके एक नवाबने मुहर्रमपर कोई पैंतालीस लाख रुपये नकद व्यय किया था। दानकी बात चली है, तो यह भी सुन लीजिये, कि मुहर्रम-सम्बन्धीय प्रायः सभी चीजें प्रति वर्ष नई बनती थीं; पर वो चीजें दरिद्रों-कङ्गालोंमें बांट दी जाती थीं जिन्हें पा उनका दारिद्र्य-दुःख दूर हो जाता था। युरोपियनोंको यह दान देख आश्चर्य्यान्वित होना पड़ता था।

किन्तु अभी इस वर्णनको समाप्त न समझिये। इमामबाड़ोंकी वह मजलिसे, अलमोंका वह जुलूस, मेंहदीकी वह धूम एक अन्तिम महोत्सवकी आरम्भिक तय्यारियां मात्र थीं। अबतक सिर्फ इमामोंकी हत्या हुई है, अब उनके दफनकी तय्यारियां हैं। हसन और हुसेनको मट्टी देनेकी जगह करबला और इस करबला भूमिके भिन्न भिन्न टुकड़े भिन्न भिन्न लोगोंके हिस्सेमें पुश्तहापुश्तसे थे। करबला, नगरसे कुछ फासिलेपर था। मट्टी देनेके दिन प्रातःकाल होसे नगरवासियोंकी भीड़ करबलेकी ओर चलती थी। हुसेनका जनाजा फौजी ढङ्गसे उठा था; इसलिये इस दिनके जुलूसको बहुत कुछ फौजी जुलूस बनानेकी चेष्टा की जाती थी। झण्डे उड़ाये जाते थे; बेण्ड बजाये जाते थे। कड़ाबीनें, बन्दूकें, तमचे सर किये जाते थे; तलवार आदिके करतब दिखाये जाते थे। इसी समय प्रायः ही सुन्नियोंके दल शीयोंके दलपर आक्रमण किया करते थे। इस दिन सभी दल अपने पूरे साज-सामानके साथ एक दूसरेके पीछे करबलेकी ओर जाते थे। जुलूसोंके बीचमें दुलदुल होता था। दुलदुलके पीछे मातम करने-

वालोंकी भीड़ रहती थी। धनी-दरिद्र सभी सिर खोले नङ्गे पैर आगे बढ़ने दिखाई देते थे। इसके पीछे ताजियोंकी कतार रहती थी। कितने ही ताजिये तने हुए बहुमूल्य शामियानेके नीचे नीचे चलते थे। सबके पीछे कितने ही लोग हाथियोंपर बैठे दरिद्रोंको रुपये, पैसे, आदि बांटते चलते थे। करबलाकी ओर बढ़ते हुए उस विशाल जन-सागरसे बारंबार गगन-भेदी रव उठता था,—'हाय हसन—हाय हुसेन।' करबलेमें पहले हीसे जमीन खोद रखी जाती थी, जिसमें ताजियेके साथकी तशतरियोंके फल, मिठाई आदि गाड़ दिये जाते थे।

पाठकोंको रमजान और मुहर्रमको एक समझना न चाहिये। रमजान सब मुसलमान मनाते हैं; मुहर्रम सिर्फ शीया मुसलमानों हीका पर्व है। इन दिनों नवाबकी भेंट दुर्लभ हो जाती थी। कभी कभी प्रातःकाल उनका दरबार हो जाया करता था। बहुत प्रयोजन उपस्थित होनेपर जिस समय हज्जाम उन्हें वस्त्रादि पहनाया करता था, उस समय हमलोग उनसे भेंट किया करते थे।

इन्हीं मुहर्रमके दिनो एक दिन नवाब अङ्गरेजी पोशाकमें इमामबाड़े पहुंचे। नवाबकी पोशाक देख इमामबाड़ेमें एकत्र सहस्र सहस्र मुसलमान अत्यन्त दुःखित हुए। इसका अपराध हमारे सिर मढ़ा गया। लोगोंमें प्रसिद्ध हुआ, कि हमींने नवाबको बहका उस दिन वह अङ्गरेजी पोशाक पहननेपर तय्यार किया था।

द्वादश परिच्छेद।

लखनऊको आखिरी सलाम।

मेरे और मेरे अन्यान्य साथियोंके लखनऊसे विदा होनेमें अधिक दिन नहीं लगे। इब्राहमका रुतबा दिन दिन बढ़ता ही जाता था। लोगोंमें यह बात प्रसिद्ध हो गई थी, कि लखनऊका शासक इब्राहम ही है, रेसिडण्टके भी मनमें यह बात बैठने लगी थी। लखनऊमें रहनेवाले सभीको यह बात मालूम हो गई थी, कि बिना इब्राहमकी कृपा लाभ किये कोई आदमी दरबारमें घुस नहीं सकता था। इब्राहमकी प्रतिपत्ति-वृद्धिके कितने ही कारण थे। नवाब अपनी असीम क्षमता और प्रचुर धनके बलसे अपनी जो छोटी छोटी घृणित कामनायें पूर्ण किया चाहते थे, उनकी पूर्त्तिमें नवाबका इब्राहम ही साहाय्य हुआ करता था। उसने अपनेको नवाबके लिये बड़ा ही जरूरी बना लिया था और असलमें नवाबका परिचालक नौकर भी उसके द्वारा परिचालित होनेका बहाना किया करता था। शाही महलमें शराबकी जितनी बोतलें समाप्त होती थीं, उनमें हरेकसे कुछ न कुछ धन इब्राहमकी जेबमें जाता था, इसलिये इब्राहम नवाबकी शराबखोरीसे अप्रसन्न होनेके बदले अत्यन्त प्रसन्न होता था। नवाबकी निगाहोंमें इज्जत पानेवाली हरेक लौंडी, हरेक वेश्या अपनी कमाईका कोई न कोई अंश इब्राहमकी खुली हुई हथेलीमें रखनेपर बाध्य होती थी। और तो क्या; अवधके जागीरदार

और प्रधान मन्त्री भी हज्जामको नज़रें भेजा करते थे। यह कहनेका प्रयोजन नहीं, कि हज्जामने घृणित चालोंका आश्रय ले अपनेको बड़ा बनाया।

हमलोग इन घृणित कुकर्मोंसे दुःखित थे और हृदयसे चाहते थे, कि इनसे नवाबका पीछा छूटे। इन्हें दूर करनेके लिये हमने कई बार मन्सूबे बांधे, किन्तु वह मन्सूबे कार्यमें परिणत किये जा न सके। एक दिन हममें एकने नवाबसे उनकी बदमस्तीकी शिकायत की, इसपर पहले तो वह चिढ़े, फिर शान्त हो उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि भविष्यत्‌में ऐसा कभी न होगा; किन्तु अपनी यह प्रतिज्ञा वह शीघ्र ही भूल गये।

मैं पहले ही लिख चुका हूं, कि नवाब और उनके साथियोंके बीच घोर घनिष्ठता थी। कभी कभी नवाब उन्हें भोजनार्थ बुलाते और शराब पिला बदमस्तकर खूब बेइज्जत किया करते थे। जो घटना मैं लिखने चला हूं, वह विचित्र जान पड़ेगी; किन्तु उसका अक्षर अक्षर सत्य है। ऐसे दृश्य मैं भूल नहीं सकता। एक दिन नवाबने अपने एक वृद्ध चाचाको दावत दी। भोजनके समय उन्हें खूब शराब पिलाई गई। हज्जाम नवाबका मतलब समझ गया और बोला,—"हुजूर। मैं सआदतके साथ नाचना चाहता हूं।"

सआदत, उन्हीं चाचाका नाम था। हज्जामके इस प्रस्तावसे नवाब नितान्त सन्तुष्ट हुए। आपने शोरकर कहा,—"बहुत दुरुस्त; बहुत मुनासिब, मेरे प्यारे अब्दुलाहके साथ नाचो।"

समूची कोठरीमें हलचल मच गई। एक ओर रण्डियां नाच रही थीं; दूसरी ओर नवाब नाचने लगे इधर सआद-

तके आगा-पीछा करनेपर भी उन्हें ले हज्जाम नाचने लगा। अपने चाचाका नाच देख नवाब मारे हंसीके लोट लोट गये, उनकी आंखोंसे पानी निकलने लगा। एक चक्करमें वृद्ध चाचाकी पगड़ी दूर जा पड़ी। हिन्दुस्थानियोंके लिये पगड़ीका गिरना और घोर अप्रतिष्ठा होना दोनों बराबर हैं। शराबके नशेमें चूर रहनेपर भी हांपते हुए वृद्ध चाचाने अपनी कमरमें लगे खञ्जर-पर हाथ बढ़ाया। हज्जामने वह देख तुरन्त खञ्जर छीन लिया। खञ्जरके बाद उनका दुशाला, उनकी कबा भी उतार ली गई। इसके बाद दूसरा कपड़ा उतारा जाने लगा। हममें कई आदमियोंने नवाबको इस काससे मना किया, इसपर नवाब हमपर बिगड़ उठे। उन्होंने कहा,—"खबरदार! इस तमाशेमें दखल न दीजिये; नहीं तो आपलोग गिरफतार कर लिये जायेंगे।"

देखते देखते सआदत बिलकुल ही नङ्गे कर दिये गये और कोठरीके सभी लोग उनकी वह दशा देख हंसने लगे। नवाबकी आज्ञासे बेचारेपर ठण्ढा पानी छोड़ा जाने लगा; चापतें पड़ने लगीं। अभागा नशेमें रहनेपर भी अपनी इतनी दुरवस्था देख दोनों हाथों मुंह ढांक फूट फूटकर रोने लगा। आपलोग पूछ सकते हैं, कि हमलोगोंकी भलमनसियत कहां गई थी? हमलोग बैठे तमाशा क्यों देख रहे थे? उत्तर है, कि हमलोगोंने सआदतको बचानेकी चेष्टा कई बार की, किन्तु प्रत्येक बार हम डांटे और झिड़के गये। हमें भय था, कि अधिक कुछ कहते ही हमें मार डालने या कैद करनेके लिये किसी हथि-यारबन्द सिपाहीको इशारा किया जायेगा। अन्तमें हमलोग वहां ठहर न सके, रुखाईके साथ नवाबको सलामकर वहांसे

छूट गये। नवाबने भी हमें उस मिलनसारोहसे विदा नहीं किया; कारण, वह हमारी बरंबारकी बाधाओंसे हमसे असन्तुष्ट हो गये थे।

दूसरे दिन हमें समाचार मिला, कि हमारे चले आनेके उप-रान्त नवाबने अपने चाचाको उसी अवस्थामें नाचनेके लिये कहा। बेचारेको हुक्मके साथ नाचना पड़ा, उपस्थित स्त्री-पुरुषोंने उनकी और भी गति बनाई। यह तमाशा बहुत देर-तक चलता रहा। अन्तमें नवाबके नशेका वेग अधिक होनेसे इस तमाशेकी समाप्ति हुई।

देशी राज्योंमें राजा या नवाब ही सब कुछ हैं, उनके सामने उनके सम्बन्धी कोई चीज नहीं। कभी कभी दरबारमें महीपालके भाई या सम्बन्धीकी अपेक्षा कोई वेश्या या गवैया अधिक सम्मा-नित होता है। मेरी समझमें क्षमता पानेके बाद मनुष्यको इतना मदान्ध होना उचित नहीं, क्योंकि उस समय वह जो अत्याचार करता है, उसका फल उसे पीछे मिलता है। नवाब जब क्रुद्ध होते थे, तब किसी न किसीकी शामत जरूर आती थी; विशेषतः अङ्गरेज जब नवाबको कुपित करते थे, तब उनसे बदला लेनेमें असमर्थ हो नवाब देशियोंके प्रति अत्याचार करते थे। बख्तावर सिंह जब तिरस्कृत हुए थे,तब उनके मनमें एक बड़ा भय उत्पन्न हुआ था। कैदसे लौटनेके उपरान्त उन्होंने हमसे कहा था,—"आपलोग यदि मेरे सम्बन्धमें दखल देते, तो मेरे प्राण न बचते।"

बख्तावरकी जो दुर्दशा हुई थी, वही दुर्दशा और भी कितने ही लोगोंकी हो चुकी थी। एकबार एक वेश्याको ऐसी

दुर्दशा की गई थी। उसके भी कुल कपड़े उतार लिये गये थे और वह नाचनेपर बाध्य की गई थी। वेश्या हयादार थी। शराबके नशेमें होनेपर भी उसने इस प्रस्तावपर घोर आपत्ति की थी, किन्तु उसके समाजी भी नवाबके तरफदार हो गये थे। हमलोगोंने कितने ही बार नवाबको समझाया था, कि यह बातें ठीक नहीं; इनसे आप स्वयं बदनाम होते हैं; साथ साथ हमें भी बदनाम करते हैं; किन्तु नवाबने हमारे उपदेशका कोई खयाल नहीं किया।

एक दिन नवाबके दूसरे चाचा आसफको दावत दी गई। आसफ सआदतको अपेक्षा अधिक वृद्ध और निर्बल थे। हमलोग भोजनके कमरेमें एकत्र हुए। नवाब और हज्जाम भी वहां आया। आसफ हमारे साथ था और उसने मुझे एकान्तमें ले जा मृदुस्वरसे कहा,—"नवाब मेरे साथ कैसा बरताव करना चाहते हैं?"

मैं। शायद अपने साथ आपको भोजन कराना चाहते हैं।

आसफ। अफसोस। क्या मैं वृद्ध नहीं हूं? क्या मेरे बाल पक नहीं गये हैं? क्या मेरी दृष्टि-मर्य्यादा क्षीण हो नहीं गई है? क्या अपने जवान भतीजेके आमोद-प्रमोदमें शरीक होनेका मैं अधिकारी हूं? यह बहुत ही बुरी बात है। नवाबकी इस दावतसे मुझे डर मालूम होता है।

आसफके दुःखसे दुःखित हो मैंने उत्तर दिया,—"डरिये नहीं; नवाबने कल आपके पुत्रको दावत की थी और उन्हें भोजनकरा ससम्मान विदा किया था।"

आसफ। मेरे पुत्रकी बात और है। जिस समय नवाब

सिंहासनपर बैठे, उस समय वह अवधमें मौजूद नहीं था; इसीलिये उसे नवाब अपना शत्रु नहीं समझते। नवाब इसमें नाहक छेड़ते हैं; क्या इतने बड़े लखनऊमें नवाबकी दिल्लगीके लिये और कोई नहीं?

ऐसे समय नवाब हमलोगोंकी ओर आये; हज्जामके कंधेपर झुके हुए थे। बड़ी ही शानके साथ उन्होंने हमारे सलामोंका जवाब दिया। अपनी तेज निगाहें मुझपर और आसफपर डालीं, वह हम दोनोंकी ओर समीप आये।

नवाब। कहिये जनाब मिजाज कैसा है?

आसफ। हुजूरकी जानोमालको दुआ करता हूं।

नवाब। आइये—आइये—खाना खाने तशरीफ ले चलिये।

यह कह नवाब आसफके हाथमें अपना हाथ दे उन्हें भोजनकी टेबुलके समीप ले आये। हमलोग अपनी निर्द्दिष्ट जगह नवाबके दाहने-बायें बैठे। आसफ नवाबके ठीक सामने टेबुलके दूसरे किनारे बैठे। शराबकी एक बोतल खोली और आसफके बगलमें रखी गई। इसके बाद तरह तरहके भोजनोंसे भरी हुई रकाबियां सबके सामने आईं। शराब चलने लगी। कई दौर चले। पांचवें दौरमें आसफ अपना गिलास खाली कर न सके। यह देख नवाबने तबाईसे पूछा,—"क्यों जनाब! क्या यह शराब पसन्द नहीं?"

आसफने उठकर चटपट गिलास खाली कर दिया। भोजन समाप्त हुआ; रकाबियां हटाई गईं। भोजनके अन्तमें जिस-तरह अन्यान्य दिन उसी तरह आज भी वेश्यायें आ नाचने-गाने लगीं; किन्तु आज नवाबका मन किसी ओर न लगा; उनकी

निगाहें आसफपर थीं। आसफके समीप जो बोतल रखी गई थी, वह प्राय: खाली हो चुकी थी। यह देख नवाबने हज्जामसे कहा,—"क्या तुम्हें यह दिखाई नहीं देता, कि आसफकी बोतल खाली हो चुकी है?"

इसी समय नवाब और हज्जामके बीच आंखों ही आंखों कुछ इशारे हुए। हज्जामने और एक बोतल आसफके सामने ला रखी। आसफ लाख लाख उज्र करते रहे, कि अब मुझे और शराबकी जरूरत नहीं; किन्तु उनकी बात सुनता कौन था? हज्जाम द्वारा शराब आनेकी वजह मुझे सन्देह हुआ। पीछे मुझे सूचना मिली, कि मेरा सन्देह सत्य था। एक बोतल हलकी शराबमें बहुत कुछ तेज ब्राण्डी मिला दी गई थी। नवा-बकी आज्ञासे आसफको शराबके और कई गिलास पीना पड़े। नशेने जोर किया, आसफकी शक्तिने जवाब दिया। उनका शिर कभी दाहने; कभी बायें झुकने लगा; उनकी पलकें झपकने लगीं; वह प्राय: ज्ञानशून्य हुए।

नवाबके हर्षका ठिकाना न रहा। उन्होंने इशारोंमें कहा— "हजरतकी बादमस्तियां देखिये।"

हज्जामने अपनी जगहसे कुछ उठकर कहा—"हुजूर! इनकी मूंछें निहायत बेढङ्गी हैं, इन्हें दुरुस्त कर देना वाजिब जान पड़ता है।"

नवाब। (हंसकर) एक ही हुई, बेशक इनकी मूछोंकी दुरुस्ती वाजिब है।

हज्जामने आसफके पास पहुंच उनकी दोनो मूंछें पकड़ दोनो ओर खींच लीं। एक वृद्धकी इतनी अप्रतिष्ठा नितान्त

...ल्लत थी। हमलोगोंने शिकायत की। शिकायत सुन नवाब ...यनी क्रुद्ध हो हमलोगोंकी ओर मुड़े। उन्होंने बड़ी ही ...ताईके साथ हमसे कहा,—"खबरदार! आपलोग हमारी ...तोंमें दखल न दें; वह मेरा चाचा है; उसे मेरे और खाके ...बीच छोड़ दें।"

दखल देना व्यर्थ था। इससे लाभ तो था ही नहीं, उलटा नुकसान था; आसफकी मुसीबत दूनी हो जा सकती थी। आसफकी गरदन अबतक अस्थिर थी। मूंछोंके ज्यादा खिंचनेसे मारे पीड़ाके एकबार उसने अपनी आंखें पूर्ण रूपसे खोल दीं; इसके बाद फिर नशेमें गर्क हुआ। शराबके नशेने उसे बिलकुल ही दबोच लिया था। कुछ देरके लिये नवाब शराब और वेश्या-ओंकी ओर मुड़े। दूसरी ओर मुड़नेपर भी उनकी भवें तनी हुई थीं; उनके माथेपर बल थे। उन्हें हमारी शिकायत भूली नहीं थी। वृद्धकी हिलती हुई गरदनने एकाएक उनका ध्यान फिर अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने झल्लाकर कहा,—"इसकी गरदनमें मानो हड्डी ही नहीं, इसे ठीक करना चाहिये।"

हज्जाम उछलकर खड़ा हुआ। एक बारीक रस्सी ले उसके उसने दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा आसफकी एक मूंछके सिरेपर बांधा, दूसरा टुकड़ा दूसरी मूंछके सिरेपर। हज्जा-मकी यह कारवाई हमारी समझमें न आई, किन्तु नवाब बातकी तहको पहुंच बहुत ही उल्लसित हुए, यह उपज उन्हें बहुत भाई। हज्जाम हज्जाम ही था; दाढ़ी-मूंछसे उसका बर्षोंसे सम्बन्ध था। आसफकी लम्बी मूंछोंसे

उतनी दृढ़ताके साथ वह पतली रस्सियां बांधना उसीका काम था। इङ्ग आसफने अपनी मूंछें बंधनेके समय एकाध बार आंखें खोलीं और कितने ही अस्फुट शब्द कहे। सिवा इसके वह और कुछ कर न सका; उतनी शराब उसके लिये बहुत ही तेज थी।

अब हज्जामकी उपज समझमें आई। आसफके कष्टकी कोई परवा न कर उसने उन रस्सियोंके बाकी दोनों सिरे, जिस कुरसीपर आसफ बैठा था, उसकी दोनों बाजुओंसे कसकर बांध दिये। यह कौतुक देख नवाब मारे आल्हादके तालियां बजा हंस पड़े। दोनों ओरकी मूंछें बंध जानेकी वजह आसफकी गरदन दाहने बायें न झुक सामने झुक गई। नवाबने अपने मित्रवरके कानमें चुपकेसे कुछ कह दिया। हज्जाम कमरेसे चला गया। मेरा माथा ठनका; उत्पीडनका कोई नया ढङ्ग निकला चाहता है। मुझे नवाबकी मुसाहबीमें दाखिल करानेवाले मेरे मित्र सिवा हज्जामके बाकी सब अङ्गरेजोंमें श्रेष्ठ और नवाबके कृपा-पात्र समझे जाते थे। उनकी ओर मैंने निगाह की। वह मेरा क्रोधसे तमतमाया चेहरा देख मेरे मनका भाव समझ गये। एक क्षणतक वह स्थिर हो बैठे रहे, इसके बाद उन्होंने उठकर नवाबसे कहा,—"जहांपनाह! मुझे आज्ञा दीजिये, तो मैं आपके चाचाकी मूंछें खोल दूं; इससे बढ़कर तिरस्कार और क्या होगा।"

नवाब क्रोधसे लाल हो गये; अपना पैर जमीनपर पटक चीखकर बोले,—"आप यहांसे चले जायें। यह मेरा मकान है और मैं ही इसका मालिक हूं। अभी जाइये, और इन

लोगोंमें जो साहब मेरे और मेरे खानदानके बीच दखल देनेकी इच्छा करते हों, वह भी आपके साथ जायें।"

मैं भी उठ खड़ा हुआ और नवाबको सलामकर अपने मित्रके साथ चला। जोर-जबरदस्ती असम्भव थी, हम दोनो वहांसे चले आये। बादको हमें समाचार मिला; कि हमारे कोठरीसे निकलते ही इब्राम आतशबाजीकी छछूंदरें लाया, जो आसफको कुरसीतले छोड़ी जाने लगीं। आसफके पैर आदि जलते ही वह बौखलाकर उठ खड़ा हुआ; उसकी दोनों ओरकी मूंछोंके बहुतसे बाल किसी कदर चमड़े के साथ उखड़ गये। जखमसे खून बहने लगा; मारे पीड़ाके नशा भाग गया। उसने नवाबकी दावतकी तारीफ की और अपनी बुरी दशाकी वजह अपनेको ठहरनेमें अक्षम बता वहांसे चला गया। अपने मनकी धधकती आगकी झलक भी न दिखाई।

इसपर नवाब जोरसे हंसे, किन्तु उसके युरोपियन मित्र चुप रहे। सिर्फ इब्राम नवाबके साथ हंसा; पीछे वह भी परिणाम समझ चुप हो गया। इस घटनाके उपरान्त इस रात नवाबके जलसेमें उदासी रही। नवाब जल्द ही अन्दर तशरीफ ले गये।

नवाबकी इन ज्यादतियोंकी वजह उनके चाचाका परिवार उनका घोर शत्रु हो गया। नवाबके चाचाके नौकर और चचेरे भाई नवाब और उनके नौकरोंके घोर शत्रु बन गये। सारे लखनऊमें तहलका मच गया। नवाबकी फौज और उनके चाचाके सिपाहियोंके बीच युद्ध चल पड़ा। नवाबी फौज परास्त हुई, नवाबने रेजिडेण्टसे मदद मांगी। रेजिडेण्टने

साफ़ जवाब दिया, कि कम्पनीकी फौजको मैं इन झगड़ोंमें फंसा नहीं सकता, . हां आपलोग यदि आपसमें सन्धि करना चाहें, तो मैं मध्यस्थ होनेको तय्यार हूं। एक सप्ताहकी विषम अशान्तिके उपरान्त अन्तमें नवाब और उनके सम्बन्धियोंके बीच मेल हुआ; लखनऊमें एकबार फिर शान्ति स्थापित हुई; नवाबका दरबार एकबार फिर यथानियम बैठने लगा।

इस दुर्घटनाके कोई पन्द्रह दिन बाद हज्जाम किसी प्रयोजनीय कार्य्यसे कलकत्ते भेजा गया। आमोदकी कोई सामग्री खरीदने गया होगा। विलायतसे नवागत उसका भाई लखनऊमें था, किन्तु उसका वैसा प्रभाव नहीं था। हज्जामको निकालनेका यही एक सुअवसर था, अब न निकाला गया, तो कभी निकाला न जायेगा। मुझे दरबारतक पहुंचानेवाले मेरे मित्र नवाबका बड़े ही प्रतिष्ठा-भाजन मुसाहब थे, मेरे मित्रने नवाबको हज्जामके बिछाये जालसे निकाल नवाबको सुपथपर लानेकी पूर्ण चेष्टा की। कहा, कि हुजूर अपनी इस लगातारकी मदहोशीकी वजह अपने सुनाम और स्वास्थ्यको बड़ी ठेस पहुंचा रहे हैं। नवाब उनकी बातें और मलामतें चुपचाप सुनते थे। उनके चेहरेसे उनका आन्तरिक दुःख प्रकट होता था; कभी कभी उनकी नेत्रोंसे जल निकल पड़ता था। कभी कभी बड़े दुःखके साथ कहते थे,—"इसमें शक नहीं, कि मैं बदमस्त हूं; शराबी हूं, सभी मुझे जान गये हैं। किन्तु यह सब कांटे हज्जामके बोये हैं। वल्लाह! इस कम्बख्तने मुझपर कितना काबू पा लिया है।"

किसने ही भारकी ऐसी बातचीतके उपरान्त अन्तमें नवाबने

अपने मनको दृढ़ किया। उन्होंने स्थिर किया, कि अबसे इब्राम अपनी जगह रखा जायेगा; भोजनके समय हमलोगोंमें शरीक किया न जायेगा, मतलब यह, कि अबसे इब्राम नवाबका कृपा-भाजन न रहेगा। स्वयं नवाबने अपनी इस प्रतिज्ञाका हाल हमें सुनाया। अन्तमें कहा,—"साहबो! आप देखेंगे, कि इच्छा करनेपर मैं कहांतक दृढ़प्रतिज्ञ हो सकता हूं। मैं उस नामाकूलको तुमको दिखा दूंगा, कि मैं कहांतक होशियार हूं। खैर, इस वक्त एक एक जाम क्लारेट आये।"

इस प्रतिज्ञाके उपरान्त कोई एक सप्ताहतक हमारे भोजनादिमें शराबकी ज्यादती होने न पाई। दरबारने शान्त और प्रतिष्ठित रूप धारण किया। अन्तमें हमें एक दिन प्रातःकाल समाचार मिला, कि कल रात इब्राम लखनऊ आ गया। परिणाम जाननेके लिये हमारी उत्कण्ठा चरमको पहुंची। प्रातःकाल दरबारमें पहुंच हमने देखा, कि इब्राम होने आज सवेरे नवाबको बनाया-चुनाया है। उस समय भी इब्राम वहां मौजूद था, नवाबका शिर अपने हाथोंमें लिये जुलफें बना रहा था। उसके होंठोंपर विजयकी मुस्कुराहट थी। फिर भी, उसने हमें सलाम किया और हमने यथारीति उत्तर दिया। नवाबने उससे कलकत्तेकी बात, गवरनर-जनरलकी बात, बड़ा-लोकी बात,—कितनी ही बातें पूछीं और उसने हमेशाका जवाब दिया।

जब हम दरबारसे लौटे, तब मेरे मित्रने मुझसे कहा—"नवाब भी अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहते दिखाई नहीं देते।"

मैंने जवाब दिया,—"हुजूर रहने दिखाई नहीं देते, तो मैं भी यहां ठहरता दिखाई नहीं देता।"

मित्र। बेशक; यदि दरबारका यही दस्तूर रहा, तो यहां ठहरना ठीक नहीं। कोई भी भलाआदमी ऐसी जगह ठहर नहीं सकता।

अन्तमें हम दोनोंके बीच यह स्थिर हुआ, कि यदि आज भी भोजनके समय हज्जाम अपनी जगह बैठे, तो फलाफल देखनेके लिये सिर्फ मैं भोजनमें साथ दूं, मेरे मित्र जुदा रहें।

सन्ध्या होते होते हज्जाम अपना पूर्ण प्रभाव विस्तार कर चुका था। नवाब उसीके कन्धे पर शिर रख भोजनागारमें आये। मेरे मित्र हज्जामको देखते ही तुरन्त भोजनागारसे निकल गोमती पार अपने मकान लौट गये। कुछ देर बाद नवाबको उनकी सुध हुई। उन्होंने पूछा,—"हमारे मित्रवर कहां हैं?"

मैं। मकान लौट गये, जहांपनाह।

नवाब। चले गये,—वल्लाह! यह दुरुस्त नहीं; उन्हें बुलवा लो।

एक हरकारा बुलानेको भेजा गया। इधर भोजन आरम्भ हुआ; हज्जाम पूर्ववत् अपनी जगह था। हरकारा लौट आया।

नवाब। क्या खबर है?

हरकारा। साहबने जहांपनाहको सलाम कहा है और कहा है, कि वह मुआफ फरमाये जायें।

नवाब। लाहौल! यह मुमकिन नहीं; जल्द जा और उनसे कहा, कि उन्हें आना ही होगा।

हरकारा फर्शी सलाम बजा लाकर चला गया।

उत्तमोत्तम भोजनसे सजी थालियोंपर थालियाँ और रका-बियोंपर रकाबियाँ आने लगीं। भोजन अभी समाप्त हुआ नहीं था; ऐसे समय हरकारा फिर वापस आया।

हरकारेको सलामकर निस्तब्ध खड़ा देख नवाबने कड़ककर पूछा,—"क्या खबर लाया?"

हरकारा। साहबने कहा है, कि जहांपनाह गुलामको गैरहाजिरीका हाल जानते हैं।

नवाबने अपना छुरी-कांटा टेबुलपर पटक दिया। झल्लाने या हैरान होनेपर वह ऐसा ही किया करते थे। अन्तमें उन्होंने कहा,—"साहबसे कह, कि यदि वह न आयेंगे, तो मैं उनके पास आऊंगा, उन्हें अपने शाहसे ऐसा सुलूक करना न चाहिये।"

तीसरे बार हरकारा रवाना हुआ। इस बार वह खाली न लौटा, मेरे मित्रको अपने साथ लाया।

नवाब। आइये, तशरीफ रखिये। या हैदर! आपके बुला-नेमें कितने तरद्दुद करना पड़ते हैं। आइये, एक जाम कबूल कीजिये।

मित्र। जहांपनाह मुझे मुआफ फरमायें। मैं हुजूरसे कह चुका हूं, कि उस आदमीके साथ मैं भोजन कर नहीं सकता।

नवाब। आह! यह क्या बात है? बैठिये—तशरीफ रखिये; एक गिलास शाम्पेन ला ना।

किन्तु नवाबकी किसी चेष्टाका कोई फल नहीं हुआ। मित्र-

वर अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहे। उन्होंने नवाबको उनकी प्रतिज्ञा याद कराई।

नवाब 'अल्ला-अल्लाह' कह हज्जाम, कपतान और कुछ मित्र-वरको साथ ले बगलके एक कमरेमें चले गये। वहां बहुत देर-तक बातें हुईं।

हज्जामने नवाबकी शरण ली, मेरे मित्रने नवाबको प्रतिज्ञाको याद दिलाई, कपतान शान्ति स्थापन करनेकी चेष्टा करते थे। नवाब हैरान थे ; वह बहुत कम बोलते थे। अन्तमें उन्होंने कहा, कि अब आप सब साहब इस झगड़ेको किनारे रख प्रेमसे नके मजे लूटिये। मित्रवर इस प्रस्तावपर राजी न हुए और नवाब अपनी समझमें उन्हें मनानेकी कुल चेष्टायें समाप्तकर अन्तमें हज्जा-मके कन्धेपर सिर रख कोठरीसे चले गये। उधर मित्रवर भी कमरेसे निकल अपने मकान लौट गये।

नवाबने अपनी जगह बैठ और अपनी चारो ओर देख कहा,—"वह चले गये।"

हज्जाम। उनके जैसे कितने ही आ जायेंगे।

नवाब। उंह ; गये तो जाने दो, बलासे।

झगड़ा यहीं समाप्त हो जाता ; किन्तु अभी मैं बाकी था। नवाबकी निगाह घूम फिरकर मुझपर पड़ी। मैं भी उन्हीको देख रहा था। हमारी निगाहें मिलीं। उन्होंने तुरन्त अपनी निगाहें हटा बोतलपर जमाईं। निगाहें हट गईं, किन्तु उनका दिमाग मेरी ही ओर था। उनके चेहरेका वह मृदु भाव एकाएक दूर हुआ ; उनकी आंखें क्रोधसे चमक उठीं। मैंने गिलास उठाया ही था, कि नवाबने अपना गिलास टेबुलपर

पटक बड़े ही क्रोधसे कहा,—"क्यों साहब। आप तो उन्हींके दोस्त हैं न?"

मैं। हुजूर भी तो उन्हींके दोस्त थे।

नवाब। वल्लाह; निहायत बेअदबाना बातचीत है।

मैं। (उठकर) हुजूर। अङ्गरेजोंको चाहते हैं और सच बातें मुंहपर कहना पसन्द करते हैं। मैं देखता हूं, कि हुजूरको मेरी हाजिरीसे तकलीफ होती है; हुजूर मुझे रुखसत करें।

यह कह मैं कोठरीसे चला आया। द्वारपर पहुंच मैंने नवाबके छुरी-काँटेकी आवाज सुनी; उनकी धमकी भी सुनी।

उसी रात मेरे मित्रको शाही मकान खाली कर देनेकी आज्ञा मिली। आज्ञा लानेवाले सिपाहीने यह भी कहा, कि आप यदि जल्द खाली न करेंगे, तो आपका माल-असबाब फेंक दिया जायेगा। किन्तु नवाबकी यह आज्ञा कार्य्यमें परिणत न हुई; वह अङ्गरेजोंसे बहुत डरते थे। मेरे मित्रने सुविधानुसार मकान खाली कर दिया। मेरे छुटनेमें ज्यादा देर न लगी। मेरे मित्रकी तरह मेरे साथ मेरा परिवार नहीं था। हम दोनो रेसिडेन्सी पहुंचे। रेसिडण्टने सब हाल सुन नवाबको खबर दी, कि दोनो अङ्गरेजोंपर किसी तरहका भी अत्याचार होनेसे नवाब दोषी ठहराये जायेंगे।

कुछ दिनोंतक हम रेसिडेन्सीमें रहे। अन्तमें एक दिन नौकाकी राहसे गङ्गाद्वारा कलकत्ते की ओर चले।

इसतरह अवधके दरबारसे मेरा नाता टूटा, नवाब और

हुज्जामका परिणाम सुना अब मैं यह इतिहास समाप्त करना चाहता हूं।

मेरे लखनऊ त्याग करनेसे पहले हुज्जाम असलमें लखनऊका दरबार छोड़नेकी तय्यारियां करने कलकत्ते गया था। वह अपने पतनसे भीत रहता था और कलकत्ते जा अपनी बहुत बड़ी रकम जमा कर आया था। हमारे चले आनेपर दरबारकी दशा और भी खराब हुई। उन दिनोंके 'कलकत्ता रिविउ'ने लिखा था,—"कुल नियम और सभ्यतायें अवधके दरबारसे दूर हो गई हैं। नवाबकी चाल यहांतक बिगड़ गई है, कि लखनऊके रेसिडेण्ट करनल लोने दो बार नवाबकी भेंटसे इनकार कर दिया।"

किन्तु हमें हटाकर भी नवाब हमारे चले आनेसे दुःखित हुए। वह देख रहे थे, कि हुज्जाम दिन बदिन उनपर अपना अधिकार जमा रहा था। हमें अपना शुभचिन्तक बना हमारे चले जानेके सम्बन्धमें नवाबने हुज्जामकी मलामत की। हुज्जामको तूफान दिखाई देने लगा और वह उससे सामना करनेके लिये तय्यार हुआ। हमारे जानेके बाद एक अङ्गरेज खानसामां नवाबकी नौकरीमें दाखिल किया गया। यह हुज्जामका तरफदार था। हुज्जाम, उसका भाई और वह खानसामां तीनों नवाबके प्रिय-पात्र बने।

बात बढ़ी। दरबारका बढ़ता हुआ पतन देख रेसिडेण्टका आसन डोला। उन्होंने नवाबपर दबाव डालना आरम्भ किया। नवाब परेशान हुए। हरमसे भी हुज्जामके विरुद्ध शिकायतें होने लगीं। अन्तमें नवाबने एक दिन अत्यन्त क्रुद्ध हो हुज्जामसे

कहा—"तुमने मेरे दो सच्चे मित्रोंको यहाँसे भगा दिया और अब तुम मुझे मनमाना नाच नचाना चाहते हो। किन्तु याद रखना, कि तुम ऐसा कर न सकोगे। रेसिडेण्ट साहबने ठीक ही कहा है, कि अवधके दरबारको खराबीके मूल कारण तुम्हीं हो।"

हुस्साम डरा। एक रात लखनऊसे कानपुरकी ओर भागा और अवधसे निकल कम्पनीके राज्यमें पहुँच गया। उसके भागते ही नवाबने उसके पुत्र और उसके भाईको कैद करा उनकी कुल जायदाद जब्त करा ली। रेसिडेण्ट बीच बचाव न करते, तो हुस्सामके भाई और बेटेको फाँसी मिल जाती। दश दिनोंतक दोनो हवालातमें रहे, कोई डेढ़ लाख रुपयेकी हुस्सामकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई।

जैसे ही हुस्सामके सम्बन्धी हुस्सामके पास पहुँचे, वैसे ही वह कानपुरसे कलकत्ते और वहाँसे इङ्गलण्ड पहुँचा। जो सम्पत्ति वह अपने साथ ले गया, उसका ठीक हिसाब बताना कठिन है, फिर भी, कितने ही लोगोंका विश्वास है, कि [illegible] कोई चालीस लाख रुपये वह मार ले गया। इस धनसे वह मालदार बना, इज्जतदार बना, बहुत कुछ बना। रेलके [illegible] उसे [illegible] दिया। धीरे धीरे धन खिसका। सन् १८४३ ई० में उसे दिवालिया अदालतकी शरण लेना पड़ी। उसका [illegible] मौजूद है।

इस समय बादशाह नसीरुद्दीन हैदर। आपके लिये [illegible] और [illegible] गये।
[illegible]

किये और इब्राहीमके भागनेके चार मास बाद सन् १८३७ ई० नवाबको विष दिया गया। जिन चाचाओंको नवाबने बारंब तिरस्कृत किया था, उन्हींमें एक सिंहासनपर बैठे और उन पुत्र आजकल अवधका शासन-दण्ड परिचालन करते हैं।

इति।